ব্রাহ্মধর্ম প্রতিপাদক শ্লোকসং গ্রহ।



COMPILATION

OI

THEISTIC TEXTS

FROM THE

Hindu, Jewish, Christian, Mahomedan and Parsce Scriptures.

ভার এবধীয় ব্রাহ্মনমাজের আনেশান্ত্সারে অনুবাদ নতি

প্ৰকাশিত হইল।

স্থবিশালমিদং বিধং পবিত্রং ব্রহ্মমন্দিরং।
চেতঃ স্থনির্দ্মলার্ভীর্থং সত্যং শান্তমনম্বরং॥
বিধাসো ধর্মমূলংহি প্রীতিঃ পরমসাধনং।
স্বার্থনাশস্ত বৈরাগ্যং ব্রাক্ষৈরেবং প্রকীর্তাতে॥



নং ১৭, ভবানীচরণ দত্তের লেন, রার যন্ত্রে; শ্রীবাব্রাম সরকার দারা মুদ্তিত। শকাবা ১৭৯৭।



ब्राह्मधस्म-

प्रतिपादक-

भारत को यताह्मसमाजानु ज्ञया सानुवादं प्रकाशितः।

यनभाय महद्भाय शास्त्रभाः कुश्लो नरः।
मन्द्रीतः सार्माद्यात् पृष्मेशः इत पट्पदः।
(hase:1145) भागवतम् । ১১ | ৮ | ১০ मुविशालिस दं विश्वं पश्चित ब्रह्मसन्दिरम्।

चतः सुनिर्मालन्तीर्थं सत्यं शास्त्रमनश्वरम्॥ विश्वामी धर्ममूलं हुपीति परममाधनमः। क्वार्थनाशस्तु वैराग्ये नाह्यं रेवं प्रकार्त्त ॥

राय यत्वी मुद्रितः।

शकाव्दा १७८७।



त्रीणि पद्मा विचक्रमे विष्णुर्गाप्ता। 👯 अदाभ्यः अतो धर्माणि धारयन्॥१॥ 🧸 ऋमेदामंश्चां ५ सूं २२।१८ सीध

্সই দর্কব্যাপী পরমেশ্বর ত্রিভুবনে ব্যাপ্ত হইয়া রহিয়াছেন।
তিনিই সমূদায় জগতেব রক্ষাকর্তা; তিনিই ধর্মকে রক্ষা

तिविशो: परमं पदं सदा पश्यन्ति स्रय: दिवीव चचुराततम्॥२॥ चक्षानं रेचं ५ मूं २२ । २० जी।

তাহার সর্কারশী চকু বেরূপ নিয়ত আকাশস্থ সমুদায় াবৰ দশন কৰে, ভজ্জপ সাধুগণ সেই সর্কাব্যাপী প্রমেশ্বরের প্রমাপদ সর্কাদা দশন করেন।

ति दिपासी विपासवी जागृवांस:।

सिमस्ते विश्णोयत्परमं पदम्॥३॥

ऋक्। मं १ अं ५ सूं २३। २१ क्षी ।

জ্ঞানী, স্কৃতিবাদুক ও জাগ্রৎ ব্যক্তিরা ঠ্ছই মুর্ব্ব্রাপী পর-মেশ্বের প্রমূপদ শ্রকাশিত করৈন।

> विश्णोर्णं कं वीर्थाणि प्रवीरं यः पार्थिवानि विममे रजांसि । यो त्रस्क भावदुत्तरं सधस्यं विचक्रमाण स्त्रेधोरुगायः ॥ ४ ॥

> > ऋक्। सं १ अर् २१ सूं १५४। १ झी।

হে মানবগণ! তোমরা শীজ সেই সর্বব্যাপী প্রমেশ্বরের
নহীয়সী শক্তি কীর্ত্তন কর, যিনি এই সমুদায় জড় পদার্থ
এবং উপাসকদিগের বাসযোগ্য সত্য লোক স্থজন করিয়াছেন।
সমুদায় পরাক্রম তাঁহারই; মহায়ারা তাঁহাবই প্রশংসা করিয়া
থাকেন।

यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्य-चीयमाणा स्वधया मदन्ति। य उ त्रिधातु पृथिवीमृतदा-मेकोदाधार भुवनानि विख्वा ॥ ५ ॥

चटक्। सं १ ऋं २१ सूं १५ ८। ८ छी।

যে সর্ববাপী পরমেশ্বর একা এই ভূলোক তালোক ও ্ন্নায় জীব জন্তুকে ধারণ করিয়া রহিয়াছেন, ত্রাব অমৃত্যয় শক্ষয় পদ জাত্রিত জীবদিগকে আহ্লাদিত করিতেছে।

> तदस्य प्रियमभिपायो अध्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति।

उत्क्रमस्य सहि वन्धुरिध्या विग्णीः पदे परमे मध्य उत्सः॥ ६॥

चटक्। मं१ घं २१ सूं १५४। ५ की।

ং শেখানে মন্থ্য সেই স্থাকাশ প্রমেশ্বকে পাইতে ইচ্ছা করিয়া তৃপ্তি অন্তব করেন সেই মহান্ প্রমেশ্বের এই অবিনশ্ব ব্রহ্মলোক। সেই জগৎব্যাপী প্রমেশ্বের মন্দলমন্ প্রম পদ অমৃতপূর্ণ।

> हा सुपर्णो सयुजा सखाया । 13 ड्रो-वे समानं हचं परिषस्त्रजाते। तयोर प्र्यः पिप्पलं स्वाहत्य नम्रजन्योऽभि चा कशीति॥ ७॥

> > च्टक्। सं रुषा २२ सूं १६४। २० सी।

তুই স্থানর পক্ষী প্রাণয় যোগে সথ্যভাবে এক রুক্ষ আশ্র করিয়া রহিয়াছে। তন্মধ্যে একজন স্থাস্থাত্ ফল ভক্ষণ করিতে-ছেন, আর একজন অনশন থাকিয়া তাহা দর্শন করিতেছেন।

> यत्रा सुपर्णा श्रम्धतस्य भाग मनिमेषं विद्या भिस्तरन्ति । इनो विष्वस्य भुवनस्य गोपाः समा धीरः पाक्मतां विवेश ॥ ८ ॥

ऋक्। मंश ऋं २२ सूं १६४। २१ शी। চৈতনোর ভজনীয় যে পরমাঝা জীবাঝার বৃত্তিনকল

জ্ঞান সহকারে লাভ করে, সেই পরমাত্মাই বিশ্বের স্বামী

ও সমূদায় প্রাণীগণের রক্ষাকর্তা। তিনিই পবিত্রভাবে আমার বিশুদ্ধ সন্তরে আবিভূতি হইয়াছেন।

> स प्राचीनान् पर्व्यतान् दं हृदी-जसा धराचीन मक्षणीदपामपः। अधारयत् पृथिवीं विर्वेधाय सस्तन्नान्नाययाद्यामवस्त्रसः॥ ८॥

ऋक्। मं २ चं २ सूं १०।५ सी।

তিনি স্বীয়বলে পর্বত সকল স্থাপন করিয়াছেন; তিনি জলরাশিকে নিমুগামী করিয়াছেন; তিনি বিশ্বধাত্তী পৃথিবীকে ধাবে করিয়া রহিয়াছেন; তিনি স্বীয় কৌশলে সৌরজগৎকে পতন হইতে রক্ষা করিতেছেন।

न तमं हो न दुरितं क्षतसन नारातयस्तिति कर्णुद्वयाविनः । विश्वा द्रदस्नादरसी विवाधसे यं सुगीपा रचसि ब्रह्मण्स्यते ॥ १० ॥ स्क्। मं र चं र सूं २२।५ जी।

হে তত্বজ্ঞদিগের অধিপতি পরমেশ ! তুমিই সকলের পালরিতা ; তুমি যাহাকে রক্ষা কর, তাহাকে হৃঃথ ও পাপ বাধা দেয় না। শক্রগণই বা তাহার কিরপে বিপক্ষতাচরণ করিবে ? হিংস্র কর্ম্ম সকল তাহার হিংসা করে না এবং বঞ্চ-কেরাও তাহাকে বঞ্চিত করিতে সমর্থ হয় না, বিশ্বস্থিত এই সমূদায় হিংস্রক মন্ত্য্যগণ ভাহার কোন বিদ্ন জকাইতে পারে না।

यो विख्वाभि विपश्वति भुवना ।

. / ा. संच पश्यति सृतः पुषाविता भुवृत् ॥११॥ ऋक्। मं ३ चं ५ मूं ६०१८ की।

যে প্রতিপালক পরমেশ্বর সকল লোক ও সমুদার জগৎ বিশেষকপে দেখিতেছেন, তিনি আমাদিগকে রক্ষা করুন।

यो जागारतसृचः कामयन्ते
यो जागार तसुमामानि यन्ति।
यो जागार तमयं सीम श्राह
तवाहमस्मि सख्ये खोकाः॥ १२॥

चटक्। संभूषं ४ सं ४५ (१४ मी।

गर्भे मातुःपितुष्यितां विदियुतानी । अचरे सीदन्स्तस्य योनिमा ॥ १३॥

ऋक्। संह अयं २ सूं १६ ३५ औं।

তিনি মাতা পিতার পিতা ও দীপ্যমান; তিনি অবিনশ্ব সভজগতে নিয়ত প্রবিষ্ট হইয়া রহিরাছেন; তিনিই সত্যের এক মাত্র প্রস্তবন।

त्रसच सच परमे व्योमन् ॥ १४ ॥ /4 22- चन्। मं१० त्रं १ मूं ४।० श्री

প্রথমে এই জগৎ কিছুই ছিল না, পরে সেই পরমায়া হইতে সমুৎপর হইল।

को अस्य वेद प्रथमस्याहः क ददर्भक इह प्रवीचत् ॥ १५ ॥

चक्। सं १० घं १ सूं १०। ६ श्री । কে আদি পুরুষকে জানে ৪ কে বা তাঁহাকে দেখিয়াছে.

কেই বা ভাঁহাকে প্ৰকাশ কৰিয়াছে ?

उग्रन्तस्वानि धीमह्युग्रन्तः समिधीमहि॥१६॥ चक्ष्मामं १० चं १ मुं १६।१२ ह्या ।

প্রতিথি তোমাকে ব্যান করি, সেবার্থে তোমাকে চিতু। করি।

प्राणस्य प्राण उत चत्तुषयत्तु रूत श्रोतस्य श्रोतमनस्थान्यं मनसी ये मनो विदुः

ते निचिक्यु ब्रह्म पुराण्मग्यं मनसैवाप्तव्यम्॥१०॥ यज्ञवंद । प्रपार्थ अध्याय ७ पारा २१ ज्ञा

বাঁহারা তাঁহাকে প্রাণের প্রাণ, চফুর চফু, শ্রোনের শ্রোত্র, অন্নের অন্ন, ও মনের মন বলিয়া জানেন; তাঁহারাই সেই পুরাতন সর্বশ্রেষ্ঠ ব্রহ্মকে লাভ করেন। কেবল মনের দ্বারাই তিনি প্রাহ্য হয়েন। सवा श्रयमात्मा, सर्व्य वशी सर्व्य नियानः सर्व्य स्थाधिपतिः सर्व्य मिदं प्रशास्ति । यदिदं किंच सन
' साधुना कर्मणा भूयान्यो ॥
एवा साधुना कनीयानेष
भूताधिपतिरेष लोकेखर एष
लोकपानः स सेतुर्विधरण
एषां लोकानामसभो टाय ॥ १८ ॥

যল। দ্বাং ধ স্বায় ও দাং। ২৪ শ্রী।
সেই প্রমায়া সকল হইতে স্বতম্ব, সকলের নিয়ন্তসকলের অধিপতি, এই সমুদায় তিনিই শাসন করিতেছেন।
এই যাহা কিছু তাহা তিনি নহেন, তিনি সাধু কর্মা দাবা
আনাদিগেব নিকটস্থ হয়েন এবং অসাধু কার্য্য দ্বার্থ
হয়েন; ইনি প্রাণিগণের অধিপতি, ইনিই সমুদ্র লোকের
অধীশ্বর, ইনিই সকলের প্রতিপালক। তিনি লোকভঙ্গ নিবানাংর্থে সেতুস্কর্মপ হইয়া এই সমুদায় ধারণ করিয়া রহিয়াছেন।

तत्सवितुर्वरेखं भगी देवस्य 139

খীন हि धियो योन: प्रचोदयात ।। १८ ।।

১৯ বি ১৯

श्रपराऋग्वे दोयज्ञवेदः सामवेदोऽयवेवेदः शिचा कल्पोव्याकरणम् ।
निरुक्तं छन्दोज्योतिषमिति
श्रय परा यया तदचरमधिगस्यते॥ २०॥
स्ख्कीपनिषत्। १ ॥ ४०

ঋথেদ, যজুর্কেদ, নামবেদ, অথব্ববেদ, শিক্ষা, কল্প, বাকেরণ, নিক্কক, ছন্দ, জ্যোতিষ, এ সন্দ্র আশ্রেষ্ঠ বিদা। বাহা বারা দেই অবিনাশী পুক্ষকে জানা যায তাহাই শ্রেষ্ঠ বিদ্যা।

यत्तंदद्रेश्यमयाद्यमगीतमवण्मचत्तुःश्रोत्रं तद्पाणिपादम् ।
नित्यं विभुं सर्वगतं सुमृद्यं
तद्व्ययं यहूत्योनिं परिपश्यन्ति धीराः ॥२१॥
स्वर्णास्य

বিনি জ্ঞানেক্রিরের অবিবয়, কর্মেক্রিয়ের অতীত, জন্ম-বিহিত, রূপরহিত, চক্ষ্মোত্রবিধীন; সেই হস্তপদশ্না, জন্ম-মৃত্যুবিবিজ্জিত, সর্কব্যাপী, সর্কগত, অতি হক্ষস্থভাব, ফ্রাস-রহিত, সর্কভূতের কারণ, পরব্রহ্মকে ধীরেরা সর্কতোভাবে দৃষ্টি করেন।

एतस्माज्जायते प्राणीमनः सर्वे न्द्रियाणि च। खं वायुच्योतिरापः प्रश्रिवी विष्यस्य धारिणी॥२२॥ सः। २, २१ ইহাঁ হইতে প্রাণ, মন ও সমুদার ইন্দ্রির, এবং আকাশ, বায়ু, জ্যোতিঃ, জল, ও সকলের আধার এই পৃথিনী উৎপন্ন হয়।

> प्राणोच्चेष यः सर्वभूतैर्विभाति विजानन् विद्वान् भवते नातिवादौ। श्राक्षके इ श्राक्षरतिः क्रियावा नेष बुद्धाविदां वरिष्ठः॥ २३॥

> > म। १।१।%। ७1>19

ইনি সকলের প্রাণস্বরূপ, যিনি সর্বভূতে প্রকাশ পাই-তেছেন; জ্ঞানী ব্যক্তি ইহাঁকে অতিক্রম করিয়া কোন কথা কহেন না; ইনি প্রমান্থাতে ক্রীড়া করেন, ইনি প্রমান্থাতে রমণ করেন এবং সংকর্মশীল হয়েন; ইনি ব্রক্ষোপাসক-দিগের মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ।

भिद्यते हृदयग्रस्य श्किदान्ते सर्ज्य संग्रयाः चौयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥२४॥ स्वाराहरू

সেই পরাৎপর পরমেশ্বরকে দর্শন করিলে সাধকের হৃদয়-গ্রন্থি ছিন্ন হইয়া যায়, সকল সংশয় বিদ্রিত হয়, এবং সম্দায় বিষয় কর্ম কয় হয়।

> सत्ये न सभस्तपसा द्वीष त्रात्मा सम्यग् ज्ञानेन ब्रह्मचर्येष नित्यं

म्रतः ! हिंहि ज्यातिसीयो हि शुभ्न यं पश्चन्ति यतयः चीणदोषाः ॥ २५ ॥ साराराध

এই পরমাত্মাকে নিয়ত সত্যা, তপস্যা, সম্যক্ জ্ঞান ও বৈবাগা দারা লাভ করা যায়। সেই জ্যোতির্দ্ময় নিদ্ধলক্ষ প্রমেশ্বর শরীরের অভ্যন্তরে মনোমধ্যে বিবাজ করেন। যোগিগ্য নিম্পাপ হইয়া তাঁহাকেই দুর্শন করেন।

सत्यमेव जयते नानृतम्॥ २६॥ -

সত্যেরই জয় হয়, মিথ্যার জয় হয় না।

न चच्चषा ग्रह्मते नापि वाचा
ं नान्येटे वैस्तपसा कर्मणी वा ।
चानप्रसादेन विश्वडमस्तस्ततम्तु तं पश्चते निष्कतं ध्यायमानः। २०॥
सुन्हाराहा

তিনি চকুর গ্রাহ্য নহেন, বাকোর গাহ্য নহেন, এবং অপবাপর ইক্রিযেরও গ্রাহ্য নহেন, তপসাা বা যজ্ঞাদি কর্ম দ্বাশা তাঁহাকে প্রাপ্ত হওয়া যায় না। জ্ঞান প্রসাদে শুদ্ধ-চিত্ত বাক্তি ধ্যান্যুক্ত হইয়া নিরব্যব ব্দ্ধকে উপলব্ধি করেন।

र्र्शावास्त्रमिदं मर्वे यत्किञ्च जगत्। तेन त्वक्तेन भुञ्जीयामाग्रधः कस्यस्तित् धनम् ॥१८॥ रेशोपनिषत्। १। এই ব্রহ্মাণ্ডের অন্তর্গত যে কিছু পদার্থ তৎসমুদয়ই পরমে-শ্বর দারা ব্যাপ্য রহিরাছে। বিষয়লালসা পরিত্যাগ করিয়া ব্রহ্মানন্দ উপভোগ কর; কাহারও ধনে লোভ করিও না।

तदेजित तम्नैजिति तह्र्रे तहिन्ति । तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य वाह्यतः ॥ २८ ॥

তিনি চলেন, তিনি চলেন না; তিনি দূরে আছেন, তিনি নিকটেও আছেন; তিনি এই সকলের অন্তরে আছেন. তিনি এই সকলের বাহিরেও আছেন।

> सपर्थं गाच्छ क्रमकायमब्रण-मन्त्राविरं ग्रडमपापविडम् । कविर्मणोषी प्ररिभृः खयभू श्रीयातव्यती-र्थान् व्यद्धाच्छाखतीभ्यः समाभ्यः ॥३०॥

তিনি সর্বব্যাপা, নির্মাল, নিরবয়ব, শিরা ও এণরহিত, শুদ্ধ, অপাপবিদ্ধ; তিনি সর্বাদশী, মনের নিয়ন্তা, তিনি সক-লের শ্রেষ্ঠ ও স্বপ্রকাশ; তিনি সর্বাকালে প্রজ্ঞাদিগকে যথো-পযুক্ত অর্থ সকল বিধান করিতেছেন।

यदाचानभ्युदितं येन वागभ्युद्यते । तदेव ब्रह्मा त्वं विदि नेदं यदिर्मुपासते ॥ ३९॥ तत्ववकारीपनिषत् । ४।

বিনি বাক্যের বচনীয় নহেন, বাক্য যাঁহার দারা প্রেরিভ

হয়, তাঁহাকেই তুমি ব্রহ্ম বলিয়া জান; লোকে যে কিছু পরিনিত পদার্থের উপাসনা করে, তাহা কথন ব্রহ্ম নহে।

यन्त्रनसा न मनुते येनासुभैनोमतम् । तदेव ब्रह्म त्वं विद्वि नेदं यदिदमुपासते ॥ ३२'॥

মনের দারা যাঁহাকে মনন করা যায় না, যিনি মনের প্রত্যেক মননকে জানেন, তাঁহাকেই ব্রহ্ম বলিয়া জান; লোকে যে কিছু পরিমিত পদার্থের উপাসনা করে, তাহা কথন ব্রহ্ম নহে।

नाहं मन्येस्वेदेति नो न वेदेति वेद च। योनस्तद्देद तद्देद नो न वेदेति वेद च॥ ३३॥

সামি ব্রহ্মকে স্থানররপে জানিরাছি, এমন মনে করি
না। সামি ব্রহ্মকে যে না জানি এমনও নহে, জানি যে
এমনও নহে। "আমি ব্রহ্মকে যে না জানি এমনও নহে,
জানি যে এমনও নহে" এই বাক্যের মর্ম্ম যিনি আমাদিগের
মধ্যে জানেন, তিনিই তাঁহাকে জানেন।

मार्च ब्रह्म निराकुर्यों मा मा ब्रह्म निराकरोदनिराकरणमसु॥ ३४॥

तल-गान्ति।

ব্রহ্ম আমাকে পবিত্যাগ কবেন নাই, আমি থেন ভালকে পরিত্যাগ না কবি, তিনি আমাকর্ত্বক সর্বাদ্য অপরিত্যক্ত থাকুন। स्वगे लोके न भयिङ्गञ्चनास्ति न तत्र त्वं न जरया विभेति। उभे तीर्त्वाश्चनायापिपासे श्रीकातिगो मोदते स्वगेलोके ॥ ३५ ॥

স্বৰ্গ লোকে কোন ভয় নাই, হে মৃত্যু! তুমিও সেখানে নাই, জরাকেও কেহ ভয় করে না, ক্ষধা পিপাসা এ উভয়কই অতিক্রম করিয়া শোক হইতে মুক্ত বাক্তি স্বর্গ লোকে সংনদিত হন।

श्रेयस प्रेयस मनुष्यमेतस्ती
सम्परीत्य विविनित्त धीर:।
श्रेयोहि धीरोभिप्रेयसीवृणीते
प्रेयोमन्दोयोगचेमादृणीतं॥ २६॥

कठः (२ : २ :

শেষ ও প্রের মন্ত্রাকে প্রাপ্ত হয়, তিনি সন্তক্ বিবেচন কবিলা এই ছুইকে পুগক্ করেন। ইনার সংগ্রাধীর ব্যক্তি প্রাকে ত্যাগ করিলা শেষকে গ্রহণ করেন, আর মন্দ ব্যক্তি প্রীব বক্ষার্থ প্রেয়কে গ্রহণ করে।

न मेधयान बहुना खुतेन।
, यमेवैषव्युते तेन लभ्यस्तस्यैष आसा व्ययुते तनुं स्वाम्॥ ३०॥

कारः । २०३०

नायमाला प्रवचनेन लभ्यो-

অনেক উত্তম বচন দারা বা মেধা দারা অথবা বহু শ্রবণ দারা এই পরমাত্মাকে লাভ করা যায় না; যে সাধক তাঁহাকে প্রার্থনা করে, সেই তাঁহাকে লাভ করে। পরমাত্মা এরূপ সাধকের সন্নিধানে আত্মস্তরূপ প্রকাশ করেন।

> तन्दु देशें गूढ़ मनुप्रविष्टम् गुहाहितं गहुरेष्ठं पुराणम्। अध्याक्षयोगाधिगमेन देवम्

मता धीरो इषेशोकी जहाति ॥ ३८॥ कार १११।

তিনি ছজের, তিনি সমস্ত বস্ততে গৃঢ়রপে প্রবিষ্ট হইরা আছেন, তিনি আত্মাতে স্থিতি করেন ও অতি নিগৃঢ় স্থানেও বাস করেন, তিনি নিত্য; ধীর ব্যক্তি পরমাত্মার সহিত স্থীর আত্মার সংযোগ পূর্বক অধ্যাত্ম যোগে সেই প্রকাশবান্ পরমেশ্বরকে উপলব্ধি করিয়া হর্ব শোক হইতে বিমৃক্ত হরেন।

त्रणोरणीया कहतो महीयान् त्रात्मस्य जन्तोनिहितो गुहायां । तमक्रतुः पश्चिति वीतयोको धातुः प्रसादाकिहमानमात्मनः ॥ ३८॥

পরমান্ত্রা অতি কৃদ্ধ হইতেও কৃদ্ধ, এবং মহৎ হইতেও মহং। তিনি প্রাণিগণের হৃদয়ে বাস করেন। বিগতশোক বাক্তি সেই ইন্তিয়াতীত বিধাতা ও তাঁহার মহিমাকে তাঁহারই প্রসাদে দর্শন করেন।

नाविरतोदुसरितानायान्तोनासमाहितः। नायान्तमानसोवापि प्रज्ञानेनैनमाप्रुयात् ॥ ४०॥

্যে ব্যক্তি ছন্ধ হইতে বিরত হয় নাই, ইন্দ্রিয়চাঞ্চল্য হইতে শাপ্ত হয় নাই, যাহার চিত্ত সমাহিত হয় নাই, এবং কর্মফল কামনা প্রযুক্ত যাহার মন স্থির হয় নাই, সে ব্যক্তি কেবল জ্ঞান দারা পরমান্মাকে প্রাপ্ত হয় না।

एव सर्वेषु भूतेषु गूढ़ीका न प्रकायते।
दृष्यते त्वयया बुद्धा सूच्यदर्शिभः॥४१॥

এই চিৎস্বরূপ পরমাত্মা সমুদার প্রাণীর মধ্যে প্রচ্ছর রূপে স্থিতি করিতেছেন। অধ্যাত্মদর্শী সাধকগণ একাগ্র মনে তাঁহাকে দর্শন করেন।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वराविबोधत । चुरस्य धारा निधिता दुरत्यया । दुर्गम्मथस्तत् कवयोवदन्ति ॥ ४२ ॥

काठः। ३। १४।

হে জীব সকল! উত্থান কর, অজ্ঞাননিদ্রা হইতে জাগ্রৎ হও, এবং উৎকৃষ্ট আচার্য্যের নিকট যাইয়া জ্ঞান লাভ কর। পণ্ডিতেরা এই পথকে শাণিত ক্র্রধারের ন্যায় হুর্গম বলিয়াছেন।

> त्रग्रन्ससर्यमक्ष्यमञ्चयं तथा रसवित्यमगन्धवचयत्। 😘

त्रनाद्यनन्तमाहतः परं घ्रुवम् निचाय्य तन्मृत्युमुखात् प्रमुच्यते ॥ ४३ ॥ २२३ २ ४ ४ ८ ८० वटः । ३) १५।

যাঁহার শব্দ নাই, স্পর্শ নাই, রপ নাই, রস নাই, গন্ধ নাই, ক্ষয় নাই; যিনি অনাদি অনস্ত, যিনি মহৎ হইতে এ মহৎ, নিত্য ও নির্বিকার, জীব তাঁহাকে জানিয়া মৃত্যুমুঞ্ হইতে বিমুক্ত হয়।

पराचः कामाननुयन्ति बालास्ते

सत्योर्थन्ति विततस्य पाशम् ।

श्रथ धीराश्रस्तत्विम्विदित्वा

धुवमधुविष्विच न प्रार्थयन्ते ॥ ४४ ॥

काठ:।४।२०

মন্ত্রবৃদ্ধি লোক সকল বহির্বিষয়েতেই আসক্ত হটয়।
য়ব্যুর পাশে বদ্ধ হয়; ধীর ব্যক্তিরা ধ্রুব অমৃতকে ভানিয়।
য়ংসারের তাবং অনিতা পদার্থের মধ্যে কিছুই প্রার্থন।
করেন না।

य एव सप्तेषु जागर्ति कामङ्गामम्यु क्षोनिर्मिमाणः। तदेव शक्तं तद्ब्रद्धा तदेवासृतमुच्यते। तसिँक्षोकाः त्रिताः सव्वे तदु नात्येति कश्चन॥४५॥

काठ: (५) ५।

যথন তাবৎ প্রাণী নিদ্রাতে অভিভূত থাকে, তখন যে পূর্ণ পুরুষ জাগ্রৎ থাকিয়া সকলের প্রয়োজনীয় নানা অর্থ নির্মাণ করেন, তিনিই শুদ্ধ, তিনিই ব্রহ্ম, তিনিই অমৃতরূপে উক্ত হয়েন, তাঁহাতে লোক সকল আশ্রিত হইয়া রহিয়াছে, কেহই তাঁহাকে অতিক্রম করিতে পারে না।

.) नित्योऽनित्यानाचितनचे तनानाम् एको बहूनां यो विद्धाति कामान्। तमात्मस्यं येऽनुपश्चित्ति धीरा स्तेषां यान्तिः याखती नेतरेषाम्॥ ४६॥

कढ:। ५ १३

যিনি তাবৎ অনিত্য বস্তুর মধ্যে একমাত্র নিত্য, গিনি সকল চেতনের একমাত্র চেতরিতা, একাকী যিনি প্রাণিপুঞ্জের সমুদার কাম্য বস্তু বিধান করিতেছেন; তাঁহাকে নে ধীক্ষেরা স্বীয় আত্মন্থ কবিয়া দর্শন করেন, তাঁহাদের নিত্য শাস্তি হয়, অপরের তাহা কদাপি হয় না।

न तत्र सूर्योभाति न चन्द्र तारकं नेमा विद्युती भान्ति कुतीऽयमन्निः। तमेव भान्तमनुभाति सर्वे तस्य भासा सर्वे मिदं विभाति ॥ ४७ ॥

সূর্য্য তাঁহাকে প্রকাশ করিতে পারে না, চন্দ্র তারকও ভাহাকে প্রকাশ করিতে পারে না; তবে এই অগ্নি তাঁহাকে কিরপ্নে প্রকাশ করিবে? সমুদায় জগৎ সেই দীপ্যমান পর-শ্বেষরেরই প্রকাশ হারা অনুপ্রকাশিত হইয়া দীপ্তি পাইতেছে; এই সম্দায় তাঁহারি প্রকাশে প্রকাশিত হইতেছে। यदिदं किञ्च जगत् सर्वे प्राण एजति नि:स्तम्। मञ्चद्रयं वज्मुद्यतं य एतिहदुरस्तास्ते भवन्ति॥४८॥

काउः। ६। २।

এই প্রাণস্বরূপ পরমেশবের অধিষ্ঠান প্রযুক্ত তাঁহা হইতে
নিঃস্ত এই সমস্ত ব্রহ্মাণ্ড যথানির্দিষ্ট নির্মে প্রবর্ত্তিত রহিরাছে। তিনি উদ্যত বজ্রের ন্যায় মহা ভরানক। যাঁহার।
ইহাঁকে জানেন তাঁহারা অমর হয়েন।

भयादस्थानिस्तपति भयात्तपति सूर्यः । भयादिन्द्रस वायुस सत्युधीवति पञ्चमः ॥४८॥

क्र ठः । १ । ३

ইহাঁর ভয়ে অগি প্রজ্জালিত হইতেছে, ইহাঁর ভয়ে স্থ্য উত্তাপ দিতেছে, ই হার ভয়ে মেঘ বারি বর্ষণ করিতেছে, বাষ্ স্ফালিত হইতেছে, এবং পঞ্চমতঃ মৃত্যু সঞ্চরণ করিতেছে।

> न सन्दृशे तिष्ठति रूपमस्य न चच्चषा पश्चिति कसनैनं। इदा मनीषा मनसाभि क्रप्तो य एति दुरस्तास्ते भवन्ति॥ ५०॥

> > कंठ: | ६। २।

ইহার স্বরূপ চকুর গোচর নহে, স্কুতরাং ইহাঁকে কেছ চকু: ছারা দেখিতে পায় না। ইনি হালাত সংশয় রহিত জ্ঞান ছারা দৃষ্ট হইলে প্রকাশিত হয়েন। এইরূপে যাঁহারা ইহাঁকে ছানেন তাঁহারা অমর হয়েন। नैव वाचा न मनसा प्राप्तुं यक्योन चत्तुषा। यस्तीति बुवतोऽन्यत कथन्तदुपलभ्यते॥ ५१॥

क्दः। ६ | १२ |

• তিনি বাক্য দারা, কি মনের দারা, কি চক্ষু: দারা কাছা-রও কর্ত্বক প্রাপ্ত হয়েন না। যে ব্যক্তি বলে যে তিনি আছেন, তম্ভিন্ন তিনি অন্য ব্যক্তি দারা কি প্রকারে উপ-লম্ম ইইবেন ?

> एषो चिद्रष्टास्पृष्टात्रीता घुाता रसयिता मन्ताबोद्गा। कर्त्ती विज्ञानाया पुरुषः

स परेऽचरे श्रासनि सम्पृतिष्ठते ॥ ५२ ॥

प्रजीपनिषत्। ४। ८।

এই জীবাস্থাই দর্শন করে, ম্পর্শ করে, শ্রবণ করে, আদ্রাণ কবে, রসাস্থাদন করে, চিস্তা করে, উপলব্ধি করে, এবং কর্ম্মপাধন করে; ইহাকেই পুরুষ বলা যার। এই আফ্রাই সেই অবিনশ্বর প্রমাত্মাতে প্রতিষ্ঠিত রহিয়াছে।

ब्रह्मोडुपेन प्रतरेत विदान्। स्त्रीतांसि सर्बाणि भयावहानि ॥ ५३॥

व तावतरीपनिषत्। २ । ६ ।

জ্ঞানী ব্যক্তি ব্রহ্মরূপ ভেলা দারা ভবসাগরের ভ্রাবহ শ্রোভ হইতে উত্তীর্ণ হয়েন।

महान् प्रभुवै: पुरुष: सत्त्वस्यैष प्रवत्तं तः।

सुनिक्यलामिमां शान्ति इंशानी च्योतिरव्ययः॥ ५

এই মহান্পুরুষ সকলের প্রভূ। এই জ্ঞানজ্যোতিঃ স্বরূপ সনত ঈশ্ব স্থনির্মলা শাস্তির উদ্দেশে ধর্মের প্রবৃত্তিক হযেন।

सर्वे न्द्रियगुणाभाषं सर्वे न्द्रिय विवर्जितम्। सर्वे स्य प्रभुमीयानं सर्वे स्य यरणं सृहत्॥५५॥

তাঁহার দারা সকল ইন্দ্রিয়ের গুণ প্রকাশ পায়, কিন্তু তিনি স্বরং সকল ইন্দ্রিয় বিবর্জিত। তিনি সকলের প্রভু, সকলের স্বাশ্রয এবং সকলের স্কুল্।

श्रेपाणिपादी यवनी ग्रहीता
पश्चत्यवद्यः सन्यणीत्यवणः ।
सर्वित्त देशं न च तस्यास्तिवेत्ता
तमाहुरग्रं पुरुषं महान्तम् ॥ ५६॥
श्रेता ३। १८।

ভাষার হস্ত নাই, তথাপি তিনি প্রাহণ করেন; তাঁহার চক্ষ্ নাই, তথাপি তিনি দর্শন করেন; এবং তাঁহার কণ নাই, ভথাপি তিনি শ্রবণ করেন। তিনি যাবৎ বেদ্য বস্তু তংসমৃদার জানেন, কিন্তু তাঁহার কেহ জ্ঞাতা নাই; ধীরের। তাঁহাকে সকলের আদি, পূর্ণ ও মহান্ বলিয়াছেন।

यएकोऽवणी बहुधा यक्तियोगा दर्णाननेकाविहितायी दधाति।

विचेति चान्ते विश्वमादी सदैवः सनो ब्ह्या ग्रुभ्या संयुनत्तु ॥ ५७॥

श्रीता ४। १।

'যিনি এক এবং বর্ণ হীন, এবং যিনি প্রজাদিগের প্রয়ো-জন জানিয়া বহু প্রকার শক্তিযোগে বিবিধ কাম্য বস্তু বিধান করিতেছেন, সমৃদ্য় ব্রহ্মাণ্ড আদ্যন্ত মধ্যে যাঁহাতে ব্যাপ্ত হইয়া বহিয়াছে, তিনি দীপামান্ প্রমেশ্বর; তিনি আমাদিগকে শুভ বৃদ্ধি প্রদান করুন।

> तमीखराणां परमं महेक्दरं तन्देवतानां परमञ्ज दैवतं। पतिं पतीनां परमं परस्तात् विदाम देवं भुवनेश्यमीद्यां॥ ५८॥

> > श्वेत। ६। ७।।

সকল ঈশ্বের যিনি প্রম মহেশ্বর, সকল দেবতার যিনি প্রম দেবতা, সকল পতির যিনি পতি, সেই প্রাৎপর প্রকাশ-বান্ও স্তবনীয় ভূবনেশ্বরকে আম্রা জ্ঞাত হই।

तदेतत् प्रेयः पुत्रात् प्रेयोवित्तात्
प्रेयोऽन्यसात् सर्व्य सादन्तरतरं यद्भ्यमात्मा ॥५८॥
) व्यः व्यवस्थात् सर्वे सादन्तरतरं यद्भ्यमात्मा ॥५८॥

সর্কাপেক্ষা অন্তরতম যে এই পরমাত্মা ইনি পুত্র হইতে প্রিয়, বিত্ত হইতে প্রিয় ও আর আর সকল হইতে প্রিয়।

भंसतीमा सहसय तमसीमा ज्यातिगमय सत्योमीसतं गमय ॥ ६०॥

वह । ३ । ३ । ३ ह

অসত্য হইতে আমাকে সত্যেতে লইয়া যাও, অন্ধকার ভইতে আমাকে জ্যোতিতে লইয়া যাও, মৃত্যু হইতে আমাকে অম্তেতে লইয়া যাও।

> स योऽन्यमात्मानः प्रियं ब्रुवाणं ब्रुयात् प्रियं रोत्स्यतीतीखरोह तथैव स्थादात्मानमेव प्रियमुपासीत स त्रात्मानमेव प्रियमुपास्ते न हास्य वियं प्रमायुकं भवति ॥ ६१ ॥

নে ৰ্যক্তি প্রমুদ্ধ তির অন্য কোন বস্তুকে প্রিয় বলে তাহার সে প্রিয় নিশ্চয়ই বিনষ্ট হয়। ঈশ্বরই একমাত্র নিত্য প্রিয় । সেই প্রমাত্মাকেই প্রিয় কপে উপাসনা করিবে। বিনি তাঁহাকে প্রিয় বলিয়া উপাসনা করেন তাঁহার প্রিয় কদাপি বিনষ্ট হয় না।

ब्रह्म वा इट्मय श्रासीटेकमेव तदेकं सद्ध्य व्यभवत्॥ ६२॥ 🗡

इस । ३ (४।११।

প্রথমে সেই একমাত্র পরব্রহ্ম ছিলেন, তিনিই একাকী এই সমুদায় স্ক্রন করিলেন। इदं सत्यं सन्वेषां भूतानां मध्यस्य सत्यस्य सन्वीणि भूतानि मधु यसायमिसान् सत्ये तेजी मयीऽस्तमयः पुरुषी यसायमाध्यात्मं सत्ये तेजी-मंयीऽस्तमयः पुरुषीऽयमेव सयीऽयमात्मे दमस्तमिदं ब्रह्मो दं।

वह । ४। ४। १२।

তিই সত্যস্বরূপ পরমেশ্বর সমুদর প্রাণীর মধু স্বরূপ, সমৃদর প্রাণীও এই সতের নিকট মধু রূপে প্রকাশবান্। বে
অমৃত্মর জ্যোতির্ময় পুরুষ সত্যেতে বিদ্যমান এবং যিনি
শুদ্ধ চৈত্ন্য, সেই জ্যোতির্ময় সত্যস্বরূপ পরমেশ্বরই এই
পরমাঝা, তিনিই অমৃত, তিনিই ব্রন্ধ।

स वा अयमासा सब्वेषां मृतानामधिपतिः सब्वेषा भूतानां राजा तद्यथा रथनाभी च नेमी चाराः सर्वे समर्पिता एवमेवास्मिनासनि सर्वोषि भूतानि सर्वे एत आसानः समर्पिताः।

बहा हा भा १ भा

সেই এই পরমাত্মা দকলের অধিপতি ও দকলের রাজা।
বেমন রথচক্রের নেমিদেশে অর দকল সংযুক্ত থাকে তদ্ধপ
এই পরমাত্মাতে দম্দায় প্রাণী ও দকল আ্বা দমর্পিত রহি
যাছে।

सिंबित एकी द्रष्टा है ती भवत्येष ब्रह्मलीकः समृाङ्ति हैनमनुयशास याज्ञवल्काः। एषास्य पर- मागितरेषास्य परमा सम्पदेषोऽस्य परमो लोक एषोस्य परम त्रानन्दः। एतसा वानन्दस्यान्यानि भूतानि मात्रामुपजीवन्ति।

ब्रहा ६ | ३ । ५२ ।

মহর্ষি যাজ্ঞবন্ধ্য রাজর্ষি জনককে এই উপদেশ দিলেন হে রাজন! সেই এক অদিতীয় সর্বাদশী পরমেশ্বর জলেতে ও বর্ত্তমান। ইনিই ইহার পরম গতি, ইনি ইহার পরম সম্পদ, ইনিই ইহার পরম লোক, ইনিই ইহার পরম আনন্দ। এই আনন্দস্বরূপ পরমেশ্বরের কণামাত্র আনন্দ অপরাপর দম্দায় জীব উপভোগ করিতেছে।

इहैव सन्तोऽय विद्यस्तहयं

निचेद्वेदि महितौ विनष्टिः।

य एतिहदुर सतास्ते भवन्ताः

थेतरे दुःखमेवापियन्ति ।

ब्रहा€ | ४।१४।

ইহলোকেই আমরা তাঁহাকে অবগত হই, তাঁহাকে না জানিলে মহান্ অনর্থ উপস্থিত হয়; যাঁহারা তাঁহাকে জানেন 'হাঁহারা অমর হয়েন্ আর যাহারা তাঁহাকে অবগত নহে তাহারা কেবল হঃথ ভোগ করে।

यदैंत मनुपयात्यात्मानं देवमञ्चसा । इ. यानं भूत भव्यसा न ततो विजुगुण्सते हहा ६ । १ । १५। ধীর বাজি প্রকাশবান্ পরমাত্মাকে স্থলর রূপে দর্শন করেন। কেহই সেই কালত্রয়দর্শী পরমেশ্বর হইতে আপ-নাকে প্রচন্ধর রাখিতে পারে না।

ं सा होवाच मैति यी यनुम इयश्यगीः सर्वा पृथिवी वित्तेन पूणा स्थात् कथं तेनासृतास्था-मिति। नेति होवाच याज्ञवल्क्यो यथैवीपकरणवतां जीवितं तथैव ते जीवितं स्थादसृतलस्थतु ना यास्ति वित्तेनिति। सा होवाच मेत्रियी येनाइं नासृतास्थां किमहं तेन कुर्याम्। यदेव भगवान् वेद तदेव मे ब्रूहीति॥ ६८॥

<u>ae</u> 1818198

মৈত্রেমী বলিলেন "হে ভগবন্! যদি ধনেতে পরিপূর্ণ এই সমুদায় পৃথিবী আমার হয়, তবে তদ্ধারা কি আমি অমর হইতে পারি' ? যাজ্ঞবল্ধা উত্তর করিলেন "না, ভাগ্য-বান্ বাক্তিনিগের জীবন যেরূপ, তোমার জীবন সেইরূপ হইবেক। ধন দারা অমৃতত্ব লাভের আশা নাই"। মৈত্রেমী বলিলেন "যদ্ধারা আমি অমর হইতে না পারি, তাহা লইয়া আমি কি করিব'। এবিষয়ে আপনি যাহ। জানেন তাহাই আমাকে বলুন।

सं होवाचै तद्दै तद्वरं गागि ! ब्राह्मणा श्रीभवदन्तास्य लमनखद्भसमदीव मलोहित मस्र- हमच्छायमतमोऽवायं नाकाशमसङ्गमरसमगय-मचचुष्कमत्रोत्रमवागमनोऽतेजस्कमप्राणममुखममा-त्रम्॥ ६८॥

ब्रह्म । ४ । ८ । ७ ।

যাজ্ঞবক্য বলিলেন হে গার্গি ! ব্রাহ্মণেরা যাঁহাকে অভিবাদন করেন তিনি এই অবিনাশী ব্রহ্ম। তিনি স্থূল নহেন, অণু নহেন, ছস্ত্র নহেন, দীর্ঘ নহেন, তিনি লোহিত নহেন, সেহময় পদার্থও নহেন, ছায়া নহেন, অন্ধকারও নহেন, বায়ু নহেন, আকাশও নহেন, মায়া নহেন, কোন বসও নহেন, গদ্ধ নহেন, চকু নহেন, কর্ণ নহেন,বাক্য নহেন, মন নহেন, তেজঃ নহেন, শারীরিক প্রাণ্ড নহেন; তিনি মুণ বিহীন ও অনুপ্র।

एतस्य वा अचरस्य प्रशासने गार्गिः स्र्ये चन्द्रमसी विधृती तिष्ठतः॥ ७०॥

夏号181 エ 1 エ 3

হে গার্গি! এই অবিনাশী প্রমেশ্বরের শাসনে ত্র্যা চক্র বিবৃত হইলা স্থিতি করিতেছে।

एतस्य वा उप्तरस्य प्रशासने गागि ! द्यावा पृथिर्ची विधृते तिष्ठतः॥०१

হে গার্গি! এই অবিনাশী পুরুষের শাসনে হ্যলোকও ভূলোক বিধত হইয়া অবস্থিতি করিতেছে। , 1 -e ,

> एतस्य वा अन्तरस्य प्रशासने सुहूर्त्ता अही-रातास्त्रईमासा मासा ऋतवः संगत्सरा इति विधृता स्तिष्ठन्ते । तस्य वा अन्तरस्य प्रशासने गागि! प्रांचोन्या नद्यः स्वन्ते स्वेतेभ्यः पर्वेतेभ्यः प्रती-चोऽन्यायां याञ्च दिशमन्ते ति ॥ ७२ ॥

> > ब्रह्म १८ | १० |

হে গার্গি ! এই অবিনাশী ঈশ্বরের শাসনে নিমেষ মৃহূর্ত্ত অহোরাত্র পক্ষ মাস ঋতৃ সম্বংসর, বিধৃত হইয়া স্থিতি করিতেছে। হে গার্গি ! এই অবিনাশী পরম পুরুষের শাসনে অনেকানেক পূর্ব্ববিনী পশ্চিম বাহিনী নদী সকল খেত পর্বত হইতে নিঃস্ত হইতেছে ।

यो वा एत दचरं गार्ये विदिलाऽसिक्षों के जुनोति यजते तपस्तप्यते बन्नूनि वर्षेसहस्राख-न्तवदेशस्य तद्ववति ॥ ७३ ॥

ब्रह । ४। र । ११ |

হে গার্গি ! যে বাক্তি এই অবিনাশী পরমেশ্বরকে না জানিয়া যদিও ইহলোকে বহু সহস্র বৎসর হোন যাগ তপস্যা করে, তথাপি সে স্থায়ী ফল প্রাপ্ত হয় না।

यो वा एतद्चरं गार्ग्य विदित्वाऽस्माक्षीकात् प्रोति स क्षपणोऽय य एतद्चरं गार्गि विदित्वाऽ साक्षीकात् प्रैति स ब्राह्मणः ॥ ७४॥

हरू। १ । १ । इह

হে গার্গি! যে ব্যক্তি এই অবিনাশী পরমেশ্বকে না জানিয়া ইহলোক হইতে অবস্থত হয়, সে ক্লপাপাত্র অতি দীন। আর যিনি এই অবিনাশী পরমেশ্বকে জানিয়া ইহ-লোক হইতে অবস্থত হয়েন, তিনি ব্রাহ্মণ।

तद्वा एतद्वरं गार्यं दृष्टं दृष्ट्रयुतं त्रीत्रमतं मन्त्रविज्ञातं विज्ञादनान्यदतोऽस्तिमन्तृनान्यदतोऽ स्तिविज्ञाते तिस्रित्र खल्बचरे गार्योकायत्रोतस् प्रोतस्रोति॥ ७५॥

र हे श के 1 के ब

হে গার্গি! এই অবিনাশা পরমেশ্বরকে কেহ দর্শন করে
নাই, কিন্তু তিনি সকলই দর্শন করেন, কেহ তাঁহাকে শ্রুতি
গোচর করে নাই, কিন্তু তিনি সকলই শ্রুবণ করেন; কেহ
তাঁহাকে মনন করিতে সমর্থ হয় নাই, কিন্তু তিনি সকলকেই
মনন করেন; কেহ তাঁহাকে জ্ঞাত হয় নাই, কিন্তু তিনি
সকলই জানেন। হে গার্গি! আকাশ এই অবিনাশী পরমেশ্বেতে ওতপ্রোত ভাবে ব্যাপ্ত হইয়া রহিয়াছে।

दितीयीऽध्यायः।

ं इन्द्रियाणाम्प्रसङ्गेन दोषमृच्छत्यसंग्रयं। संनियस्यतु तान्येव ततः सिर्द्धिनियच्छति ॥७६॥ मतः।२।८३।

ইক্সির পরতন্ত্র হইলে নিশ্চয় দোষ উৎপন্ন হয়, কিন্তু তাহাদিগকে বশীভূত করিলে মৃক্তি লাভ হয়। ं न जातु कामः कामानामुपभीमेन शाम्यति । ' इविषा क्षण्वत्ते व भूय एवाभि वर्द्धते ॥ ७७ ॥

কাম্য রম্ভর উপভোগে কখন বাসনা নির্ভ হয় না বরং আরও বৃদ্ধি হয়, ঘৃত সহকারে অগি যেরপ আরও বৃদ্ধিত হইয়া থাকে।

इन्द्रियाणान्तु सर्व्वेषां यद्येकां चरतीन्द्रियम् । तेनास्य चरित प्रज्ञा हतेः पात्रादिवीदकाम् ॥ ७८॥ मनः । २ । ८८ ।

সকল ইন্দ্রিরের মধ্যে যদি এক ইন্দ্রিরেরও স্থালন হয়, ভবে তাহাতেই লোকের বৃদ্ধি ভংশ হয়; যেমন চর্ম্ময় পাত্রের এক মাত্র ছিদ্র দ্বারা সমুদ্র জল নিঃস্থত হইরা যায়।

वशे कलेन्द्रियग्रामं संयम्य च मनस्तथा । सर्व्वान् संसाधये दध्वानिचलन् योगतस्तनुम्॥७८॥ महः।२।१००।

ধার্ম্মিক ব্যক্তি ইক্সিয়দিগকে বশীভূত ও মনকে সংযত রাথিয়া যোগবলে শরীরকে ক্ষীণ না করিয়া তাবং কম্ম সংসাধন করেন।

परपत्नो त या स्त्रीस्थादसम्बद्धा च योनितः। तां ब्रूयात् भवतीत्येषं सुभगे भगिनौति च ॥८०॥ • मनः। १। १२८। পরস্ত্রীকে মাননীয়া সোভাগ্যবতী ভগিনী বলিয়া সংখা-ধন করিবেক

'वस्य वाङ्मनसे ग्रंबी सम्यग्गुप्ती च सर्व्या । । स वै सर्व्यामनाप्नीति वेदान्तीपगर्तं फलं ॥ ८१ ॥ नवः । २ । १६० ।

ৰাহার বাক্য ও মন পরিশুদ্ধ এবং সর্বাদা সংঘত, সে বেদাস্ত প্রতিপাদ্য সর্ব্ব প্রকার মৃক্তি লাভ করে।

यं मातापितरी क्रियं सहिते सक्षविनृषाम्। न तस्य निष्कृतिः यक्या कत्तुः वर्षयतैरपि॥८२॥ मतः। २११२०।

পিতামাতা ইহলোকে সম্বানের জন্য যাদৃশ ক্লেশ সহা করেন; পুত্র শত বর্ষেও তাঁহাদের ঋণ পরিশোধ করিতে সমর্থ হয় না।

विवादप्यस्तं पास्तं बालादपि सुभावितम्। श्रमितादपि सहुत्तममिधादपि काश्वनम्॥ ८३॥ महः। २। १३८।

বিষ হইতেও অমৃত প্রহণ করিবেক, বালকের মুখ হইতেও সং কথা প্রবণ করিবেক; শক্তর নিকট হইতেও সাধু দৃষ্টান্তের অস্থকরণ করিবেক এবং অপবিত্র স্থান হইতেও কাঞ্চন প্রহণ করিবেক।

खिबोरकामाबी धर्मैः गौषं सुभावितं तथा।

विविधानि च मिलानि समादेयानि सब्द त: ॥८४

मनु: । २ । २४० ।

স্ত্রীকে সর্ব্বতোভাবে অর্থ ধর্ম্ম পবিত্রতা মিষ্ট বাক্য ও বিবিধ
দিল্ল দ্রব্য প্রদান করিবেক।

सन्तोषम्परमास्थाय सुखार्थी संयतो भवेत्। सन्तोषमूलं हि सुखं दुःखमूलं विपय्ययः ॥८५॥

স্থার্থী সংযত ব্যক্তি পরম সম্বোষ লাভ করেন ; কারণ সম্বোষই স্থাবর মূল, অসম্বোষই হঃধের কারণ।

इन्द्रियार्थेषु सब्बेषु न प्रसच्चेत कामतः। श्रति प्रसित्तिश्चेतेषां मनसा सिववर्त्तयेत्॥ ८६॥ मनः। ४:११६।

বাসনার পরতন্ত্র হইয়া ইন্দ্রিয়ের বিষয়ে আসক্ত হইবে না । এবং মনের বারা ইন্দ্রিয়ের বিষয়ের প্রতি অত্যাসক্তি নিবারণ করিবে।

सर्वः परवधः दुःखः सर्वः मात्मवधं सुखम् ।
 एतिद्वात् समासेन लच्चणं सुखदुःखयोः ॥८७॥
 मनः।४।१६०।

বাহা কিছু পরাধীন তাহা ছঃথের কারণ, আত্মবশ সকলই ফথের কারণ ; সংক্ষেপে স্থ্য ছঃথের এই লক্ষণ জানিবেক।

र्यंकः प्रजायते जन्तुरिक एव प्रलीयते।

रिकोऽनुभुं को सुक्ततमेक एव च दुष्कृतम्॥ ८८॥

मनु: । ४ | २४० |

একাকী মন্থবা জন্ম গ্রহণ করে, একাকীই মৃত হয়; একাকীই স্বীয় পুণা ফল ভোগ করে এবং একাকীই স্বীয় ्षक्ष कल (ভाগ करत । 💢 📜 🛒 🛒 🥳 🧘 🦾 💮 💮

एकाको चिन्तयानोहि परं श्रेयोधिगच्छति ॥८८॥

मतः। ४। २५८।

প্রতিদিন একাকী নির্জনে আপনার হিত চিন্তা করি-একাকী চিন্তা করিলে পরম মঙ্গল লাভ হয়।

श्रद्धिगीवार्षि श्रध्यन्ति मनः सत्येन श्रध्यति । विद्यातपोभ्याभूताका बुडिर्ज्जीनेन युष्यति ॥८०॥

मनु:।५।१०८।

জলের দ্বারা গাত ওদ্ধ হয়, সত্যের দ্বারা মন ওদ্ধ হয়, ব্ৰন্ধজ্ঞান ও তপদ্যা দারা আত্মা শুদ্ধ হয় এবং জ্ঞানদারা বুদ্ধি শুক হয় ৷

श्रतिवादांस्तितिचेत नावमन्येत कञ्चन। नचे मन्देहमात्रित्य वैरं कुळात केनचित्॥ ८१॥ मनु:। ६ ! ४७।

কেহ কঠোর কথা বলিলে তাহা সহ্য করিবেক, কাহাকে ও অবমাননা করিবেক না; এই মানব দেহ ধারণ করিয়া কাহারও সহিত বৈর আচরণ করিবেক না।

क्रां च प्रतिका दे दाका हः क्रम संवदेत्। सप्तदारावकीणीय न वासमहतां वदेत्॥ ८२॥ मनः । ६। ४८।

তুর বাজিব প্রতিক্রোধ কবিবেক না. কেছ নিজা করি-লেও তাহাকে ভাল কথা বলিবেক; পঞ্চেক্রির ও মনোবৃদ্ধিতে বিক্রিপ্ত হইলেও মিথ্যা কথা বলিবেক না।

द्रियाणां निरोधेन रागद्देषचयेण च। श्रहिंसया च भूतानामसृतलाय कल्पते॥ ८२॥ मनः। ६। ६०।

ই ক্রিয় নিগ্রহে ও রাগ দ্বেষ হিংসা ক্ষরে মনুষোর অমৃত্ত লাভ হয়।

दह्यन्ते भायमानानां भातूनां हि यथा मलाः।
तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य नियहात्॥८॥
ंमतः। ६००॥

যেনন অধিদংগোগে ধাতুর মলা ভক্ষীভূত হয়, তজপ প্রাণ নিগ্রহে ইন্দ্রিয়গণের দোষ দগ্ধ হইয়া যায়।

प्रियेषु खेषु सुज्ञतमप्रियेषु च दुष्कृतम्। विस्वज्य ध्यानयोगेन ब्रह्माभ्येति सनातनम्॥८५॥ मनः। ६। ०८।

সাঁধু বাক্তি আপনার প্রিয় ও অপ্রিয় বিষয়ে মঙ্গলামঙ্গল পীরিতাগে করিয়া ধ্যানবোগে স্নাতন ব্রহ্মকে লাভ করেন।

यदा भावेन भवति सर्व्वभावेषु निष्णृहः । तदा सुखमवाप्रोति प्रेत्यचे ह तु ग्राम्बतम् ॥८६॥

मनु: | ६। ८०।

যথন মত্বয় সমুদায় বহিবি বিয়ে নিষ্পৃহ হইয়া সিদ্ধ হয়েন, তথন তিনি ইহলোক পরলোকে নিতা স্থথ লাভ করেন।

िष्ठतिः चमादमोऽस्ते यं शौचिमिन्द्रियनियहः। धीविद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मं लच्चणम् ॥८७॥ मतः। ६। ८२।

নৈর্ধ্য, ক্ষমা, মনঃসংযম, অচৌর্ধ্য, দেহ ও অক্তরগুদ্ধি, ইন্দ্রিয়নিগ্রহ, জ্ঞান, ব্রহ্মবিদ্যা, সত্যক্থন ও অক্তোধ; ধর্মের এই দশ প্রকার লক্ষণ।

पात्रस्य हि विशेषेण ऋह्धानतयैव च । ऋ्रत्यं वा बहु वा प्रेत्य दानस्थावाप्यते फलम् ॥८८॥ स्तः।०।८३।

দাতা আপনার শ্রদ্ধা এবং পাত্রের যোগ্যতা অনুসারে দানের অল্প বাবছ ফল প্রলোকে প্রাপ্ত হয়েন।

्र एक एव सुद्ध हम्मी निधने प्यनुयाति यः।

प्रदीरेण समंनामं सर्व्यमन्यद्वि गच्छति ॥ ८८॥

मनुः। ६।१०।

ধর্ম কেবল একই মিত্র, বিনি মরণকালেও অনুগামী হয়েন; আর সম্দয়ই শরীরের সহিত বিনাশ পায়।

एको हमस्मीत्यात्मानं यस्तं कत्याण मन्यसे। नित्यं स्थितस्ते हृदोष पुष्यपापेचिता सुनि:॥१००॥

मनुः । ८१ ।

হে ভদ ! আমি একাকী আছি, এই যে তুমি মনে করি-তেছ, ইহা মনে করিবে না। কারণ এই পুণ্যপাপদশী দর্মজ পুরুষ তোমার স্থান্য নিস্তা স্থিতি করিতেছেন।

त्ररिचता ग्रहे रुदा पुरुषेराप्तकारिभिः। 🦪 त्राक्षानमात्मना यास्तु रचेयुस्ताः सुरचिताः॥१०१॥

मनु:। ८।१२।

বিশ্বস্ত ও আজ্ঞাবহ ব্যক্তিগণ কর্তৃক গৃহমধ্যে রুদ্ধা পাকিলেও স্ত্রীরা অরক্ষিতা; যাঁহারা আপনাকে আপনি রক্ষা কবেন তাঁহারাই স্থরক্ষিতা।

श्रहिंसा सत्यम हो यं श्रीचिमिन्द्रिय नियहः।
एतत् सामाजिक' धर्मां चातुर्व्व भे ऽब्रवीना निः॥१०२

একজন মূনি বলিয়াছেন যে,অহিংসা,সতা বাক্য,অচৌধ্য, নেহ ও চিত্ত শুদ্ধি এবং ইন্দ্রিয় সংযম,এসমুদ্রই সকলজাতির সাধারণ ধর্ম।

कत्वा पापं हि सन्तप्य तस्मात् पापात् प्रमुच्यते । नैवं कुर्यां पुनरति निव्चा पूर्यते तु सः ॥ १०३॥ मतः। ११। २३०।

পাপ করিয়া তন্নিমিত্ত সম্ভাপ করিলে সেই পাপ হইতে

मन्त्रा मुक रहा। अमन कर्ष चाह कहित ना, अर्रेक्ष প্রতিজ্ঞা कहित्रा ठारा रहेट निवृत्त रहेट दि शवित रहा। श्रद्धानाद्यदि वा ज्ञानात् कला कर्या विगहितं। तसाहिमुक्तिमन्तिच्छन् हितीयत्र समाचरेत्।१९४॥ मनः।११। २३२।

কোন ৰাক্তিজ্ঞাতসারে বা অজ্ঞাতসারে পাপাচরণ করিয়া তাহা হইতে মুক্তি লাভ করিতে ইচ্ছা করিলে সে আর দিতীয় বার তাহা করে না।

यदुस्तरं यदुराणं यदुर्गं यञ्चदुष्करम्। सब्बन्तु तपसा साध्यं तपोच्चि दुरतिक्रमम्॥१०५

যাহা গ্রন্তর জ্প্রাথ্য জুর্গম ও জুক্তর তৎসমূদ্রই তপস্যা সংধ্য, তপ্সাা দ্বারা সকলই অ্য কবা যায়।

यत्किञ्चिदेनः कुर्व्वक्ति मनोवाङ्मूर्त्तिभिर्जनाः । तत्मर्व्वे निद्देश्वयायु तपसेव तपोधनाः ॥१०६॥

मनु: | ११ | २४१ |

তপোধনের শরীর মন বাক্য দারা যাহা কিছু পাপাচরণ করেন, তপদ্যা দারাই তৎসম্পায় শীঘ্র ভন্মীভূত করেন।

एवं यः सर्व्वभूतेषु पश्चत्यात्मानमात्मना । स सर्व्य समतामित्य ब्रह्मास्ये ति परम्पदम् ॥१००॥

এইরূপে যিনি স্বয়ং সর্বাভূতে ঈশ্বরকে সন্ধর্শন করেন, তিনি সাম্যাবস্থা প্রাপ্ত হইয়া ত্রন্সের পরম পদ লাভ করেন। दिवी भूमी तथाकाण विश्वरत्त्रसमे विभुः । योविभात्यवभासात्मा तस्मे सर्व्यात्मने नमः ॥१०८॥ योगवाणिष्ठम् १ १ १

বে বিভূ সকলের অন্তরাম্মা হইরা স্বর্গে ভূতলে আকাশে ও আমার অন্তরে বাহিরে বিরাজ করিতেছেন, সেই সর্বাম্মা পরমেশ্বরকে আমি নমস্কার করি।

उभाभ्यामेव पचाभ्यां यथाखे पिचणां गति:।
तथैव जानकचाम्यां जायते परमं पदम् ॥१०८ ॥
योगः १। ७

যেমন পক্ষিরা উভয় পক্ষ হারা আকাশে বিচরণ করে, তজ্ঞপ মহুব্য ত্রশ্বজ্ঞান ও কর্মাহুষ্ঠানহারা পরম পদ শাস্ত করেন।

किन्तू भाभ्यां भवेग्ये चामाविह मोचीऽभि जायते। किन्तू भाभ्यां भवेग्ये चिसाधनन्तू भयं विदुः॥११०॥

কেবল কর্মাম্ন্তান বা ব্রহ্মজ্ঞানদারা মৃক্তি লাভ হয় না, কিন্তু উভয়ই মোক্ষ সাধনের উপায় জানিবে।

श्रमेषेण परित्वामी वासनानां यल्समः । मोच जत्यु चते सिन्नः स एव विमलक्रमः ॥१११॥ সাধুরা অশেষ প্রকারে বাসনা পরিত্যাগই উৎকৃষ্ট মোক্ষ এবং তাহাই ব্রহ্মলাভের প্রকৃষ্ট সোপান বলিয়া নির্দেশ করেন।

तरवोऽिप हि जीवन्ति जीवन्ति सगपचिणः।.
स जीवित मनो यस्य मननेन हि जीविति ॥११२॥

थाग २।२८।

বৃক্ষাদিও জীবন ধারণ করে, মৃগপক্ষিরাও জীবন ধারণ করে, কিন্ত যাঁহার মন অক্ষমনন দ্বারা সজীব হয়, তিনিই যথার্থ জীবন ধারণ করেন।

ते वन्द्रा स्ते महात्मानस्तएव पुरुषा भवि। ये सुखेन समुत्तीर्णाः साधी ! यीवनसकटात् ॥११३॥

হে সাধো। যাঁহারা যৌবন কালের বিষম বিপদ ছইতে অনায়াসে নিষ্তি লাভ করিয়াছেন, তাঁহারাই এ পৃথিবীতে পূজনীয় মহাত্মা পুরুষ।

श्रव्यक्तिन्द्रियाखेव सत्यं जातमसत्यतां। प्रहरत्यासनात्मानं मनसैव मनोरिपु:॥ ११४॥ योग । २ । १४१।

অনেক সময় ইন্দ্রিগণ শত্রুতাচরণ করে, সত্য অসত্য হইয়া যায়। অতএব মন্থ্য জাপনাকেই আপনি প্রহার করে; মনই মনের রিপু। इतस्ततो दरतरं विद्वत्य प्रविष्य गेहं दिवसावसाने। विवेकिकोकात्रयसाधृद्यत्त-रिक्तं हि रातीक उपैति निद्रां॥ ११५ ॥ योग । २ । १५६ ।

কোন্ ব্যক্তি সমস্ত দিন ইতস্তত ভ্রমণ করিয়া সায়ংকালে নিজগৃহে প্রবেশ পূর্ব্বক সাধুসঙ্গ ও সদালাপ বিনা অনায়াসে রহানীতে নিদ্রা যাইতে পারে ?

नाभिनिन्दामि मरणं नाभिनन्दामि जीवनम्। यथा तिष्ठामि तिष्ठामि तथैव विगत् ज्वरः ॥११६॥

আমি মরণেরও নিন্দা করি না, জীবনেরও প্রশংসা করি না। আমি যেরূপ থাকি তাহাতেই নিস্পাপ অবস্থায় অবস্থিতি করিতে চাই।

खानुभूतेः सु भास्त्रस्य गुरीय वैकवाकाता । यस्याम्यासेन तेनात्मा सन्तते नावलोकाते ॥११०॥ योग । ४ । ५२।

স্থাস্ত্র, গুরুবাক্য এবং আপনার অন্থভব এই তিনের ঐক্য করিয়া যিনি নিরস্কর ব্রহ্মজ্ঞান অভ্যাস করেন, তিনি পরনাত্মাকে দর্শন করেন। न कायक्षे प्रवेषुर्यं न तीर्घायतनात्रयः। केवलं तत्रानीमात्रजयेन साद्यते पदम्॥ ११८॥ योग । ४। ५०।

শারীরিক ক্লেশ, কাতরতা অথবা তীর্থবাদ এতদ্বারা ঈশবকে লাভ করা যায় না। কেবল মনকে জর করিলেই তাঁহাকে লাভ করা যায়।

मोचद्वारे द्वारपालायत्तारः परिकीत्तिंताः। यमो विचारः सन्तोषयतुर्थः साधुसङ्गमः॥ ११८॥

শাস্তি, ব্ৰহ্মজ্ঞান, সম্ভোষ ও সাধুসঙ্গ এই চতুৰ্বিধ ছার-পাল মুক্তিপথে নিয়ত বৰ্ত্তমান।

न रसायनपानेन न लक्ष्मालिङ्गनेन च। तथां सुखमवापीति शमेनान्तर्यथा जनः।

মন্ত্র শাস্তিরস দারা যাদৃশ হংথ লাভ করেন, তাদৃশ হংথ অমৃত বা বিষয়াদি ভোগে প্রাপ্ত হওয়া যায় না।

मृ्द्यं सङ्कीर्णतामिति चृत्युरप्युत्सवायतेः। श्रापद् सम्पदिवाभाति विद्यञ्जनसमागमे ॥१२०॥ योग । ३ । ०६ ।

সাধু জনের সংসর্গে মনের শ্ন্যতা বিদ্রিত হর, স্ত্যুও উৎসব তুল্য হয় ও আপদ্ সম্পদের ন্যায় প্রতিভাত হয়। यः स्नातः शीतसितया साधुसङ्गतिगङ्ग्या। किं तस्यदानैः किं तीयें किं तपीभिः किमध्वरैः

্বে ব্যক্তি সংসক্ষরপ গঙ্গার স্থশীতল নির্মালজলে স্নান করে, তাহার দান তীর্থ তপস্যা ও যাগ যজে কি প্রয়োজন।

विच्छित्रयम्ययस्तज्जाः साधवः सर्वे समाताः । सर्वे पायेन संसेव्यास्ते ह्युपाया भवाम्बुधौ ॥१२१॥ योग । ४ । ८ ।

মোহপাশবিমুক্ত ব্রহ্মজ্ঞ সাধুব্যক্তিরা সকলের পূঞ্জিত ছয়েন। সর্ব্বোপায়ে তাঁহাদিগের সেবা করিবেক, কারণ তাঁহারা ভবসাগরের উপায়।

मागावैराग्यविरसे चित्ते सन्तोषविज्ञिते। स्नाने वक्त्रमिवाद्धे न ज्ञानं प्रतिविष्यति ॥१२२॥ योग । ४ । दर १९

বেমন মলিন দর্পণে স্বীয় মুখ দর্শন করা যায় না, সেইরূপ নিরাশ কঠোর ও সন্তোষশূন্য চিত্তে ব্রহ্মজ্ঞান প্রতিভাত হয় না।

तुर्व्यवित्रान्ति युक्तस्य प्रतीर्थस्य भवार्षे वात्। जीवतीऽजीवतस्य व ग्रहस्यस्यात्रवा यतेः॥ १२३ ॥ তদ্ধ চৈতন্য স্বরূপ পর ব্রন্ধে সমাহিত ও সংসারসাগরো-ভীর্ণ সাধুব্যক্তি গৃহস্থ হউন আর সন্ন্যাসীই হউন তিনি জীবিত থাকিলেও সংসারের নিকট মৃতপ্রায়।

सर्वयक्तिरन्तराका सर्वभावान्तरस्थितः। यदितीयिवदित्यन्तयः पर्यति स पर्यति ॥१२४॥ योग। १३।११।

় যে ব্যক্তি তাঁহাকে সর্বশক্তিমান্ অনন্ত আত্মস্ত্রপ সর্বগত অধিতীয় ও চিৎস্বরূপ জানিয়া স্বীয় অন্তরে দর্শন করে, সেই তাঁহার দর্শন পায়।

जीवस्तुता न मज्जन्ति सुखदु'खरसस्थिता।
प्राक्ततेनाय्य कार्यो प किञ्चित् कुर्वे न्ति वा न वा॥१२५॥
योग । १३ । १२।

জীবন্মুক্ত সাধুগণ আর স্থ হঃথে নিমগ্ন হয়েন না, ভাঁহারা বাহ্যাস্থান কক্ষন বা না কক্ষন তাহাতেই বা কি।

न तपांसि न तीर्घाणि न यास्त्राणि जयन्तिवः। संद्वारसागरीत्तारे सळानासेवनं विना ॥१२६॥ योग। १४। १२।

ভবসাপর পার হইতে গেলে সাধুসেবা ব্যতিরেকে ভোমাদের তপদ্যাচরণ তীর্থসমন ও শাল্লাধ্যয়ন কিছুই ফলোপধারী হুইবেক না। तस्त्राद्वासन्या वर्षं सुक्तं निर्व्वासनं मनः । राम ! निर्व्वासनीभाव मावहाश विवेकतः ॥१२७॥ योग । १४ । ४५ ।

.হে রাম ! সংসারাসক্ত মন বাসন। শূন্য হইলে মুক্ত হয় ; ষ্মতএব তুমি√বিবেকেরদারা সেই বাসনা পারিত্যাগ কর।

सम्यगाली नात् सत्यात् वासना प्रविलीयते । वासना विलये चेतः यममायाति दीपवत् ॥१२८॥ योग । १४ । ४६ ।

সম্য প্রকারে সত্যালোক অবলোকন করিলে বাসনা বিনষ্ট হয়, বাসনার বিনাশে মন নির্বাণ দীপের ন্যায় শাস্তি লাভ করে।

> चपयम सुखमाहरेत् पवित्रं यमरसतः यममिति साधुचेताः । प्रथमितमनसः खकी खरूपे भवति सुखे खितिरुत्तमा चिराय ॥१२८॥ योग । १० । ११ ।

সাধু চিত্ত ব্যক্তি নির্মাণ শাস্তি স্থপ সম্ভোগ করেন। এবং শাস্তি রসের হারা অধিকতর শাস্তি লাভ করেন। তিনি প্রশাস্ত ক্ষমে স্থাস্থরপ একে চিরকাল উৎকৃষ্ট রূপে অবস্থিতি করেন।

भगिरस्त हकाराभ मग्रेषाकारसंस्थितं। भजस्त्रसुर्वरन्तं स्वंतमात्मानसुपास्त्रहे॥ १३०॥ वीव। १८। १६।

যিনি মন্তকাদি অবন্ধব রহিত ও সর্ব্বগত এবং যিনি "আমি আছি" এই কথা অজস্র বার বলিতেছেন সেই গ্রারমাত্মাকে আমি উপাসনা করি।

मुष्टयोमोन्दवीजानां हृष्टयो विविधापदाम् । कुट्टयः चयं यान्ति तस्मिन् दृष्टे परात्परे ॥१३१॥ योगः १८। १।

্রেই পরাৎপর পরমেশ্বরকে দর্শন করিলে মোছ বিনষ্ট হয়, আপদ্ বিদ্রিত হয়, এবং কুদৃষ্টি একেবারে চলিয়া যায়।

इत्यन्तर्निश्चयं त्यक्वा विचार्यं मनसा सह। नाइं पदार्थस्य न मे पदार्थे इति भाविते ॥१३२॥ योग। १८।१८।

আমি কোন পাদার্থের নহি এবং আমারও কোন পদার্থ নঙ্গে এইরূপ মনের সহিত বিচার পূর্বক নিশ্চয় জ্ঞানকেই অহসার ত্যাগ বলা যায়।

समः ग्रती च मित्रे च दयादाचिष्यसंयुतः। श्राप्तकसंकरो नित्वं संसारेनावसीद्ति॥१३३॥। योगः १८।३५॥ ষিনি শক্র মিত্রে সমান দয়াবান্ সরল ও নিত্য কর্ত্র্ব্র-পরায়ণ, তিনি কলাদি সংসারে হুঃখ ভোগ করেন না।

नाभिनन्दित न हे ष्टिन ग्रीचित न काङ्चित । इ हिताबी हितेमुकः संसारे नावसीदित ॥१३४॥ ग्रीम । १८ । ४८।

বিমুক্ত বাক্তি কোন বিষয়ে আনন্দ প্রকাশ করেন না, অগচ ছাণাও করেন না; শোক করেন না, অগচ ইচ্ছাও প্রকাশ করেন না; তিনি সংসারে কদাপি ছাও ভোগ করেন না।

त्रतः संत्यत्तसर्व्वायो वीतरागी विवासनः। वहिःसर्व्व समाचारी स्रोके विचर राघव!॥ १३५॥

হে রাঘব! সংসারে হৃদয়কে বৈরাগ্যে পরিপূর্ণ করিয়া বিরাগী ও অনাসক্ত থাকিয়া বাহিরে তাবংকার্য্য সম্পাদন কর।

ंत्रयं बन्धरयं निति गणना चुद्रचे तसाम्। ∴ उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुब्बकम् ॥ १३६॥ वीगः १८। ५३।

ইনি বন্ধু ইনি পর, ক্ষুদ্রচিত্ত ব্যক্তিরাই এ গণনা করে, কিন্তু উদারচিত্ত ব্যক্তিদিগের পক্ষে জগতের সকলেই আত্মীয়। मविवेकादुपाद्धत्य चेतः स्वैयद्यनिस्यैः।

वनात्कारेण संयोज्यं शास्त्रसत्पुरुषक्रमैः ॥१३७॥

অবিবেক হইতে চিত্তকে আকর্ষণ করিয়া ব্রহ্মলাভে নিয়ত যত্ন করিবেক এবং বল পূর্ব্বক মনকে সংশাস্ত্র প্রতি সাধুসঙ্গে নিয়োগ করিবেক।

श्रमतः निर्मेलं चित्तं मुत्तसं सार्व्य पिस्सुटं। सत्तन्तु दीर्घतपसा मुत्तमप्यति वन्धवत्॥ १३८॥ योग । २५ । ३।

অনাসক্ত শুদ্ধতিত্ত ব্যক্তি সংসারী হইলেও মুক্ত, আর বিষয়াসক্ত ব্যক্তি দীর্ঘকাল তপসা৷ করিলে ও মায়াবদ্ধ।

चणमानन्दितामिति चणमेति विषादितां। चणं साम्यत्वमायाति सर्व्वि चित्रद्वटवस्मनः ॥ १३८॥

মহুষ্যের মন ক্ষণে আনন্দিত, ক্ষণে বিষণ্ণ ও ক্ষণে সাম্যাবস্থা প্রাপ্ত হয়; অতএব মন এই সংসারে নটের ন্যায় অভিনয় করিয়া থাকে।

बार्स्यमस्पदिनैरेव यौवनश्री तती जरा।
देहेऽपि नैकरूपत्वं कास्यावाश्ची पुवस्तुषः॥ १४०॥
योग। १८। ३०।

মন্থার বাল্যকাল অল্পনিই থাকে, যৌবনের রূপ-লাবণ্য অস্থায়ী, বার্দ্ধকাও চিরদিন থাকে নাম্পতএব যথন এই দেহের এক অবস্থা দর্শন কয়া যায় না, ক্রান আর বাহ্য বস্তুর প্রতি আদর কি নিমিত্ত ?

श्रीतलानि पविव्राणि चरितानि विवेकिन:।
इन्होरिवांश जालानि जनं श्रीतलमत्यलं ॥१४१॥
योग । ५ । १७।

চন্দ্রের স্থশীতল কিরণ যেমন সমুদয় পদার্থকে স্লিগ্ধ করে, সেইরূপ বিবেকির বিনীত পবিত্র চরিত্র মন্থাকে অত্যস্ত আনন্দিত করে।

वतीचीऽध्यायः ।

श्वास्तिः ब्रह्मपरमः भूवं ज्योतिः सनातनम्। यस्य दिव्यानि कर्याणि क्षययन्ति मनीविणः ॥१४२॥ महाभारत-सादिपर्वाणः । १ । १५०।

জ্ঞানীরা যাঁহাব পবিত্র গুণ কীর্ত্তন করিয়া থাকেন, তিনি নিত্য ধ্রুব জ্যোতিঃস্বরূপ সনাতন প্রব্রহ্ম।

योऽन्यथा सन्तमात्मान मन्यथा प्रतिपद्यते। किन्तेन न कतं पापं चौरेणात्मापचारिणा ॥१४३॥ भादि। ७४। ३०१४। বে নিজে এক প্রকার হইরা আপনাকে অপরের নিকট অন্যরূপ করে, সেই আত্মাপহারী চৌর ধারা কোদ্ পাপ না অনুষ্ঠিত হইতে পারে ?

सा भार्या या यहे दचा सा भार्या या प्रजावती । सा भार्या या पतिप्राणा सा भार्या या पर्तित्रता ॥१४३॥ मादि । ७४ । १०२० ।

সেই ভার্য্যা যে গৃহকার্য্যে স্থদক্ষা, সেই ভার্য্যা যে সন্তান-ৰতী, সেই ভার্য্যা যে পতিপ্রাণা, এবং সেই ভার্য্যা যে পতিব্রতা।

प्राज्ञस् जल्पतां पुंसां श्रुत्वा वाचः श्रभाश्रभाः ।
गुणवद्वाक्यमाद्त्ते हं सः चौरमिवाश्रसः ॥ १४३॥
भावि । ०४ । ३००८ ।

হংস যজ্ঞপ হল হইতে কীর গ্রহণ করিয়া থাকে, সেইরূপ প্রাক্ত ব্যক্তি লোকের সদসৎ বাক্য হইতে হিডকর বাক্যই গ্রহণ করেন।

ष्णान् परिवदन् साधुर्यशाष्टि परितप्यते । तथा परिवदन्नन्यां सुष्टा भवति दुर्जनः॥ १४४॥

शाद्षा १४ । १०४।

সাধু ব্যক্তি যেমন পরের নিন্দা করিয়া অমৃতপ্ত হয়েন, ছর্জন ব্যক্তি সেইরূপ অপরের নিন্দা করিয়া সম্ভষ্ট হয়। ं नास्ति सत्यसमो भमो न सत्यादियते परम्। न हि तौवतरं किञ्चिद्दतादिह विकास १४०॥ भारि । १४०॥

* সত্যের সমান আর ধর্ম নাই, এবং সত্য হইতে প্রকল্প বন্ধও আর ক্ষিছুই নাই, ইহলোকে মিথ্যার পর তীত্র পদার্থও আর নাই।

यदा न कुरते पापं सर्व्यभूतेषु कर्षिति । कर्माणा मनसा वाचा ब्रह्म सम्पद्यते तदा॥१४८॥ भादि ७५। ३१००।

ষধন মনুষ্য কার্য্য মন ও বাক্য দ্বারা কোন প্রাণির প্রতি ক্থনও পাপাচরণ না করেন, তথন তিনি ব্রহ্মকে লাভ করেন।

यः समुत् पतितं क्रीधं चमयेह निरस्यति। यथोरगस्तचं जीर्षं स ने पुरुष उचते॥ १४८॥
भादि। ९८। १३२२।

দর্প যেরপ স্বীয় জীর্ণ ত্বক পরিত্যাগ করে, সেইরূপ যিনি প্রজ্ঞলিত ত্রোধকে ক্ষমার দ্বারা বিদ্রিত করেন, তিনিই ম্বথার্থ পুরুষ।

तपस दानस्य ममो दमस ।
ह्रोरार्ज्यं सर्व्यभूतानुकम्पा॥
स्वर्गस्य लोकस्य वदन्ति सन्ती
दाराणिसप्तेव महान्ति पुंचाम् ॥ १५०॥
मादि। २०। १६११।

সাধুলোকেরা বলেন, তপদ্যা, দান, শম, ইন্দ্রিয়সংযম, লজা, সর্বাত্ত প্রাণিগণের প্রতি দয়া এই সপ্তবিধ মন্ত্রের স্বর্গলোকে বার প্রেষ্ঠিয়ার।

मवस्यं निधनं सर्व्यं गैन्तव्य मिस्त मानवै: मवस्यभावीन्यर्थे वे सन्तापो नस्त विर्थते ॥१५१॥ महि। १५८ । ६१४॥

ইং সংসারে মানবগণ নিশ্চয়ই কালগ্রাদে পতিত হইবে। অতএব এই ক্ষণভঙ্গুর বিষয়ের জন্য কাহারো হুঃথ করা উচিত নহে।

एति व परमं न्यार्थीः कार्यं लोके सनातनं प्राणानिप परित्य ज्य यद्गर्ताहरुतमाचरेत्॥१५२॥

चादि । १५८ । ६१४६ ।

প্রাণ পরিত্যাগ করিয়া স্বামীর হিতসাধন করাই ইহ-লোকে নারীগণের শ্রেষ্ঠ সনাতন ধর্ম।

मोह्नजालस्य योनिर्हि महैरेव समागमः। श्रहत्यहिन धर्मस्य योनिः साधुसमागमः ॥१५३॥ वनपर्काणः। १५३॥

মৃঢ় ব্যক্তিনিগের সহবাসে সমূহ মোহের উৎপত্তি হয় এবং প্রতিদিন সাধুনংসর্গে নিশ্চিত ধর্মের উৎপত্তি হয়।

याक्र हस्ताड़ितः क्रुडः चमते यो वजीयमः। यश्चनित्यं जितकीधी विद्वानुत्तम पर्वः ॥१५४॥ वन। १८। १०८॥ ধিনি বলবান্ ব্যক্তি ধারা নিন্দিত তাড়িত ও কুছ হইলেও ক্ষমা করেন এবং ধিনি নিতা ক্রোধকে জয় করিয়া-ছেন, তিনিই জ্ঞানী ও উত্তম পুক্ষ।

्र चमा धर्मः चमा यज्ञः चमा वेदाः चमा श्रुतं। य एतदेवं जानाति स सर्वं चन्तु मर्हति ॥१५५॥ वन । २८ । ११००।

ষিনি জানেন যে, ক্ষমাই ধর্ম, ক্ষমাই যজ্ঞ, ক্ষমাই বেদ, ক্ষমাই শাস্ত্র, তিনি সকলই ক্ষমা করিতে সমর্থ হয়েন।

चिन्तव्यमेव सततं पुरुषेण विजानता।
यदा हि चमते सर्वे ब्रह्म सम्पद्यते तदा॥
चमावतामयं लोकः परस्वै व चमावतां।
इह समानमिक्कृन्ति परत्रच ग्रुभां गर्ति॥१५६॥
वन । २८।११०६।

জ্ঞানীব্যক্তির সতত ক্ষমা করা কর্ত্তব্য; যথন মন্ত্র্য্য সকলকে ক্ষমা করেন, তথন তিনি ব্রহ্মকে লাভ করেন। অতএব ক্ষমাশীল ব্যক্তিদিপেরই ইহলোক ও ক্ষমাশীল ব্যক্তি-দিপেরই পরলোক। তাঁহারা ইহকালে সম্মান ও পরকালে সদাতি লাভ করেন।

येषां मन्युमा तथ्याणां चमयाभिहतः सदा। तेषां परतरे लोका सासात् चान्तिः परा मता॥१५०॥

वन । २८ । ११०८।

বে সকল মনুব্যের ক্রোধ ক্ষমা দারা বিনষ্ট হয়, তাহাদের অপেক্ষা আর শ্রেষ্ঠতর লোক নাই। অতএব ক্ষমাই সর্বশ্রেষ্ঠ জানিবে।

देयमार्तस्य ययनं परित्रान्तस्य चासनम् ।

विवास्य च पानीयं चृधितस्य च भीजनम् ॥१५८॥

वन । २८ । ३६२८ :

রোগীকে শ্যা, প্রান্তকে আসন, তৃষ্ণার্ত্তকে পানীর এবং ক্ষতিকে ভোজ্য বস্তু প্রদান করিবেক।

ं उदारमेव विदांसो धर्मः प्राचुर्मेनीविणाम्। उदारं प्रतिपद्यस्त नावरे स्थातुमईसि ॥ १५८॥ वन । १३ । १३०६।

পণ্ডিতেরা উদারতাকেই ধীর ব্যক্তিগণের ধর্ম বেলন। জ্বত্রএব উদার হও, কথন নীচত্তে অবস্থান করিও না।

यन मोहान कार्पणान लोभान्न भयादिप। श्रवतं किश्विदुत्तं ते नकामानार्धकारणात्॥ १६०॥ वन। ३३ । १३४०।

(सार, क्रथनंत्र), लांच, छत्र, कांसना ७ श्रीसांबन दमणः ७ क्रांथि (जासंत्र सिशा) वता छेठिल नरह । २ एतान् दोषान् प्रपथ्यिक्कितिकोधी मनीषिभिः । इच्छक्तिः परमं श्रेय इच्च चासुच चोत्तमं॥ १६१ ॥ वन । २८ । १३०६ ।

ব্ৰহ্মক্ত ব্যক্তি ক্রোধের এতাদৃশ দোষ দর্শন করিয়া তাহা জয় করত ইহলোক পরলোকে পরমোৎকৃষ্ট মঙ্গল লাভ করেন।

र ये पापानि न कुर्व्वन्तिमनीवाक्कर्यंबुिंकिः। ते तपन्तिमहात्मानो न श्वरीरस्य शोषणम् ॥१६२॥ वन। १२८। १३४४८

যঁহোরা মন ও বাক্য, কর্ম ও বৃদ্ধি দারা পাপাচরণ না করেন, সেই মহাআরাই তপসাা করেন, যাঁহারা শরীর শোষণ করেন, তাঁহারা তপসাা করেন না।

पापचित् पुरुषः कत्वा कत्याणमभिपद्यते। सुचते सर्व्यपापेभ्यो महाभ्रेणेव चन्द्रमाः॥ १६३॥ वन । २०६ । १३०५४।

কোন ব্যক্তি যদি অগ্রে পাপ করিয়া পশ্চাৎ মঙ্গলের অনু-সরণ করে, তবে মহামেঘে আর্ত চল্রের ন্যায় সে পূর্বাক্তত সমুনায় পাপ হইতে বিমৃক্ত হয়।

य्यादित्यः समुद्यन् वै तमः पूर्त्वं व्यपोत्ति एवं कत्याण मातिष्ठन् सर्व्वपापैः प्रमुच्यते ॥१३४॥ वन । २०६ । १३०५०।

কর্ব্যোদয়ে যেমন অন্ধকার তিরোহিত হয়, সেইরূপ পাপ করিয়া 'কল্যাণ আচরণ করিলে সকল পাপ হইতে প্রামৃক্ত হওয়া যায়।

सत्ये कता प्रतिष्ठान्तु प्रवत्ते निष्ठे प्रवत्तयः। सत्यमेव गरीयस्तु भ्रिष्टाचारनिषेवितं॥१६५॥ वन । २०६। १३०५०।

गम्नात्र थ्राविष्ठ माण्डि श्रांभन कतित्रा भितिन्नाभिष्ठ कत्रा कर्वता, कात्रन माधूकनामिष्ठ थक मण्डे श्रिष्ठं भनार्थ। यत्कस्याणमभिष्यायेत् तत्रात्मानं नियोजयेत्। न पापे प्रतिपापः स्यात् साधुरेव सदा भवेत्॥१६६

बन । २०६ । १३७५८ ।

যাহা কল্যাণ জানিবেক, তাহাতে আপনাকে নিয়োগ করিবেক। পাপাচারী ব্যক্তির প্রতি পাপাচার করিবেক না, কিন্তু সর্বাদা সাধুই থাকিবেক।

इन्द्रियाणां निरोधेन सत्योन च दमेन च।

ब्रह्मणः पदमाद्गीति यत्परं दिजसत्तमः ॥१६७॥

वन । २०८ । १३८८॥।

ধিনি ইক্রিয় দমন, সত্য ও সংধম ছারা ব্রহ্মের পরম পদ শাভ করেন, তিনি ছিজ্পেষ্ঠ।

्षवं निर्वेद मादत्ते पापं कर्यं जहाति च। धार्यिक वापिभवति मोचञ्च लभते परं ॥१६८॥ वन । २०८ । १३८८३ ।

ধার্ম্মিক ব্যক্তি এইরূপে পাপকর্ম পরিত্যাগ •করিয়া বৈরাগ্য অবলম্বন করিলে উৎকৃষ্ট মুক্তি লাভ করেন।

परित्यज्ञित यो दुःख सुखन्नायुभयं नरः। बन्न प्राप्नोति सीऽत्यन्तमसङ्गेन च गच्छिति॥१६८॥

वन । २०८ | १३८८५ ।

• যে ব্যক্তি স্থথ হঃথ উভয়ই পরিত্যাগ করে, সে বন্ধকে লাভ করিয়া স্মত্যন্থ নিষ্পৃহ হয়।

भनस्या चमा मान्तिः सन्तीषं प्रियवादिता। कामकोधपरित्यागः भिष्टाचार्निषेवनम् ॥ कर्मा च स्रुतसम्बन्नं सतां मार्गमनुत्तमं। भिष्टाचारं निषेवन्ते नित्यं धर्ममनुष्रताः॥१७०॥

वन । २४३ | १७८७८८ |

অনস্থা, ক্ষমা, শান্তি, সন্তোষ, প্রিয়বাক্য, কাম ক্রোধ পরিত্যাগ, সাধুসেবা, সৎকর্মা, ও শাস্ত্র অধ্যয়ন এই সকল সাধুজনগণের অত্যুৎকৃষ্ট্র পথ। ব্রতাচারী সাধকগণ নিত্য শুদ্ধাচারের অনুবর্তী হয়েন।

पापश्चिन्तयते चैव बवीति च करोति च। तस्याधर्यो प्रविष्टस्य गुणा नम्यन्ति साधवः॥१७१॥

वन । २४८ | ३३८०६ !

যে ব্যক্তি পাপচিন্তা করে, পাপ আলাপ করে ও পাপ কার্য্য করে; সেই অধর্মে প্রবিষ্ট ব্যক্তির সাধুগুণ সমূহও বিনষ্ট হইরা যার।

दान्तः समपरः शाखत् परिक्रोशं नविन्दति।

नचं तप्यति दान्ताका दृष्ट्या परगतां श्रियं ॥१७२॥ वन । २५८ । १५३११।

জিতেক্তির শান্তচিত্ত ব্যক্তি চিরকাল ক্লেশ ভোগ করেন না এবং পরশ্রী দেখিয়াও কাতর হয়েন না।

मानृषंखं परो धर्मः चमा च परमं र्वतं । माताचानं परचानं सत्यवतं परं वतम् ॥ सत्यस्य वचनं श्रीयः सत्ये चानं हितस्वित्। यद्गूतहितमत्यनां तद्दे सत्यं परं मतं ॥ १७३॥

অনৃশংসতা পরম ধর্ম, ক্ষমা পরম বল, আত্মজ্ঞান পরম জ্ঞান, সত্যত্রত পরম ব্রত, সত্য বাক্যই শ্রেয় এবং সত্য জ্ঞানই হিতকর। যাহা প্রাণিগণের অত্যন্ত হিতসাধক তৎসমুদায়ই পরম সত্য বলিয়া জানিবে।

> उद्यास्ते मनज्ञीहि न इष्टाति न श्रीचिति । सुखमापतितं सेवेत् दुःखमापतितं वहेत्।१७४।

সাধু ব্যক্তি সাংসারিক উন্নতিতেও স্বষ্ট হয়েন না ও অব-মতিতেও স্নান হয়েন না। তিনি স্থথ আসিলে তাহার সেবা করেন ও হঃখ আসিলে বহন করেন।

इस यत् क्रियते कम्म तत्परचापभुज्यते । तस्माच्चरीरं युद्धोत तपसा नियमेन च ॥१७५॥ नग । १५६ । १५३०८ १ মন্থ্য ইহকালে যেরূপ কর্ম্ম করে পরকালে তদন্ত্রূপ ফলভোগ করে। অতএব তপস্যা ও আত্মসংযমে শরীরকে নিয়োগ করিবেক।

श्रन्यायात् समुपात्ते न दानधर्मी धनेन यः। क्रियते न स कत्तारं तायते महती भयात्॥१७६॥ वन । २५८। १५४०२।

অন্যায়োপাৰ্জ্জিত ধন দ্বারা যে দান ধর্ম অনুঠিত হয়, তাহা সেই দাতাকে পাপজনিত মহৎ ভয় হইতে পরিত্রাণ করিতে পারে না।

कृतस्य कमा णस्तत्र भुज्यते यत्फन्नं दिवि। नचान्यत् क्रियते कम्म मूलच्छेदेन भुज्यते॥१७७॥

वन । २६० । १५६८३ ।

ইহকালে ক্বত সদসদ কর্ম্মের ফল ভোগ পরকালে হইয়া থাকে। অতএব এরূপ কর্ম করিবেক না যদ্গারা সমূলে বিনষ্ট হইতে হয়।

भद्रोहः सर्व्वभूतेषु कर्यया मनसा गिरा। श्रनुग्रहस्य दानस्य सतां धर्मः सनातनः ॥१७८॥
वन । २६०। १६०८०।

কার্য্য মন ও বাক্য দারা সম্দায় প্রাণির অনিষ্ঠ না করা; প্রত্যুত: অমুগ্রহ ও দয়া করা সাধুদিগের সনাতন ধর্ম।

> स्तां सक्तत् सङ्गतमीप्सितं परं। ततः परं मित्रमिति प्रचचते॥

नचाफलं सत्पुरुषेण सङ्गतं। ततः सतां सन्निवसेत् समागमे॥ १७८॥

वन । २८६ । १६००० |

वन । ३१२ । १७३६३ ।

অভিমান পরিত্যাগ করিয়া প্রিয় হইবে, ক্রোধ পরিত্যাগ করিয়া শোক করিবে না, বাসনা পরিত্যাগ করিয়া অর্থো-পার্জ্ঞন করিবে এবং লোভ পরিত্যাগ করিয়া স্থথী হইবে।

ज्ञानं तत्वार्थं संस्वीधः समित्तिप्रशान्तता । द्या सर्व्य सुखैषिल मार्ज्जवं समित्तिता ॥ १८१॥ वन । ३१२ । १०३०॥ ।

বিদ্যা, তৰ্জ্ঞান, বৈরাগ্য, প্রশাস্তভাব, দয়া, সকলের স্থান্থেবণ, সরলতা, সমদর্শিতা এই সকল সাধুতার লক্ষণ।

न हृत्यत्यात्मसमाने नावमानेन तप्यते।
गाङ्गो सृद द्वाचोभ्यो यः स पण्डित उच्यते॥१८२॥

चयोग पर्वाण। ३२। ८८६।

যিনি সম্মানেও ছাই হয়েন না ও অবমাননাতেও সম্ভপ্ত হয়েন না এবং যিনি প্রশাস্ত হ্রদের ন্যায় অক্ষ্ক থাকেন, তিনিই জ্ঞানী। तत्त्वज्ञः सर्व्वभूतानां योगज्ञः सर्व्वनम्पाम्। उपायज्ञो मनुष्याणां नरःपण्डित उच्यते ॥१८३॥

चद्यीग । ३२ | ८८० ।

• যিনি সমুদায় প্রানির তত্ত্ব, তাবৎ কার্য্যের যোগ ও সমস্ত মহুষ্যের উপায় জানেন, তাঁহাকে পণ্ডিত বলা যায়।

एको धर्माः परं श्रेयः चमैकामान्तिरुत्तमा । विद्यैका परमा तृप्ति रहिं मैका सुखावाद्या॥१८४॥

चदीम | ३२ | १०२२ ।

ধর্মই এক পরম মঙ্গলের নিদান, ক্ষরাই এক উৎকৃষ্ট শাস্তি, ব্রহ্মবিদ্যাই এক দর্কোচ্চ ভৃপ্তি, অহিংসাই একমাত্র স্থবের আকর।

> एकमेवा हितीयं तद्यद्राजन् नावबुध्यसे । सत्य' स्वर्गस्य सोपानं पारावारस्य नौरिव॥१८५॥ च्छीम । ३२। १०२० ।

হে রাজন্। সেই একমাত্র অধিতীয় ঈশ্বর যাঁহাকে তুমি জানিতেছ না, নত্যতঃ তিনিই স্বর্গের সোপান এবং পারা-বারের নৌকাম্বরূপ।

सीऽस्य दोषोन मन्तयः चमा हि परमं धनम्।
चमागुणोद्यश्वनानां श्रतानां भूषणं चमा॥
चमा वश्वीक्षतीलो के चमया किंन साध्यते।
श्वान्तिसङ्गः करे यस्य किं करिस्य ति दुर्जनः॥१८६॥
हसीग। २१। १०३०

ক্ষমাকে দোষ মনে করিবেক না; ক্ষমাই পরম ধন। ক্ষমা অশক্তদিগের গুণ এবং শক্ত দিগের ভূষণ। ক্ষমা দারা লোক ৰশীভূত হয়; ক্ষমা দারা কি না সাধিত হয় ? শান্তিরূপ থড় গ যাহার হন্তে, তুর্জ্জন ব্যক্তি তাহার কি করিতে পারে ?

पापं कुर्वेन् पापकीर्त्तः पापमे वासुते फलं। पुर्खं कुळ्न पुर्खकोर्त्तः पुर्खमत्वन्त मसुते ॥१८०॥ च्योग ।३४ । १२४९ ।

পাপাচারী ব্যক্তি পাপাচরণ করিয়া পাপের ফল ভোগ করে, আর পুণ্যবান্ ব্যক্তি পুণ্য কর্ম করিয়া পুণ্যের ফল ভোগ করেন।

तस्मात् पायं न कुळ्ोत पुरुषः संधितव्रतः।
पापं प्रचां नाभ्रयति क्रियमाणं पुनः पुनः ॥१८८॥
स्योगः। ३४। १२४२।

অতএব নিত্যব্রতধারী সাধক পাপাচরণ করেন না, কারণ, বারস্থার পাপাস্থতানে ধর্মবৃদ্ধি বিনষ্ট হয়।

नष्टप्रज्ञ: पापमेव नित्य मारभते नरः ।
पुष्यं प्रज्ञां वर्द्भयति कियमाणं पुनः पुनः ॥१८८॥
चियोग । ३४ । १२४३।

ধর্মবৃদ্ধি বিনষ্ট হইলে মহ্নযা পাপ ক্রিতে প্রবৃত্ত হয়, কিন্তু প্নঃ পুনঃ পুণ্যের অহুষ্ঠানে ধর্মবৃদ্ধি পরিবৃদ্ধিত হইয়া-থাকে। हदप्रश्चः पुष्यमेव नित्यमार्भते नरः।
पुष्यं कुळ्ने न् पुष्यकीर्त्तः पुष्यं स्थानं सगक्कित॥१८०॥
च्योग । ३४ । १२४४।

* ধর্মবৃদ্ধি পরিবর্দ্ধিত হইলে মহুষ্য নিত্য পুণ্যাহুষ্ঠানে প্রবৃত্ত হরেন; পুণ্যকীর্দ্ধি সাধুব্যক্তি পুণ্যকার্য্য করিয়া পুণ্যস্থানে গমন করেন।

सन्तापात् अख्यते वपं सन्तापात् अख्यते वतः । सन्तापात् अख्यते ज्ञानं सन्तापात् व्याधिम्ब्द्धति।१८१। च्योगः । १५ । १३ ।

সন্তাপে রূপ ভ্রষ্ট হয়, সন্তাপে বল ক্ষয় হয়, সন্তাপে জ্ঞান বিনষ্ট হয়, ও সন্তাপে ব্যাধি জন্মে।

त्रक्रोधेन जयेत् क्रोधमसाधुं साध्ना जयेत्। जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चान्त्रतम् ॥१८२॥ जयोग ।३८ । ४८८।

অক্রোধ দারা ক্রোধকে জয় করিবেক, সাধু ভাব দারা অসাধু ভাবকে জয় করিবেক, উপকার দারা অপকারকে জয় করি-বেক এবং সতাদারা মিথাাকে জয় করিবেক।

मीनात्र स सुनि भेवति नारखवसनात्राुनिः। र स्वलचणन्तु यो वेद स सुनिः श्रेष्ठ उत्त्रते ॥१८३॥

चयोग। ४२। ६८१।

• भीन इरेलरे किर मूनि रम ना, खत्रा वान कतिला

কেহ সুনি হয় না; কিন্তু যিনি আপনার লক্ষণ জানেন, তিনিই শ্রেষ্ঠ মুনি।

> यत्तच्छुकं महक्क्योति दे ध्यमानं महद्याः । तद्दे देवा उपासते तस्मात् स्रयो विराजते । योगिनस्तं प्रपायन्ति भगवन्तं सनातनं ॥१८॥ उद्योग । ४५ । ७३० ।

যিনি শুদ্ধ মহান্ জ্যোতিঃস্বরূপ, দীপ্যমান, ও মহা-কীর্দ্ধিশালী; দেবতারা তাঁহাকেই উপাসনা করিয়া থাকেন। তাঁহা হইতেই স্থ্য প্রকাশ পাইতেছে। যোগিগণ সেই সনাতন প্রমেশ্বরকে দুর্শন করিয়া থাকেন।

न बाहस्ये तिष्ठति रूपमस्य
न चचुषा पश्चिति किष्यदेनं
मनीषयाऽयो मनसा हृदा च
य एनं विदुरस्तास्ते भवन्ति ॥ १८५॥
चयोग । ४५ । ०४०।

তাঁহার রূপের সাদৃশ্য নাই, কেহ তাঁহাকে চক্ষুঃ দাবা দেখিতে পায় না। যাঁহার: ইহাকে বৃদ্ধি মন ও হৃদয়ের দারা জানেন তাঁহারা অমর হয়েন।

कतात्मा स महाराज ! स वै त्यागी सृतो नरः। अनवेच्य सुखादानं तथेवोर्द्धं प्रतिष्ठितः॥ १८६ ॥ शक्ति पर्वाच । १२ । ३४० । হে রাজন্ ! যে ব্যক্তি স্থথের প্রতি দৃষ্টি না রাধিয়া কেবল উর্দ্ধে প্রতীক্ষা করিয়া থাকে, তাহাকেই জিতেন্দ্রিয় ও সর্ব্বত্যাগী বলা যাইতে পারে।

त्यागयुक्तं महाराज ! सर्व्वमेव महाफर्ज । भमोदमम्त्रया धैर्यं सत्यं भीच मयार्जवम्॥१८०॥

হে রাজন্। ধর্মার্থে সর্বন্ধ পরিত্যাগ করিলে মহৎফল লাভ হয়। কারণ ইহাতে শাস্তি, ইন্দ্রিয় সংযম, ধৈর্য্য, সত্যু, বিশুদ্ধতা ও সরলতা প্রাপ্ত হওয়া যায়।

श्रासत्तः सत्तवद्गच्छितिःसङ्गी मृत्तवत्थनः । समः यत्नी च मित्रे च सब्वैमु तो महीपते ! ॥१८८॥

হে রাজন্! যে ব্যক্তি সংসারী হইয়াও অনাসক্ত বৈরাগী ও মায়াপাশ বিমৃক্ত, এবং যাঁহার শক্ত মিত্রে সমান জ্ঞান তিনিই মৃক্ত।

सन्तोषो वे खर्गतमः सन्तोषः परमं सखम्। तुष्टे व किचित्परतः सा सम्यक् प्रतितिष्ठति॥१८८॥

शा । २१ । ६१६ ।

श्रा। १२ । ३४८ ।

সন্তোষই উৎকৃষ্ট স্বর্গ, সন্তোষই পরম স্থ্য, সন্তোষ অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ পদার্থ আর কিছুই নাই; সেই সন্তোষই চির-প্রতিষ্ঠিত থাকে।

यदा संहरते कामान् कूर्मीऽङ्गानीव सर्वेश:।

तदासञ्चोतिरचिरात् स्वात्मन्धेव प्रसीदति ॥ २०० ॥ गा ११। ६१०।

কৃর্ম যেমন স্বীয় অঙ্গকে সংকোচ করে, সেইরূপ যথন সাধক আপনার সমুদায় কামনা সর্ব্ব প্রকারে প্রত্যাহার করেন, তথন তাঁহার আত্মাতে অচিরাৎ পরমাত্মার জ্যোতিঃ প্রকাশিত হয়।

न बिभेति यदा चायं यदा चास्नात्र बिभ्यति।

कामदेषी च जवति तदाकानं प्रपथ्यति॥ २०१॥

गा । २१। ६१८।

যথন মন্থ্য কোন প্রকারে ভীত না হন, এবং তাঁহা হইতেও কেহ ভীত না হয়, ও কাম দ্বেষ পরাজয় করেন; তথন তিনি পরমাত্মাকে দর্শন করেন।

/ सुखस्थानन्तरं दुःखं दुःखस्थानन्तरं सुखम् ।
न नित्यं लभते दुःखं न नित्यं लभते सुखम्॥२०२॥
गा। २५ । २५४।

স্থাবের পর হঃধ হঃধের পর স্থধ ; অতএব এই সংসারে কেহ নিত্য হঃধভোগও করে না, নিত্য স্থথভোগও করে না।

सुखं वा यदि वा दुःखं प्रियं वा यदि वाप्रियम् ।
 प्राप्तं प्राप्तमुपासीत इदयेनापराजिता ॥ २०३ ॥

श ०५० | ५५ । एड

স্থই হউক বা হঃগই হউক, প্রিয়ই হউক বা অপ্রিয়ই হউক, যাহা ঘটিবেক অপরান্তিত চিত্তে তাহার সেবা করিবেক। सुख हु: खन्न भवाभवी च जाभाजाभी मरण जीवितचा। पर्यायतः सर्वे मवाप्नुवन्ति तसादीरो नेव हृयो न प्रोचेत्॥ २०४॥

मा | २५ | ३८०८ ।

সকল মনুষ্যই স্থুখ, তুঃখ, মঙ্গল, অমঙ্গল, লাভ, ক্ষতি, ও জীবন মরণ পর্য্যায়ক্রমে প্রাপ্ত হইরা থাকে, কিন্তু ধীর ব্যক্তি ইহাতে স্কৃত্তিও হয়েন না শোকও করেন না।

हिला दश्च वामच क्रीधं हर्षं भयन्तया ! प्राथमित्राणि चेवस्व प्रणिपत्य क्रतान्त्रस्तिः ॥२०५॥

श्चा । १०५ । ३८०८ ।

হে রাজন ! অহস্কার, কাম, ক্রোধ, হর্ষ ও ভয় পরি-ত্যাগ পূর্ব্বক ক্তাঞ্জলিপুটে শত্রুদিগকে প্রণাম করিয়া তাহা-নের সেবা কর।

इष्टे भवति सा हृष्टा दुःखिते मयि दुःखिता। प्रोषिते दीनवदना क्रुडे च प्रियवादिनी॥ २०६॥

मा | १४४ | ५५०१ ।

আমি আনন্দিত হইলে তিনি আহলাদিতা হন, ছঃখিত হইলে ছঃখিতা হন, বিনেশে গমন ক্রিলে মানমুখী হন, এবং ক্রোধ ক্রিলে প্রিয়বাক্য বলেন।

पतिवता पतिगतिः पतिप्रियहिते रता।

यस स्थात्ताहृशी भार्था धन्यः स पुरुषी भुवि॥२०७॥

বে নারী পতিব্রতা ও পতিই যাঁহার গতি এবং যিনি পতির প্রিয় ও হিতকর কার্য্যে সর্বানা রত, যাঁহার এতাদৃশী ভার্যা। আছে, পৃথিবীতে সেই ব্যক্তিই ধন্য।

्नास्ति भार्यासमी वन्धुर्नास्ति भार्यासमा गतिः । नास्ति भार्यासमी लीके सहायी धर्मसंग्रहे॥२०८॥

श्रा। १४४ | प्रमुल्य ।

ভার্য্যার সমান আর বন্ধু নাই, ভার্য্যার সমান আর গতি
নাই, ইহলোকে ধর্ম্মসাধনে ভার্য্যার সমান আর সহায় নাই।

षरावणु चितं कार्यं मातिष्यं ग्रहमागते। क्रेत्तः पार्श्वगतां कार्यां नीपसंचरते द्रुमः॥ २०८॥

भा । १४६ । ५५२८।

শক্রও গৃহে সমাগত হইলে তাহার যথোচিত আতিথ্য করিবেক। বৃক্ষ ছেদকের পার্ম্বগত ছায়া কদাপি হরণ করে না।

प्राज्ञी वा यदि वा मुर्खः सधनी निर्धनीऽपि वा। सर्व्यकालवर्षं याति श्रभाश्रभसमन्त्रितः॥ २१०॥

क्षा १५३। ५०१०।

জ্ঞানীই হউক আর মূর্থই হউক ধনীই হউক আর নিধ-নই হউক; সকলেই আপনাপন পাপপুণ্য লইয়া কালগ্রাদে পতিত হইনেক।

मधर्मामनृतस्रवे दूरात् प्राज्ञो विवर्जयेत्। धर्मा सत्यं श्रुचं न्याय्यं महतीं प्राणिनां द्याम्॥२९१॥

भा । १५३ । ५०५६ ।

· জ্ঞানী ব্যক্তি অধর্ম ও মিপ্যা দুরে নিক্ষেপ করিয়া ধর্ম, সত্য, শাস্ত্র, ন্যায় ও প্রাণিগণের প্রতি উৎকৃষ্ট দয়া অবলম্বন করেন।

ये न इथिन्त लाभेषु नालाभेषु यथन्ति च। निर्माला निरहङ्काराः सत्त्वस्थाः समद्र्यिनः॥२९२॥

যাঁহারা বিষয়াদি লাভেও হাই হয়েন না এবং তাহার ক্ষতিতেও হৃঃথিত হয়েন না, সেই বিশুদ্ধচরিত্র সমদর্শিরাই নির্মাণ ও নিরহক্ষারী।

दमेन सहग्रं धर्मा नान्यं लोकेषु ग्रश्रुम । दमोच्चि परमो लोके प्रमस्तः सन्व धर्मा णाम् ॥ सुखं दान्तः प्रखपिति सुखच प्रतिबुध्यते । सुखं लोके विपर्येति मनसास्य प्रसीद्ति ॥ २९३ ॥ गाः १६० । ५८३॥ ।

ইন্দ্রিয় সংযমের তুল্য পৃথিবীতে আর উৎকৃষ্ট ধর্ম গুনি নাই, কারণ ইহ লোকে সর্ব্ধ ধর্মাক্রাস্ত লোকের মধ্যে ইহা শ্রেষ্ঠ ও প্রশস্ত। যাঁহার ইন্দ্রিয়সকল স্বীয় বশবর্তী; তিনি স্থেপে নিদ্রা যান, স্থেপে জাগ্রৎ হন, এবং স্থেপে সংসার যাত্রা নির্ব্বাহ করেন। তাঁহার মন সর্বাদা প্রসন্ন থাকে। चमा धतिरहिंसा च समता सत्यमार्ज्जवं। इन्द्रियाभिजयो दाच्यं माहैवं च्रीरचापसं। प्रकार्पव्यमसंस्थः सन्तीषः प्रियवादिता। प्रविहिंसानस्यया चाप्येषां समुद्योदमः॥२९८॥ं

ক্ষমা, ধৈর্য্য, অহিংদা, সমভাব, সত্যা, সরলতা, রিপুদমন, কোমলতা, লজ্জাশীনতা, স্থিরতা, দানশীলতা, অক্রোধ, সস্তোষ, প্রিয়বন্যি, অনিন্দা ও অনস্থা এই সকলকে আত্ম সংযম বলা যায়।

सत्यं सत्सु सदा धर्मः सत्यं धर्मः सनातनः। सत्यमेत्र नमश्चेत सत्यं हि परमा गतिः। सत्यं धर्मस्तपो योगः सत्यं ब्रह्म सनातनं। सत्यं धन्नः परः प्रोतः सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥२९५॥

शा । १६२ । इट्ट :

সাধুগণের নিকট সত্য নিত্য ধর্ম, সতাই সনাতন ধর্ম, এক সত্যই নমস্য, সতাই প্রমণতি, সত্যধর্মই তপ্স্যা ও যোগ, সতাই নিত্য ব্রহ্ম, সতাই শ্রেষ্ঠ য্জ্ঞ, স্কলই স্ভ্যে প্রতিষ্ঠিত।

। सत्यच समता चैव दमश्चैव न संग्रयः।

अमात्सर्यः चमाचैव द्रोह्मितिचाऽनुद्रयता।

त्यागोध्यानमधाय्ये त्वं धितिश्व सततं दया। यहिंसा चैव राजेन्द्र ! सत्याकारास्त्रयोदशः ॥२१६।

शा १६२ | ५८४ ।

ংহ রাজেন্ ! সত্যকথন, সমতা, নিশ্চিত ইন্দ্রিসংযম, অমাৎসর্য্য, ক্ষমা, লজ্জা, তিতিক্ষা, অমুস্যতা, ত্যাগ, ধ্যান, মহত্ব, ধৈর্য্য, সতত দয়া ও অহিংসা এই ত্রোদশটী সত্যের আকার।

न नित्यं सभते दुःखं न नित्यं सभते सुखम्। यरोरमेवायतनं दुःखस्य च सुखस्य च ॥ २१७॥

शा १७४ । ५४७७ ।

কেহ চিরকাল হঃখ ভোগও করে না, চিরকাল সুখ সস্থোগও করে না। অতএব এই শরীরই সুখ হঃখের মূলী-ভূত কারণ।

प्रियापिये परित्यच्य प्रशान्तात्मा भविष्यति । यदा न कुरुते भावं सर्व्वभूतेषु पापकम् ॥ २९८॥ शा । २५८ । १५२८ ।

यथन मञ्चा (कान প্রাণির প্রতি পাপাচরণ না করেন তথন তিনি প্রিয়াপ্রিয় পরিত্যাগ করিয়া প্রশান্তাত্মা হন। यस्य वाङ्मनसी स्थातां सम्यक् प्रशिहिते सदा। तपस्तागञ्च सत्यञ्च स वै परमवाप्त्र थात्॥ २१८॥
• शा। १०॥। ६॥॥। गाँशत वोकामन ममाक् श्रकात मर्सना मःगठ थारक,

किन्हें जनमा जान ७ नतम मं करतम।

निह प्रतीचते सृत्युः क्षतमस्य न वा क्षतम्।

कोचि जानाति कस्याद्य सृत्यु कालो भविष्यति।

गुवैव धर्मगीलः स्थादनित्यं खलु जीवितम्।

कृते धर्मोभवेत् कोर्त्तिरिह प्रत्य च व सुखम्॥२२०॥

शा। १९५। ६५३० !

কত বিষরের মধ্যে কত করা ছইল না, মৃত্যু ইহার প্রতীক্ষা করে না। কে জানে যে, কাহার অদ্য মৃত্যু উপ-স্থিত হইবে ? অতএব যৌবন কালেই ধর্মশীল হইবেক। কারণ জীবন নিশ্চয়ই অনিত্য। ধর্মামুষ্ঠানে ইহলোকে কীর্ত্তি প্রবালাকে স্থাহয়।

तसात् सत्यव्रताचारः सत्ययोगपराधणः।
सत्यकामः समोदान्तः सत्य नैवान्तकं जयेत्।
सत्यक्ते व सत्य च द्वयं देहे प्रतिष्ठितः।
सत्य रापद्यते मोहात् सत्य नापद्यतेऽस्तम्॥ २२१॥
शाः १०५। ६५५१।

অতএব সত্যত্রত আচরণ করিবেও সত্যযোগপরায়ণ হইবেক। সত্যকাম সমদশীও জিতেশির হইরা এক সত্য দারাই মৃত্যুকে জয় করিবেক। মৃত্যু ও অমৃত এ ছইই মানব-দেহে অবস্থিতি করিতেছে। মহুষ্য মোহ প্রযুক্ত মৃত্যুগ্রাসে প্রিত হয়, এবং সত্য দারা অমৃত লাভ করে। नास्ति विद्या समं चचुर्नास्ति सत्यसमं तपः। नास्ति रागसमं दुःखं नास्ति त्यागसमं सुखम्॥२२२॥ गा। १९५ । १५५०।

বিদ্যার সমান আর চকু নাই, সত্যের সমান আর তপস্যা নাই, আসক্তির সমান আর হুঃখ নাই, ও ত্যাগের সমান আর স্থুখ নাই।

सत्यं ब्रह्म तपः सत्यं सत्यं विस्ञते प्रजाः। सत्ये न धार्य्यते लोकः स्वर्गं सत्येन गच्छति॥२२३॥

शा १८० । इटह्या

সত্যাই ব্রহ্ম, সত্যাই তপস্যা, সত্যাই প্রাণিদিগকে স্থজন করে, সত্য ছারাই সকল লোক ধ্বত হইয়া থাকে এবং সত্য ছারাই মনুষ্য স্বর্গ লাভ করে।

तत ध्यानेन संक्षिष्टमेकायं धारयेकानः। पिण्डोक्तस्येन्द्रिययाम मासीनः काष्ठवन्मुनिः॥ यद्यं न विच्छ्रोत्रेण स्पर्यं लचा न वेद्येत्। रूपं न चचुषा विन्द्रािच्चित्वया न रसांस्तथा॥२२६॥

शि । १८५। ७१३३।

যোগী ব্যক্তি ইন্দ্রিদেগকে সংযত করিয়া কাঠের ন্যায় নিশ্চল হইয়া উপবিষ্ট হয়েন ও ধ্যানে নিমগ্ন হইয়া একাগ্র-ভাবে সেই পরমাস্থাতে মনঃ সমাধান করেন। তৎকালে তাঁহার কর্ণের দারা শব্দজ্ঞান, স্বকের দারা স্পর্শজ্ঞান, চক্ষ্ণ দারা দৃষ্টিজ্ঞান ও রসনা দারা রসবোধ থাকে না।

सत्यमेकाचरं ब्रह्म सत्यमेकाचरं तपः। सत्यमेकाचरीयज्ञः सत्यमेकाचरं युतम्॥२२५॥

शा । १८८ । ७२६४ ।

সত্যই এক অবিনশ্বর ব্রহ্ম, সত্যই এক অবিনশ্বর তপস্যা, সত্যই এক অবিনশ্বর যজ্ঞ, এবং সত্যই এক অবিনশ্বর শাস্ত্র।

न चचुषा पश्यित रूपमात्मनी
न चापि संस्थर्यज्ञेपैति किञ्चित्।
न चापि तै: साधयते तु कार्यः
ते तं न पर्यान्त स पश्यते तान्॥ २२६॥

1 3080 1 909 1 178

চক্ষ্: ছারা পরমান্থার রূপ দেখা যায় না এবং কোনরূপে তাঁহার স্পর্শিও অনুভব করা যায় না। ইন্দ্রিয়াদি ছারাও ভাঁহার কোন কার্য্য দিদ্ধ হয় না। মানবগণ তাঁহাকে দেখিতে পায় না; কিন্তু তিনি সম্পায় দর্শন করেন।

> यथाऽस्थासि प्रसन्ने तु रूप्रं पश्चिति चत्तुषा। तद्दत्प्रसन्ने न्द्रियलं द्वे यं ज्ञानेन पश्चित॥२२७॥

> > 1 9880 1 805 1 78

বেষন চক্ষ্ণ দারা নির্দ্ধল সলিলে আপনার প্রতিরূপ দেখিতে পাওয়া যায়, সেইরূপ ইন্দ্রিসকল সংফত হইলে জ্ঞানের দারা স্বীয় অস্তরে জ্ঞের পরমাত্মাকে দর্শন করা ধায়।

महिंसा सखनवनं सब्बंभूतेषु चार्ज्जवम् । चमाचै वाप्रमाद्य यस्त्रेते स सुखी भवेत्॥१२८०॥

MI 1 794 | 0075 |

অহিংসা, সত্যবাক্য, সর্বভূতে সমনৃষ্টি, ক্ষমা, অপ্রমাদ, এই সকল যাঁহাতে আছে, তিনি স্থাী হয়েন।

वाङ्मनीभ्यां घरोरेण श्रविः स्यादनहङ्कृतः । प्रयान्तो ज्ञानवान् भित्तुर्तिरपेचयरेत् सुखं॥२२८॥

शा । २१५ । ७७८५ ।

নিরহন্ধারী হইয়া কায়মনোবাক্যে শুদ্ধ থাকিবেক এবং প্রশাস্ত জ্ঞানী ও সর্ববিত্যাগী হইয়া নিরপেক্ষভাবে হৃথ সজ্ঞোন করিবেক।

नापध्यायेत्र स्पृष्टयेत् नावतं चिन्तयेदसत्। भवामीधप्रयक्षेन मनी ज्ञाने निवेशयेत् ॥२३०॥

शा । २१५ । ७८०१ ।

অস্বিষয়ের অমুধ্যান করিনেক না, অস্বিষয় স্পৃহা করিবেক না, আবদ্ধভাবে অস্থিমের চিন্তা করিবেক না, সর্বপ্রথাত্বে ব্রহ্মজ্ঞানে মনোনিবেশ করিবেক।

सत्यां वाचमहिंसाञ्च वरेदनपवादिनीम्। कास्यापितामपद्यामहर्यसामपैथुनाम्॥ २३१ ॥ वा। २१५। ०००१। অহিংস্ত্র, পরনিন্দা ও বিকল্পবর্জ্জিত, অপক্ষর, অনৃশংস, থলভাশূন্য সভ্য বাক্য বলিবেক।

> यमधिसितिः परमा न हर्षयेत् तथैव काले व्यसनं न मोहयेत्। सुखच दुःखच तथैव मध्यमं निषेवते यः स धुरंधरो नरः॥ २३२॥

> > शा । २१७ । घर४० ।

শুরুক্তর অভীষ্ট সিদ্ধিও যাঁহাকে হাই করে না, সময়ে আপদ উপস্থিত হইলেও সেইরূপ মৃশ্ধ করে না, স্থত্ঃ ধ মধ্যমাবস্থা সকলকেই যিনি সমভাবে সেবা করেন, তিনিই নর শ্রেষ্ঠ।

नैव क्रुइति न हे छिनीनृता भाषते गिरः । आक्रुष्टस्ताड़ितसैव मेत्रेण ध्याति नायुमं ॥२३३॥

शा। २३६। ८६८०।

ক্রোধ করিবেক না, কাহারও প্রতি দেবও করিবেক না, এবং মিথ্যা বাক্যও বলিবেক না। বন্ধু কর্তৃক আক্রুষ্ট ও ডাড়িত হইলেও তাঁহার অমঙ্গল চিন্তা করিবেক না।

सर्वभूतेषु चाकानं सर्वभृतानि चाक्यनि । बदा पथाति भूताका ब्रह्म सम्मद्यते तदा ॥२३४॥

भा । २३८ । य.०५४।

যখন মহুষ্য সমুদার প্রাণির মধ্যে ঈশ্বরকে এবং ঈশ্বরের মধ্যে সমুদার প্রাণিকে দর্শন করেন, তথন তিনি ব্রহ্মকে লাভ করেন।

न ह्ययश्चला दृश्यो न च सब्बैरपौन्द्रियै:। मनसा तु प्रदीपेन महानाता प्रकाशते॥ २३५ ॥ शाः २१८। ८०४८।

চক্ষারা বা অপরাপর ইন্দির দারা এই পরমান্তাকে দর্শন করা যায় না; কিন্তু মনোরূপ প্রদীপ দারা সেই মহান্ আত্মা প্রকাশিত হয়েন।

नाभिनन्देत मरणं नाभिनन्देत जीवनम्। भाजमेव प्रतोचेत निरेगं भृतको यथा॥ २३६॥

श्चा । २४५ । य्टर्ट ।

মরণও অভিনাষ করিবেক না, জীবিত থাকিতেও ইচ্ছা করিবেক না, কিন্তু আজ্ঞাবহ ভৃত্য যেরূপ প্রভূর আদেশের প্রতীকা করে, সেইরূপ মৃত্যুর প্রতীকা করিবেক।

खः काय्यं मदा कुवीत पूर्वाक्रे चापराक्रिकम् । न हि प्रतीचते मृत्युः कृतं वास्य न वा कृतम्॥२३०॥

शा । २७८ | ८८४० ।

কল্যকার কর্ম অদ্য করিবেক, অপরাক্তের কার্য্য পূর্বাক্তে করিবেক। কারণ করা হইয়াছে কি না করা হইয়াছে, মৃত্যু ইহার প্রতীক্ষা করে না।

म हिंस्यात् सर्व्वभूतानि मैत्रायणगतसरेत्। मेर्दं जीवितमासाद्य वैरं कुर्व्वात केनचित्॥२३८॥

1 १९३५ । २८९ । हि

কোন প্রাণিকে হিংসা করিবেক না, সকলের প্রতি নিত্র শ্বহার করিবেক। এই মানব দেহ ধারণ করিয়া কাহারও প্রতি বৈর আচরণ করিবেক না।

सुक्षे वा यदि वा दुःखे वक्त मानो विचचणः। यद्यिनोति गुभान्येव स तन्त्राची ह प्रस्तति ॥२३८॥

शा । २८५ । १०००६ ।

বে বিচক্ষণ ব্যক্তি সুখ ছাথের মধ্যে বর্ত্তমান থাকিরা খেবল মঙ্গলেরই অনুসরণ করেন, তিনিই ইছ সংসারে চরম ফল প্রাপ্ত হন।

धर्मे एव सदा नृषामिष्ठ राजन् प्रयस्थते। धर्मेहदा गुषानेव सेत्रको हि नरा भुवि॥ २४० ॥

मा। २८६। १०७८८।

হে রাজন্। ইহলোকে মানবদিগের ধর্মাই নিম্নত একমাত্র প্রশংসনীয়। স্থতরাং ভূতলে ধার্মিক লোকেরা কেবল সদগু-বেরই সেবা করিয়া থাকেন।

्विषये वर्त्तमानोऽिय न स पापेन युज्यते । अर्थ्यादायां धर्मसेतु निवडो नैव सीदति ॥२४१ ॥ या १००३ १०८१ १ সেই প্রকৃত সাধক বিষয়ের মধ্যে থাকিয়া পাপে লিপ্ত হয়েন না এবং নীতীর মধ্যে সীমা নিবদ্ধ সেতৃ হওয়াতে কদাপি হঃথিত হয়েন না।

न धर्मकालः पुरुषस्य निसिती
नचापि सत्युः पुरुषं प्रतीचिते।
सदा हि धर्मस्य क्रियैव योभना
यदा नरीसत्यु मुखेऽभिवत्ते ॥२४२॥

'शा । ३०० । १०८५२ ।

মৃত্যু মন্থাকে প্রতীক্ষা করে না; স্থতরাং তাহার ধর্ম সাধনের কোন নির্দিষ্ট কাল নাই। মন্থ্য যথন মৃত্যুমুখে বিত্তি করিতেছে, তথন ধর্মান্ত্র্যান সকল কালেই শোভা পায়।

वसन् विषयमध्येषि न वसत्येव बुहिमान्। संवसत्येव दुव्हिरसत्स विषयेखिष ॥२४३॥

मा । ३००। १०८८०।

বৃদ্ধিমান্ বাক্তি বিষয় মধ্যে বাদ করিয়াও তাহাতে বাদী করেন না; কিন্তু নির্কোধেরা বিষয় মধ্যে থাকিয়া কেবল অস্থিয়েতেই অবস্থান করে।

येनात्युक्तः प्राप्त रुचं प्रियं वा। योवा इतो न प्रतिस्नित धैर्यात्।

पापच नेच्छति तस्य इन्तुः सास्येष्ठ देवाः स्मृष्टयन्ति नित्यम् ॥ २८४ ॥

मा। २०१ | ११००८।

বিনি অতিমাত্র তিরক্কত হইলেও কক্ষবাক্য প্রয়োগ করেন না এবং অতিমাত্র প্রশংসিত হইলেও প্রিগ্রবাক্য বলেন না; বিনি আহত হইলেও ধৈর্য্যনিবন্ধন প্রতিঘাত করেন না এবং হস্তার অমঙ্গল হয়, এরপ ইক্ছা করেন না; তাঁহাকে এ সংসারে দেবতারাও নিয়ত স্পূহা করিয়া থাকেন।

प्रवेश्वात्मनि चात्मानं योगो तिष्ठति योऽचलः । पापं इन्ति प्रनीतानां पदमाप्नीति सोऽजरः॥२४५॥

1 80099 | 505| 1度

যিনি পরমান্ত্রার সহিত স্বীয় আত্মার সংযোগ পূর্বক অটল ভাবে যোগী হইয়া অবস্থিতি করেন, তিনি পাণিগণের পাপ নাশ করেন ও অমর হুইয়া ত্রন্ত্রপদ লাভ করেন।

नित्यं क्रोधात्तपो रचेत् त्रियं रचेत्र मत्सरात्। विद्यां मानावमानाभ्या माकानन्त् प्रमादतः॥२४६॥

मा । ३३१ । १२४२१ ।

ক্রোধ হইতে তপস্যাকে, মংসর হইতে সম্পদকে, মান অপমান হইতে ত্রন্ধজ্ঞানকে, ও প্রমাদ হইতে আত্মাকে নিজ্য রক্ষা করিবেক।

कर्मा खेवाधिकारस्ते माफतेषु करायनः। मा कर्माफलदेतु भूमी ते सङ्गीस्वकर्माणि ॥२४७॥

गीता पर्वाषा । २ | ४० ।

তোমার কেবল কর্ত্তব্য কর্ম্ম সম্পাদন করিবার অধিকার আছে, কিন্তু ফল প্রত্যাশা করিবার কিছুমাত্র অধিকার নাই। কর্ম্মের ফল কামনার যেন তোমার প্রবৃত্তি না হয়, এবং কর্ম্ম না করিতেও যেন তোমার আসক্তি না হয়।

योगस्यः कुरु कर्याणि सङ्गंत्यक्वा धनस्त्रयः।। सिद्यसिद्योः समीभूता समलं योग उच्चते॥२४८॥

गीता। २ । ४८ ।

হে ধনঞ্জর ! যোগী ব্যক্তি অনাসক্ত হইরা কর্ম করেন । কলাফলে সমান হইরা যে মনের সাম্যাবস্থা হয় তাহাকে যোগ বলা যার।

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्षः! मनोगतान् भाकान्ये वाकाना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥२४८ ॥

मीता। २ । ४८ ।

হে পার্থ! যথন মনুষ্য মনের সমুদায় কামনা পরিত্যাগ করিয়া পরমাত্মাতে স্বরং পরিতৃষ্ট হয়েন, তথন তাঁহাকে সমা-হিত বলা যায়। दु:खेष्वतु दिग्नमनाः सुखेषु विगतस्मृष्टः । चौतरागभयक्रोषः स्थितधी मु निक्चते ॥ २५०॥

गीता। २। ५६।

ছ:থেতে যাহার চিত্ত উদ্বিগ্ন হর না, স্থথেতে বে নিস্পৃহ থাকে ও যাহার আদেক্তি ভর ক্রে:ধ বিদ্রিও হইরাছে, এক্লপ সমাহিত ব্যক্তিকে মুনি বঙ্গা যার।

यदा संहरते चायं कूमोंऽङ्गानीव सर्वयः। इन्द्रियाणीन्द्रयार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥२५१॥ भीता।२। १८।

কৃষ্ম যেরূপ স্বীয় অঙ্গ প্রাত্যঙ্গ সম্যক্ প্রকারে আকর্ষণ করে, সেইরূপ যোগী ব্যক্তি যথন বিষয় হইতে ইন্দ্রিয়দিগকে প্রত্যাহার করেন, তথন তাঁহার প্রক্রা প্রতিষ্ঠিত হয়।

यततो ह्यपि कौन्ते य ! पुरुषस्य विपिष्ठतः । इन्द्रियाणि प्रमाधोनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥२५२॥

गीता। १। ६०।

হে কোতের ! প্রবল ই ক্রিয়গণ মোকে যত্নশীল বিবেকী পুরুষের মনও বল পূর্বক হরণ করে।

तानि सर्व्वाणि संयम्य युक्त त्रासीत मत्परः। वये यस्त्रेन्द्रियाणि हितस्य प्रका मृतिष्ठिता॥२५३॥

बीता। २। ६१ ¦्

আত্মনিষ্ঠ যোগী ব্যক্তি ইন্দ্রিদাগকে সংবত করিয়া সমা-হিত হরেন। যাঁহার ইন্দ্রিয় বশীভূত হইয়াছে তাঁহারি প্রক্রা প্রতিষ্ঠিত।

ध्वायती विषयान् पुंसः सङ्ग्लेषूपजायते । सङ्गात् स'जायते कामः कामात् क्रीधीऽभिजायते ॥ क्रीधात् भवति सन्धीत्तः सन्धीत्रात् स्मृतिविश्वमः । स्मृतिश्वं यात् बुढिनायीबुढिनायात् प्रणस्थति॥२५४॥

गीता। २ | ६२ | ६३ |

ইন্দ্রিরের বিষয় চিন্তা করিলে আসক্তি জন্ম। আসক্তি হইতে বাসনা, বাসনা হইতে ক্রোধ, ক্রোধ হইন্ডে মোহ, মোহ হইতে স্মৃতিবিভ্রম, স্ম তিবিনাশে বৃদ্ধিনাশ, এবং বৃদ্ধিনাশে মনুষ্য বিনষ্ট হয়।

रागद्वेषविमुक्तेसु विषयानिन्द्रियेश्वरन् । भाक्षवण्ये विधेयाका प्रसादमधिगच्छति ॥ २५५॥

गीता। २। इध

রাগ থেষ বিরহিত সংযত ইন্দ্রির দ্বারা বিষয়াদি ভোগ করিলে আত্মা শাস্তি লাভ করে।

नास्ति बुहिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना । न चाभावयतः ग्रान्तिरगान्तस्य कुतः सुखं॥२५६॥ भोता । १ । ५६ । বিক্ষিপ্ত চিত্ত লোকের বৃদ্ধি দ্বির হয় না, চঞ্চলমতি ছইলে, শাস্তি লাভ হয় না, অশাস্ত জনের স্থা কোথায় ?

इन्द्रियाणां हि चरतां यक्षनीऽनु विधीयते। तदस्य हरति प्रज्ञां वायुणीविमवाश्वसि ॥ २५०६

মন যথন স্বেচ্ছাচারী ইক্রিয়গণের সহিত সংযুক্ত হয়, প্রবল বায়ু ছারা অর্ণবিপোত যেমন জলে নিমগ্ন হয়, তজ্ঞপ তথন মনুষ্যের ধর্মবৃদ্ধি বিনষ্ট হয় i

तसार्यस्य महावाही ! निग्रहीतानि सर्वयः । इन्द्रियानीन्द्रियाचे भ्यातस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥२५८॥

गीता। २। ६८।

হে মহাবাহো। যে ব্যক্তি বিষয় হইতে ইক্সিয়দিগকে সর্ব্ব প্রকারে নিগ্রহ করিয়াছেন তাঁহারি ধর্মবৃদ্ধি সমাহিত হইয়াছে।

या निधा सब्बेभूतानां तखां जागितं संयमी । यखां जागितं भूतानिसा निगा पखतो मुनेः।२५८।

गीता । २। ६८।

সম্দার প্রাণির পক্ষে বাহা রজনী, জিতেন্ত্রির ব্যক্তি ভাহাতে জাগ্রৎ থাকেন; এবং অপর প্রাণিগণ বাহাতে জাগ্রৎ থাকে, তত্ত্বদর্শী মুনির নিকট তাহা তামসী নিশা। विष्य कामान्यः सर्व्यान् पुमांबरति निस्पृष्टः। निर्देशो निरष्टं कारःस शान्तिमधिगच्छति॥२६०॥

गीता। २। ७१।

বে ব্যক্তি সমূদয় বিষয় পরিত্যাগ করিয়া নিস্পৃহ নির্দ্ধম
ও নিরহন্ধারী হয়, সে চির শান্তি লাভ করে।

क्यं न्द्रियाणि संयग्य य त्रास्ते मनसा स्नरन् इन्द्रियाणीन् विमूढ़ाला मिथ्याचारः स उच्चते॥२६१॥

ষে ব্যক্তি বাহিরে কর্ম পরিত্যাগ করিয়া সন্ন্যাসী হয়, অথচ অস্তরে কেবল বিষয় চিস্তা করে, সেই নির্বোধ মনুষ্যকে কপটাচারী বলা যায়।

तस्त्राद्यकः सततं कार्यं कम्म समाचर।
श्रमकोद्याचरन् कम्म परमाद्रोति पूर्वषः॥ २६२॥
गीता । ३ । १८।

অতএব অনাসক্ত হইয়া সর্বাদা কর্ত্তব্য কর্মা সম্পাদন কর। আসক্তি বিহীন হইয়া কর্মান্ত্রীন করিলে পরব্রহ্মকে লাভ করা যায়।

सत्ताः नमीखाविद्यांसी यथा कुर्वान्त भारत!।
कुर्वादिद्यांस्तथासत्तदिनीषु ली नसं यहम्॥ २६३॥
नीता । ११९५।

यृह लारकतः रामन जामक श्रेता कार्या करत, खामी छ चक्रम लाकिनकार्थ जनामक हिस्स कर्याष्ट्रधान करतन। प्रक्रते: क्रियमाणानि गुणैः कर्याणि सर्वेगः। चहक्रारविमूढ़ाका कर्ताहमिति मन्यते॥ २६४ ॥ गीता। १।२०।

बरहाती मृहाया है क्रियंशरणंत दाता हानि है हैता नर्स-विकारत नम्हायं कार्या कित्रियां आभि कर्छ। हैदा मरन करत । यस्य सर्वे समारसाः कामसंक स्वविज्ञिताः । श्वानान्ति दम्धक साएं तमाहः पण्डितं वृश्वा॥२६५॥
गीता । ४। ११८।

ৰীহার সমুনায় কার্য্য নিক্ষাম, পণ্ডিতেরা সেই তত্তজানী
ভঙ্চিত্ত ব্যক্তিকে পণ্ডিত ব্যেন।

त्वज्ञा कर्यम्मलासङ्गं नित्यह्यप्तीनिरात्रयः।
कर्यम्प्यभिप्रहत्तोऽपि नैव किञ्चित् करोति सः॥२६६॥
गीता । ॥ । १०

যিনি কর্মফল ও আসক্তি পরিত্যাগ করিয়া নিত্যভৃপ্ত ও নিরাশ্রয় হরেন, তিনি কার্য্যে প্রবৃত্ত থাকিলেও কার্য্য করেন না।

सर्व्यापोन्द्रयक्षभाषि प्राणकसीषि चापरे। भाक्षसंयमयोगानी जुद्धति ज्ञानदीपिते ॥२६७॥ नेता। ४। २०।

নাধকগণ শারীরিক মানসিক দকল প্রকার কার্যা ক্লান মারা উত্তর স্বাস্থ্যম ও যোগাগ্নিতে অর্পণ করেন। न हि ज्ञानेन सहयं पवित्रमिष्ठ विद्यते । तत् खर्यं योगसंसिष्ठः कालेनात्मनि विन्द्ति॥२६८॥ गीता । ४ । ४८ ।

बंक क्लात्ति नम् भिष्ठि भिर्मार्थ आत किह्र् नाहे। योगी वाकि श्वाः कानमहकादि आञ्चारक म्प्रेण नां कदिन। श्वदावान् सभते ज्ञानं तत्परः संयतिन्द्रयः। ज्ञानं सन्धा परां ग्रान्तिमिचिरेणाधिगच्छिति॥२६८॥ गीता। ॥। ॥।

শ্রদ্ধাবান্ ও সংযতে ক্রিয়া ব্যক্তি জ্ঞান লাভ করিয়া শীষ্ষ্ পরম শাস্তি প্রাপ্ত হয়েন।

योगयुक्ती विश्वहात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः । सन्व भूतात्मभूतात्मा कुन्व विपि न लिप्यते ॥२७०॥ गौता । ५। ८।

যোগী শুদ্ধচিত্ত বিজিতাত্মা জিতেক্সিয় ব্যক্তি কার্য্য করি-যাও তাহাতে আসক্ত হয়েন না।

ब्रह्माखाधाय कर्काणि सङ्गंत्यक्का करोति यः। लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिचाश्वसा॥ २७१॥ गीता। ४।१०।

যে ব্যক্তি আসক্তি পরিত্যাগ পূর্বক ব্রন্ধেতে আত্মসমপ্র করিয়া কর্ম করে, জল যেমন পদ্মপত্রকে স্পর্শ করে না সে তজ্ঞ পাপে লিপ্ত হয় না।

कायेन मनसा बुद्या केवनैरिन्द्रियैरिप । योगिन: कमा कुर्व्वन्ति सङ्ग'त्यज्ञामग्रदये ॥२७२॥

गीता । ५ । ११ ।

যোগির। কেবল আত্মশুদ্ধির নিমিত্তই আসক্তি পরিত্যাগ করিয়া শরীর মন বৃদ্ধি ও ইন্দ্রিয়াদির দারা সমুদায় ক্রতব্য সমাধান করেন।

युक्तः कर्माफर्ज त्यक्का यान्तिमाप्रीति नैष्ठिकीं। त्रयुक्तः कामकारेण फले सक्तोनिवध्यते ॥२७३॥

गीता। प्रा १२।

যোগী ব্যক্তি কামনা পরিত্যাপ করিয়া নিত্য শাস্তি লাভ করেন, আর ইন্দ্রিয়পরতন্ত্র ব্যক্তি ফলকামনায় কার্য্যে আবদ্ধ হয়।

न प्रदृष्टित् प्रियं प्राप्य नोहिजेत् प्राप्य चाप्रियम्।
स्थिरवृहिरसं मृद्गे ब्रह्मवित् ब्रह्मणि स्थितः॥२७४॥

স্থিরচিত্ত জানী ব্রহ্মক্ত ব্যক্তি প্রিয় বস্তুলাত করিয়াও আনন্দিত হয়েন না ও অপ্রিয় বস্তু পাইয়াও উদ্বিগ্ন হয়েন না; তিনি নিত্য ব্রহ্মেতেই অবস্থিতি করেন।

उद्वरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्। प्रात्मेव द्यात्मनो वन्धुरात्मेव रिपुरात्मनः॥२७५॥
भीता। ६।१६० বিবেক বৃদ্ধি সহকারে আপনাকে সংসার হইতে উদ্ধার করিবেক, তাহাতে নিমগ্ন হইবেক না; কারণ মহুষ্য আপনি আপনার বন্ধু আপনি আপনার শক্ত।

योगी युद्धीत सततमाकान' रहसि स्थितः।
एकाकी यतिच्ताका निराधीरपरिग्रहः॥२७६॥
गीता। ६।१६।

যোগী ব্যক্তি সংযতচিত্ত নিরাকাজ্ঞ ও নির্দোভী হইয়া নির্দ্ধনে একাকী অবস্থিতি করত সর্বাদা পরমান্ত্রার খ্যান করেন।

तत्वे कार्यं मनः कला यतित्ते न्द्रियक्रियः। उपविद्यासने युष्त्रात् योगमात्मविश्वदये॥२००॥

সংযতেক্সিয় হইয়া পবিত্র স্থানে চিত্ত একাগ্র করিয়া আসনে উপবেশন করত আত্ম শুদ্ধির নিমিত্ত যোগ অভ্যাস করিবেক।

यथा दीपो निवातस्थानिङ्गते सोपमा स्नृता । योगिनो यतचित्तस्य युद्धतो यागमात्मनः ॥२७८॥ गौता । ६ । स्मर

নির্বাতদীপ যেমন স্থির ভাব অবলম্বন করে, তজ্ঞপ সংবতচিত্ত ও পরমান্মাধ্যানে নিমগ্ন যোগী ব্যক্তির **আন্মা** কিম্পান্দভাবে অবস্থিতি করে। शनैः शनै क्परमेद्दु द्वा भृतिग्रहीतया । श्रात्मसंस्थं मनः कत्वा न किञ्चिद्पि चिन्तयेत्॥२७८॥ गीता । ६ । २८।

ধারণা শক্তিদারা চিত্তকে পরমাত্মাতে সংস্থাপন করিয়া অল্লে অল্লে তাঁহার আনন্দে নিমগ্ন হইবেক, আর কোন বিষয় চিন্তা করিবেক না।

युक्तवेवं सदात्मानं योगी विगतकस्माय: 1 सुखेन व्रद्धासंस्पर्यमत्यन्तं सुख्यम् ते॥ २८०॥ गीता । ६ । २८ ।

যোগী ব্যক্তি পরমাত্মার সহিত স্বীয় আত্মার সংযোগ পূর্ব্বক নিষ্পাপ হইয়া স্থাথ ত্রন্ধের স্পর্শস্থ সম্ভোগ করেন।

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्व्वभूतानि चात्मनि । इ चते योगयुक्तात्मा सर्व्वत समदर्भनः ॥ २८१ ॥ गीता । ८ । २२ ।

रगाजी वाक्ति नर्सव नममर्गी इहेश नर्सकृत्क প्रतमाञ्चारक वदः भ्रतमाञ्चात्क नम्मात्र व्याभित्क नन्मम्न करत्न। पुरुषः स परः पार्षः! भक्ताा लभ्यस्वनन्यया। यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सब्बे मिदं ततः॥२८२॥ गीता। १३। १३।

ষঁ াহার মধ্যে সমূদায় প্রাণী বাস করিতেছে এবং যাঁহার ঘারা সকল জগৎ ব্যাপ্ত হইরা রহিয়াছে সেই সর্বশ্রেষ্ঠ পুরুষ একাস্ত ভক্তি ঘারাই লভনীয়। "सव्यतः पाणिपादम्तत् सर्व्यतोऽचिशिरोमुखं। सर्व्यतः युतिमकोने सर्व्यमाद्यस्य तिष्ठति"॥ २८३॥ गीता १३। २०।

দর্বক যাঁহার হস্ত পদ, দর্বক যাঁহার চক্ষুঃ, দর্বক যাঁহার শিরো মুথ ও দর্বক যাঁহার কর্ণ; তিনি এই দংদারে দমুদায় আচ্ছাদন করিয়া অবস্থিতি করিতেছেন।

सम सब्बे पु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेखरं। विनगात्सविनग्यन्तं यः पश्चति स पण्यति ॥२८४॥ गीता । १६ । २१ ।

যে ব্যক্তি পরমেশ্বরকে সর্বভূতে সমভাবে অবস্থিত ও অনিত্য পদার্থের মধ্যে নিত্য বলিয়া দর্শন করে সে তাঁহাকে দেখিতে পায়।

तिविधं नरकस्ये दं द्वारं नामनमात्मनः।
कामःक्रोधस्तया लोभस्तसादितस्यं त्यजित्॥२८५॥
गीता।१७।।१६।

় কাম, ক্রোধ, লোভ এই তিনটি নরকের আত্মবিনাশক কাম স্বরূপ ; অভএব এ তিনকেই পরিত্যাগ করিবেক।

मनःप्रसादः सौम्यलं मौनमामिनियनः।
भावसंग्रहि रिखेतत्तपोमानसमुचाते॥ २८६॥
गीता। ४४ २०

মনের প্রদন্ধতা, অক্রুরতা, মনন আত্মনিগ্রহ ও ভাবতদ্ধি এই সকল মান্সিক তপ্দ্যার লক্ষণ জানিবে।

खमत्र परमं विदित्यं खमस्य विखस्य परं निधानं॥ खमन्ययः गाखतधर्भगोप्ता सनातनस्वं पुरुष्टेमतीमे॥ २८७॥

গীনা। ২২। ২॥।
ভূমি অবিনশ্বর শ্রেষ্ঠ ও জ্ঞের, তূমিই এই বিশ্বের একমাত্র কারণ, ভূমি অব্যয় ও নিত্য ধর্মের রক্ষক; আমি তোমাকে

মাত্র কারণ, ড়াম অবায় ওানতা ধম্মের রক্ষক; আমি। সনাতন পুরুষ বলিয়া বিখাস করি।

चनुक्रोष्ठोडि साधूनां महद्भुषां स्य लचणम्।
चनुक्रोख साधूनां सदा प्रीतिं प्रयच्छिति ॥॥ २८८॥
चनुक्रास नपर्वास । ५। ३८५।

সাধুগণের দয়াই ধর্মের শ্রেষ্ঠ লক্ষণ, সাধুদিগের দয়াই
সর্বাদা প্রেম দান করিয়া থাকে।

याह्यं वपते वीजं चेत्रमासाय वर्षकः।
स्कृते दुष्ज्ञते वापि ताह्यं हस्यते फलं॥ २८८॥
प्रशाहाराः

ক্কবক ৰাদৃশ বীজ বপন করে তদসুক্রপ ফল লাভ করিয়া শাকে। অভএব সংকর্মে স্ফল গৃন্ধর্মে মন্ফল দৃষ্ট হইরা খাকে।

स्भेन कर्षाणा सीख्यं दुःखं पापेन कर्षाणा। सतं पात्रति सन्द्रित नाक्षतं भुज्यते कृचित्॥२८०॥ पत्रणा । ६ । १५६। ভজামুষ্ঠানে ক্রথ এবং পাপার্ট্ঠানে হংগ হয়। **বাহা** করা হয় সর্বাত তাহারই ফল ফলে, বাহা করা হয় নাই তাহা কথন ফলে ন।।

.प्राणातिपातः स्तैन्यञ्च परदार मधापि वा । स्रीणि पापाणि कायेन सन्व तः परिवक्त येत्॥२८९॥ यगुगा । १२ । ॥८४ ।

প্রাণনাশ, চৌর্য্য, ও পরদার শরীর দারা এই ত্রিবিধ শাপ নর্ব্বপ্রকারে পরিত্যাগ করিবেক।

भसत् प्रलापं पार्वथं पेश्चमतृतन्तता । चलारि वाचा राजिन्द्र! न जल्बे सानु चिन्तयेत्॥२८२॥ मनुशा । १३ । ५३॥।

হে রাজেক্স। অসদালাপ, কঠোরতা, উগ্রভাব ও মিথ্যা ৰাক্য ঘারা এই চতুর্ব্বিধ পাপের আলাপও করিবে না চিস্তাও করিবে না।

दानेन तपसा चैव सत्धेन च युधिष्ठिर!। वे धर्ममनुवर्त्तन्ते ते नराः खुर्मग्रामिनः॥२८३॥ षत्रमा । २३। १६५०।

হে বৃথিষ্টির ! যাঁহারা দান, তপস্যা ও সভ্য স্ক্কারে
ধর্মচিরণ করেন, তাঁহারা স্বর্গগানী হয়েন।

चुमावन्तय धीराय धन्म कार्येषु चीश्चिताः।
मङ्गलाचारसम्पनाः पुरुषाः खर्गगामिनः॥२८४ ॥
भत्रा। ३३। १६६०।

যাঁহার। ক্ষমাশাল, ধীর, ধর্মকার্য্যে সমুরত, সদাচার-সুস্পার তাঁহারা স্বর্গামী হয়েন।

सर्व्य हिंसानिहत्ताय नराः सर्व्य सहाय ये। सर्व्य स्थाययभूताय ते नराः स्वर्गगामिनः॥२८५॥

া যাঁহারা সমুদার হিংদা হইতে নিবৃত্ত, দকল দহ্য করিতে সমর্থ, ও দকলের আশ্রয় তাঁহারা স্বর্গগামী হয়েন।

मातरं पितरचैव गुत्रू वन्ति जितेन्द्रियाः । भातृणाच सस्ने हा सेनराः स्वर्गामिनः ॥२८६॥ भन्मा । २३ । १६९५ ।

যাঁহারা জিতেন্দ্রির হইরা মাতা পিতার সেবা ও ওঞ্যা ক্লবেন, ভাতৃগণকে ক্লেহ করেন, তাঁহারা স্বর্গগামী হরেন।

श्राकास वलवन्तस योवनस्थास भारत !।
ये वै जितन्द्रिया धीरा स्ते नराः स्वर्गगामिनः॥२८०॥
सत्त्रमा २३ । १६६६ ।

ষাঁহারা ধনী, বলবান্ও যুবা হইয়াও জিতে ক্রিয় ও ধীর হরেন তাঁহারা স্বর্গগামী হয়েন।

श्रपराहेषु सस्रोहा सद्वी सदुवत्सलाः।

त्राराधनसुखाञ्चापि पुरुषाः खर्मगामिनः ॥२८८॥ शत्रमा १२। १६६०

যাঁহার। অপরাধীর প্রতি সদর কোমল ও মৃত্বৎসল এবং বাঁহারা অক্ষের আরাধনার স্থী হয়েন তাঁহারা স্বর্গগামী হয়েন। सत्यमासुः परोधमा स्तस्मात् सत्यं न सर्ह् घयेत्। मुनयः सत्यनिरताः मुनयः सत्यविक्रमाः ॥२८८॥ भत्रमाः ३६ । ३६५४ ।

• সতাই শ্রেষ্ঠ ধর্ম অতএব সত্যকে উল্লন্ডন করিবেক না, মুনিগণ সত্যামুরাগী, সতাই তাঁহাদের বল বীর্যা।

स्तां ग्रारेसुत्सृज्य काष्ठलीष्ट्रयमं जनाः।
गच्च त्य सुत्रलीके वै क एनमनुगच्चिति ॥ २००॥

মানবর্গণ কার্চলোষ্ট্রের তুল্য মৃত শরীর পরিত্যাগ করিয়া পরলোকে গমন করে; কে আর তাহার অমুগমন করিতে পারে ?

स्त्रमांसं परमांसेन यो वर्षेयितुमिच्छति।

नास्ति चुद्रतरस्तस्मात् सुतृशंसतरी नरः ॥३०१ ॥ भनुशा । ११६ । ५५८० ।

যে পরমাংদ ভক্ষণ করিয়া আপন দেহের পুষ্টিদাধন করিতে চায়, তাহার অপেক্ষা ক্ষুদ্রতর ও নৃশংদ ব্যক্তি আর কুত্রাপি নাই।

न हि प्राणात् प्रियतरं लोके किञ्चन विद्यते । तस्माइयां नरः कुर्योद्यथात्मनि तथा परे ॥ ३०२ ॥ पत्रमा ११६ । ५६८१ ।

ইহলোকে প্রাণ হইতে প্রিয়তর পদার্থ আর কিছুই নাই, অতএব আপনার ন্যায় ইতর প্রাণির প্রতি মহুষ্যের দয়া কর। কর্তব্য। यत् सर्वेष्विष्ठ भूतेषु द्या कौरवनन्दन !।
न भय' विद्यते जातु नरस्यो ह द्यावतः ॥३०३॥
भत्रमा ।१११ । ५६८८ ।

হে কৌরবনন্দন যুধি ছির! এই পৃথিবীতে যাহার সমুদার প্রাণির প্রতি দয়া আছে, সেই দয়াবান্ ব্যক্তির কদাচ ভয় হয় না।

त्रभयं सर्वभृतिभ्यो यो ददाति द्यापरः । प्रभयं सर्वे भूतानि ददतीत्यनुग्रत्रूम ॥३०४॥

चनुशा । ११६ । ५००२ ।

বে দয়ালু ব্যক্তি তাবং প্রাণিকে অভয় দান করে ভনিয়াছি প্রাণিপৃঞ্জও তাঁহাকে প্রত্যুতঃ অভয় দান করিয়া থাকে।

प्राणदानात् परं दान' न भूत' न भविष्यति । न ह्यात्मनः प्रियतरं किञ्चिदस्ती ह निश्चितम्॥३०५॥ पत्रमा । ११६ ५००५॥

প্রাণ দান হইতে আর শ্রেষ্ঠ দান হয় নাই ও হইবে না। অতএব ইহা অপেক্ষা আর পৃথিবীতে নিশ্চয় কিছুই প্রিয়তর

नार ।

त्रिक्षा परमोधक्षे स्तवाऽक्तिंसा परोदमः। त्रिक्षा परमं दानमक्तिंसा परमं तपः। ॥३०६॥ श्रहिंसा परमी यज्ञस्त्रहिंसा परमं बलम्। श्रहिंसा परमं मित्रमिहंसा परमं सुखम्। श्रहिंसा परमं सत्यमिहंसा परमं श्रुतम् ॥२००॥ श्रुणा।११६।५०१०।१८।

অহিংসাই পরম ধর্ম, অহিংসাই একমাত্র ইক্রিরদমন, অহিংসাই শ্রেষ্ঠ দান ও অহিংসা উৎকৃষ্ঠ তপস্যা, অহিংসাই পরম যক্ত ও অহিংসাই সর্বোচ্চ বল, অহিংসাই পরম বন্ধু ও অহিংসাই পরম স্থা, অহিংসাই পরম সত্য ও অহিংসাই পরম শাস্ত্র।

पिश्वनां ये न भाषन्ते मित्रभेदकरों गिरं। चटतं मैतन्तु भाषन्ते ते नराः खर्गगामिनः ॥३०८॥ भत्रमा। १४४। ६६४६।

যাঁহার। কঠোর এবং বন্ধু বিচ্ছেদ কর বাক্য না বলেন, কিন্তু বন্ধু তাজনক সত্য বাক্য বলেন তাঁহার। স্বর্গ গামী হয়েন।

श्रवुं मित्रञ्च चे नित्यं तुलेरन मनसा गिरा। भजन्ति,मैत्रा सङ्गम्य ते नराः खर्गगामिनः॥३०८॥ श्रुशा १८४। ६६५७।

যে সকল ব্যক্তি প্রীতি সহকারে মিলিত হইয়া নিত্য বাক্য ও মনে সমভাবে শত্রু ও মিত্রের সেবা করে, তাহারা স্বীর্গামী হয়।

(२७) प्रत्याः स्वश्रुव्वगुरयोः पादौ तोषयन्ति गुणान्विता। माता पिट्टपरा नित्यं या नारी सा तपीधना॥३१०॥ चनुर्या । १४६। ६७६५ ।

যে গুণসম্পান্না নারী শ্বশ্র ও শ্বগুরের সেবা করেন ও মাতা পিতাকে নিত্য ভক্তি করেন, তিনিই তপস্যাচরণ করেন।

त्रतं चरति या नित्यं दुसरं लघु सत्त्वरा। पतिचित्ता पतिच्चिता सा पतिव्रतभागिनी॥ ३११॥ अनुशा। १४६। ६०६०।

যে নারী পতির প্রতি অমুরক্তা ও মঙ্গলাকাজ্জিণী হইয়া আত্মাকে সংযত করত নিত্য হৃশ্চর ব্রত আচরণ করেন,তিনিই ব্রত ভাগিনী হয়েন।

पुर्वातत्तप्रवेव खर्गञ्चीव सनातनं । या नारी भन्त परमा भनेत् भन्ते वता सती ॥ ३१२॥ **भनु**शा। १४६ ६०६८ ।

যে সতী স্ত্রী স্বামীর প্রতি ভক্তি করেন এবং স্বামীর ব্রতই যাঁচার একমাত্র বত, তাঁহার সেই ভক্তিও বতই তাঁহার পক্ষে তপদ্যা, পুণ্য ও স্বর্গ।

अनन्य चित्ता सुसुखी सा नारी धर्माचारिणी। परवाष्ट्रपि नाता या दृष्टा क्राह्वेन चच्घा ॥३१३॥ चनुश्चा । १४६ | ६०८५ |

যে অনন্যমনা নারী স্বামী ক্রুদ্ধ চক্ষুতে দেখিলেও তাঁহাকে কঠোর কথা বলেন না, তিনিই ধর্মাচরণ করেন।

भर्त्तृपूज्या वरारोहा सा भवेदसँ वारिणी। दरिद्रं व्याधितं दीनमध्वना परिकर्षितं॥ ३१४॥ भतुमा। १६४।५०००।

ংযে নারী স্বামির শ্রদ্ধাভাজন এবং দরিদ্র, রোগী ও দীন-গণকে স্বহস্তে দেবা করেন, তিনিই ধর্মাচরণ করেন।

पतित्रता पतिप्राणा सा नारी धर्मभागिनी। ग्रुश्रूषां परिचर्याञ्च करोत्यविमनाः सदा ॥३१५॥ चनुष्या । १४६ । ६०८८।

যে নারী পতিব্রতা পতিপ্রাণা এবং সর্ব্বদা সম্ভইচিত্তে পতির সেবা ও শুশুষায় তৎপর, সেই নারীই ধর্মভাগিনী হয়েন।

सुप्रीताच विनीता च सा नारी धर्म भागिनी। विभन्ते ग्रन्नप्रदानेन कुटुस्बद्धे व नित्यदा ॥ २१६॥ भनुषा।१४६। ६०८०।

যে নারী অতিশয় স্নেহ্বতী ও বিনীত এবং নিত্য অন্নদান করিয়া কুটু ম্বদিগকে প্রতিপালন করেন, সেই নারীই ধর্মভাগিনী হয়েন।

या साध्वी नियताचारा सा भवेडमँ चारिणी। श्रुत्वा दम्पतिधर्मं वे सन्दर्धम कर्त ग्रुभम् ॥३१७॥ भनुषा। १४६। ६०८२।

যে সাধনী স্ত্রী নদাচারা হইয়া দম্পতি ধর্ম শ্রবণ পূর্বক উত্তমুক্তপ তদ্ধর্ম সাধন করিয়াছেন, তিনিই ধর্মচারিণী হয়েন।

ग्रु मूर्णा परिचर्याच देवतुल्यं प्रकुर्वतौ । वाक्याभावेन सुमनाः सुत्रता सुखदर्यना ॥ ३१८॥

भनुशा । १४६ । ६०८४ ।

সদাচারা প্রিয়দর্শনা নারী সম্ভষ্টচিত্তে স্বামির অধীন হইয়া উহার সেবা শুশুবার নিযুক্তা থাকেন।

ज्ञानपूर्वे कतं कर्षं छाद्यको स्नसाधवः। न मां मनुखाः पर्यन्ति न मां पर्यन्ति देवताः॥३१८॥

षतुशा । १६२ । ७५८८ ।

অসাধু লোকেরা জ্ঞাতসারে পাপাচরণ করিয়া গোপন করে, এবং মনে করে বে মহুষ্যেরা আমাকে দেখিতেছে না, দেবতারাও দেখিতেছেন না।

प्राथिकत्ति पापं तथा सद्यः प्रणाखित । तस्मात् पापं न गूरेत गूरमानं विवर्षते ॥ ३२०॥

षतुमा । १६२ | ७५८८ ।

সেই রূপ প্রায়শ্চিত্ত করিলে পাপ সদ্যই বিনষ্ট হয়।
অতএব পাপ গোপন করিবেক না, কারণ পাপ গোপন
করিলে উহা দিন দিন রৃদ্ধি পাইতে থাকে।

तमेव चार्चयित्रत्यं भक्ता पुरुषमव्ययम् । ध्यायन् स्तुवन्नमस्यं य यजमानस्तमेव च । स्रोकाध्यसं स्तुविन्नत्यं सर्व्यदुःस्वातिगोभवेत्॥३२१॥ भत्रमा । २४८ । ६८४० । সেই অবিনাশী নিত্য লোকাধিপতি প্রমেশ্বরকে ছক্তি সহকারে নিত্য অর্চনা ধ্যান তব নমস্বার ও সেবা ক্রিয়া মনুষ্য সকল হুঃথ হুইতে নিষ্কৃতি লাভ করেন।

संयत: सततं युक्त भाष्मवान् विजितेन्द्रियः ।
तथा च चात्मनात्मानं सप्रयुक्तः प्रप्रस्रति ॥ ३२२ ॥
भाषनीधिक पर्वीच । १८ । ॥१ ।

ব্ৰহ্মক্ত জিতেক্ৰিয় ব্যক্তি সৰ্বাদা সংযত থাকিয়া যোগী হয়েন, এবং তিনি সমাহিত হইয়া আত্মাতে পরমাত্মাকে দর্শন করেন।

जीवितं मरणञ्चोभे सुखदुःखे तथैव च। लाभालाभे प्रियद्देश्ये यः समः स च मुच्यते॥३२३॥

শাস্ব। १८। ॥॥३। যিনি জীবন মরণে, স্থুপ চঃথে, লাভালাভে, প্রিয় অপ্রিয়

বিষয়ে সমান থাকেন, তিনিই মুক্ত হয়েন।

न चन्नुषा न मनसा न वाचा दृष्येत् कृचित्। न प्रत्यचं परोच्चं वा किञ्चिद्दृष्टं समाचरेत्॥३२४॥ षाष । १४६। १३०१।

চক্ষ্ণ দ্বারা মনের দ্বারা ও বাক্য দ্বারা কথন দ্বিত কার্য্য ক্রিবেক্ন না এবং প্রত্যক্ষে বা পরোক্ষে কোনরূপ অসদাচরণ ক্রা বিধেয় নহে।

निरायी निर्णुणः शान्तो निरायङ्गो निरात्रयः। श्रामसङ्गी च तत्त्वज्ञो मुच्यते ना्वसंशयः ॥३२५॥

चाम । ४६। १२०३।

নিস্পৃহ, নিগুণ, শাস্ত, নির্ভয়চিত্ত, নিরাশ্রয় ও ঈশ্বরের অফুচর তত্ত্বজ্ঞ ব্যক্তি নিশ্চয়ই মুক্তি লাভ করেন।

ज्ञानेन तपसा चैव धीरा: पश्चिन्त तत्परं।
निर्तिप्तमनसः पूता खुत्कान्तरजयोऽमलाः॥३२६॥
पात्र । १० । १३१८।

নির্লিপ্ত পবিত্র অক্রোধী শুদ্ধ ধীর ব্যক্তিগণ জ্ঞান ও তপস্যাদ্বারা পরব্রহ্মকে দর্শন করেন।

ध्यानयोगेन ग्रहोन निमीमानिरहङ्कृताः। त्राप्तुवन्ति महासानो महान्तं खोकमुत्तमम्॥३२०॥

भाखा ५१। १४४€।

নিরহঙ্কারী মহাত্মারা বিশুদ্ধ ধ্যানযোগে নির্মাণ হইর। মহান্দর্কোচ্চ লোক প্রাপ্ত হরেন।

विमुत्तः धर्वे सस्कारै स्ततो ब्रह्म सनाततः । परमाप्नोति संभान्तमचलं नित्यमचरम् ॥ ३२८॥

भाषा । ५३। १४४६ 1

সকল প্রকার অজ্ঞানতা হইতে বিমুক্ত হইলে শাস্ত অচল নিত্য অবিনাশী পরবৃদ্ধকে প্রাপ্ত হওয়া যায়। ध्यानाध्यायेन युक्तास मान्ते वैकानि संस्थिताः । भान्ति ते परमामाग्रु सभन्ते नाच संश्रयः॥३२८॥ भारति पर्विति १८ । १०३० ।

• শান্তজ্ঞ বিষয়বিরাগ যোগিরা অচিরাৎ নিশ্চয় পর্য শাস্তি লাভ কুরেন।

श्रावयं भगवानेको धन्यव जगतीगुरः। न किश्वदन्यत् पछामि भूतं यद्ववतासमम्॥३३०॥ इति। १६८:८६॥॥

আশ্চর্য্য একমাত্র জগদ্তুক প্রমেশ্বর আপনি ধন্য। আমি আর কাহাকেও আপনার সমান দেখিব না।

चतुर्थो ऽध्यायः ।

ः सञ्चितस्थापि महतो वत्स ! क्षेत्रिन मानवै: । अयसस्तपस्य व क्षोधोनाश्वरः परः ॥ ३३१ ॥ 🐬

· মানবগণ বহুক্লেশে যে অসামান্য যশঃ ও তপ্স্যা সঞ্স করে ক্রোধ তাহা অল্লকালের মধ্যেই বিনম্ভ করে।

स्वर्गापवग व्यासिधकारण परमर्थयः। वर्ज्ञयन्ति सदा क्रीधं तात! मा तद्दशी भव॥३१६॥ विष्णु । १ । १ / १२०। ক্রোধ স্বর্গ ও মোক্ষের প্রতিবন্ধক স্বরূপ, স্ক্তরাং মহরিরা বর্মদা তাহা পরিত্যাগ করিয়া থাকেন্। অতএব বংষ।
সেই ক্রোধের বুণীভূত হইও না।

सन्द तासी समक्ष वसत्यत्रेति वै यतः। ततः स वासुद्वेति विद्वितः परिपद्मते ॥ ३३३॥

विषापु। १ | २ | ११ ।

সেই ব্রহ্ম এই জগতের দকল স্থানেও সমূদায় বস্ত ভাঁহাতে বাদ করে বলিয়া জ্ঞানির৷ তাঁহাকে বাস্থদেব বলিয়া খাকেন।

परमार्थस्वमेत्रेकोनान्गोऽस्ति जगतः पते।। तवैष महिमा येन व्याप्तमेतचराचरम्॥ ३३४॥

विशापु १।४।३८।

হে জগংপতে ! এক তুমিই পরমার্থস্বরূপ জন্য আর কেন্ট্রনাই। তোমার মহিমা দারাই এই চরাচর জ্বপৎ ব্যাপ্ত রহিয় ছে।

श्रास्ता विशारशेषस्य जगतीयो हृदि स्थितः ।
तस्ति परमाज्ञानं तात ! कः केन श्रास्थते ॥ १३१॥
विवृष् । १ । १०। २०

যিনি অধিল জগতের জ্ঞানদাতা, এবং যিনি নিরম্ভর ক্রমে অবস্থিতি করিতেছেন, সেই পরমাত্মা ব্যতিরেকে আর কে জ্ঞানদান করিতে সমর্থ হয়? पानेऽप्यपापः परवेऽप्यभिधते पियाणि यः ॥ मैत्रोद्रवानाः तरणस्तस्य मृतिः करे स्थिता ॥३३०॥ ।
विण् । पु । १ । १० । १२ ।

ভানিষ্ট কবিলেও ধিনি তাহার অনিষ্ট করেন না, কর্কশ বলিলেও প্রিয়ই বলেন, প্রীতিতে যাঁহার অন্তঃকরণ সর্বাদা মধ্য থাকে, মুক্তি তাঁহার করস্থ।

भयं भयानामपहारिणि स्थिते

मनस्थनने मम कुत्र तिष्ठति ।

यस्मिन् स्मृते जन्मजरान्तकादि

भयानि सर्वोष्णपद्यान्ति तात!॥ ३३८॥

विषापु। १। १७। ३६।

হে তাত ! মাঁহাকে স্মরণ জন্য জরা ও মৃত্যু প্রভৃতি সমৃদায় ভয় নিরাকৃত হয়, সেই ভয়াপহারী অনস্ত প্রমেশর ক্ষায়ে অবস্থিতি করিলে আর ভয়ের সম্ভাবনা কি ?

चायासः स्मर्णे कोऽस्य स्मृतो यक्ति घोभनम्। पापचयस भवति सारतां तमहर्निग्रम्॥ ३३८॥

विशापु। १। १०। ७८।

ইহাঁকে শ্বরণ করিতে আয়াস কি, শ্বরণ করিলেই মঙ্গল লাভ হয়। বে ব্যক্তি দিবানিশি তাঁহাকে শ্বরণ করে, তাহার সমুদার পাপক্ষর হইয়া যায়। सर्वभूतस्थिते तिसान् मितमे ने दिवानियम्। भवतां जायतामेवं सर्व्वे क्षेत्रान् प्रहास्थय। ३४०। विष्णु पु । १। १०। ०८।

সকল প্রাণির হৃদয়বাসী প্রমেশ্বরে চিত্ত সমাধান কর, ও সকলের প্রতি মৈত্র ব্যবহার কর। এইরূপ করিয়া তোমা-দের সকল প্রকার হৃঃথ দূর হইবে।

तस्मिन् प्रसन्ने निमित्तास्त्रास्त्रः ।
धन्मार्थिकामे रसमस्यकास्ते ।
समात्रिताद्बद्धातरीरनन्तावि:संघयं प्राप्स्थय वे महत् फलम् ॥ ३४१ ॥
विक् प् । १ । १० । ८१ ।

তিনি যদি তোমাদিগের প্রতি প্রদার হন, এ সংসারে তোমাদের কি আর অলভ্য থাকিবে? ধর্মার্থকামে কি হইবে, ভৎসমুদায় অতি অকিঞিৎকর। তোমরা যদি অনস্ত ব্রহ্ম-ভরুর আশ্রয় গ্রহণ কর, নিঃসংশয় তোমরা মহৎফল লাভ করিবে।

कः किन इन्यते जन्तुर्जन्तु कः केन रद्यते। इन्ति रचिति चैवाका श्रासत्साध्र समाचरन्॥३४२॥ विष्यु । १ । १६। २८ কে কাহাকে বিনাশ করে, কে কাহাকে রক্ষা করে, আত্মাই সাধু বা অসাধু আচরণ করিয়া আপনাকে বিনাশ বা রক্ষা করে।

स्वयस्ति भगवान् विषाुर्मियं चान्यत्न चास्ति सः। यतस्ततोऽयं मित्रं मे श्रत् संति, पृथक् कृतः॥३४४॥

যথন দর্জব্যাপী পরমেশ্বর তোমার মধ্যে আমার মধ্যে ও আর আর সমৃদার পদার্থের অভ্যস্তরে বর্ত্তমান রহিয়াছেন, তথন এ আমার মিত্র, এ আমার শক্র এইরূপ পৃথক্ ব্যবস্থা কিরূপে হইতে পারে ?

् धर्माधिकामैः किंतस्य मुक्तिस्तस्य करे स्थिता।

प्रमस्त जगतां मूले यस्य भिक्तःस्थिरा विधि॥३४५॥

विश् पु । १ । २०। २०।

প্রভো! তুমিই সমুদার জগতের মূল। তোমার প্রতি যাহার অচলা ভক্তি আছে, তাহার ধর্মার্থ কামে কি প্রয়োজন? কারণ মুক্তি তাহার করস্থ।

एको व्यापी समः शुह्रो निर्गुणः प्रकृतेः परः। जन्मवृद्धादिरहित श्रात्मा सव्य गतोऽव्ययः॥३४६॥ विणु पु । २११४ । २८ ।

সেই পরমেশ্বর এক, সর্বব্যাপী, অপরিবর্তনীয়, নির্মান, পরিমিত, জ্ঞাহীন, প্রপঞ্চাতীত, জন্ম ও হ্রাস বৃদ্ধি রহিত, সর্প্তাত, অবিনাশী ও চৈতন্য স্বরূপ। यद्यास्तेन त्रप्य पयसा कियायोजनम्।
एवं तत् परमं ज्ञाला वेदे नाम्ति प्रयोजनम्॥३४७॥
श्राख्पुरावन् उ.गी । १। २१।

যেমন অমৃত পান করিলে জলের প্রয়োজন থাকে না, তজ্ঞপ সেই পরত্রদ্ধকে জানিলে আর বেদের আবশ্যক করে না।

भहम्बे भावना नास्ति हम्बमेतिहनम्बति । भवण मोखरं ब्रह्म कथं ध्यायन्ति योगिनः॥३४८॥ सर्वेपूण मधःपूर्णं म यपूर्णं यसामकम् । सर्वेपूर्णं स भात्मेति समाधिकास्य सम्वर्णं॥३४८॥ वस्त्र पुर्णं स भात्मेति समाधिकास्य सम्वर्णः॥३४८॥

অদৃশ্য বস্তুর চিস্তা হউতে পারে না, দৃশ্য বস্তুও বিনষ্ট হর । অতএব যোগিগণ সেই বর্ণহীন পরব্রদ্ধকে কিরুপে ধ্যান করেন ? সেই চিৎস্বরূপ প্রমেখন উর্দ্ধে প্রিপূর্ণ, অধোতে পরিপূর্ণ, মধ্যে পরিপূর্ণ, সকলই পূর্ণ কবিরা অবস্থিতি করিতে ছেন, ঈশ্বরে চিত্ত সমাধানের ইহাই লক্ষণ জানিবে।

सक्तत् यहितं क्पमेतत् कामाय तेऽनघ ! । मत्कामः यनकैः साधः सञ्चीक् चति हृच्छयान्॥३५०॥ श्रीमद्रागवतम् १ । १ । ११ ।

ঈশ্বর বলিতেছেন, তবে যে আমি একবার আমার রূপ প্রদর্শন করিয়াছি তাহা কেবল তোমার অনুরাগ বৃদ্ধির জন্য। কারণ সাধুব্যক্তি আমার প্রতি ভক্তিমান্ হইয়া অলে অলে সমুদায় পাপ পরিত্যাগ করে।

> पिवन्ति ये भगवत श्रामनः सतां कथान्द्रतं श्रवणपुरेषु सम्भृतं। पुनन्ति ते विषयविदूषितामयं व्रजन्ति तच्चरणसरीक्डान्तिकं॥ ३५१॥

> > सा । २। २ । ३७।

যাঁহার। ভক্তগণের সঙ্গে বসিয়া পরমান্মার কথামৃত পান করেন, তাঁহারা আপনাদের বিষয়কল্মিত চিত্তকে পবিত্র করেন এবং তাঁহার চরণারবিন্দ লাভ করেন।

> यच्छ्रदया त्रुतवत्या च भक्ता संचन्यमाने इद्येऽवधाय । ज्ञानेन वैराग्यवलेन धीराः वजेम तत्तेऽङ्घिसरोजपीठम् ॥ ३५२॥

भा। ३। २५ । २०।

ধীর ব্যক্তিরা ঈশ্বনকে শ্রদ্ধা জ্ঞান ও ভক্তি সহকারে অন্ধে বণপূর্ব্বক হৃদয়ে প্রতীতি করিয়া জ্ঞানবৈরাগ্যবলে তাঁহার চরণপদ্ম লাভ করেন।

तितचत्रः कारुणिकाः सुद्धः सव्य देहिनां।
श्रजातश्रवः श्रान्ताः राधवः साधुभूषणाः ॥३५३॥
भा। ३।१६। ५८।

যোগযুক্ত বৃদ্ধি, ভক্তি, বৈরাগ্য ও জ্ঞান দারা আত্মাতে প্রমাত্মাকে পৃথক রূপে চিস্তা করিবেক।

श्रतएव श्रनैवित्तं प्रसक्तमसतां पथि। भिक्तयोगेन तौत्रीण विरक्ता च नयेत् वश्रम्॥३५५॥

ষ্মতএব গাঢ়ভজিযোগে ও বৈরাগ্য সহকারে অসৎপথাব-লম্বী সংসারাসক্তচিত্তকে অল্লে অল্লে বশীভূত করিবেক।

यख यह विविह्ति स तेन सुखदु:खयो: । त्राक्षानंतीषयन् देशी तमसः पारम्रच्छित॥३५६॥

H1 | 8 | 0 | 3 0 |

ঈশ্বর বাহাকে বাহা দান করিয়াছেন তন্ধারা স্থব হঃবের মধ্যে আপনাকে সম্ভুষ্ট রাখিলে মন্থ্য মুক্তি লাভ করে।

> सत्यं दिश्रत्यिधितमधितो चर्णां नैवार्धदो यत् पुनर्ह्यातो यतः। खयं विधत्ते भजतामनिच्छता-मिच्छापिधानम् निजपादपञ्चवम्॥ ३५०॥ भा ।५। १८। २०

ইশ্ব মহ্বাগনের প্রার্থিত বিষয় অপণ করেন, একথা সত্য, কিন্তু তিনি ভক্তগণকে সামান্য বিষয় দেন না, কেন না তাহা পাইয়া প্রার্থনার নির্ত্তি হয় না। সম্দায় কামনা পরিশ্বা হইয়া যাহারা, তাঁহাকে ভজনা করে, তাহাকে তিনি শ্বয়ং সম্দায় অভিলাষের পরিসমাপ্তিকর নিজপাদপলব প্রদান করিয়া থাকেন।

तपसा ब्रह्मचर्येष यमेन च दमेन च।
त्यागे न सत्ययीचाभ्यां यमेन नियमेन च।
देखवाग्वृद्धिजंधीरा धर्मेज्ञाः ऋडयान्विताः।
चिपन्तप्रचं महदपि वेणुगुस्ममिवानसः॥३५८॥

भा। ५। २६। १२।

অনল যেরপে বেণুগুল্ম দগ্ধ করে, তদ্রপ ধীরের।
শ্রদ্ধাবান্ হইয়া তপ, ব্রদ্ধার্য, শান্তি, ইন্দ্রিয়দমন, ত্যাগ,
সত্য, গুদ্ধতা, আত্মসংযম ও নিয়ম দারা শারীরিক, বাচনিক
ও মানসিক মহৎ পাপ পরিত্যাগ করেন।

तैस्तान्यचानि पूयने तपोदानव्रतादिभिः । नाधकां तसृद्यं तदपीयास्त्रिसेवया ॥३५८॥

सा। ६। २। १७ |

সাধকগণ তপ দান ও ব্রতাদি দারা দ্বিত কার্যাকে পবিত্র করেন, ক্লিন্ত কল্বিত স্থান্তকে পবিত্র করিতে পারেন না, ভাহা কেবল ঈশবের পদ সেবাতেই পবিত্র হইয়া থাকে। एतावानेव लोकेऽस्मिन् पुंसां धर्यः परः सृतः। अक्तियोगो भगवति तचामग्रहणादिभिः॥ ३६०॥

सा | ६ । २ | २२ ।

পরমেশবের নাম গ্রহণাদির দারা তাঁহাতে ভক্তিদোগই এ সংসারে মহুষ্যগণের পরমধ্য ।

कर्याणा मनसा वाचा सर्वभृतेषु सीहृदः। विद्याविवेकसम्पन्नाः शीलमेतहिदुवुधाः॥ ३६१ ॥ भारतस्य

ব্রহ্মজ্ঞান ও বিবেকসম্পন্ন পণ্ডিতগণ কান্নমনোবাক্যে সর্ব্বভূতের প্রতি বন্ধুতাব্যবহারকে শীল বলিয়া জানেন।

सत्यवतं सत्यपरं निसत्यं
सत्यस्य योनिं निहितञ्च सत्त्ये।
सत्त्यस्य सत्यस्तमत्यनेवं
सत्यास्यकं त्वां प्ररणं प्रपत्नाः ॥ २६२ ॥
मा १९ । २ । २० ।

তৃমিই সত্য সংকল্প, তৃমি সত্যশ্রেষ্ঠ ও ভৃত ভবিষ্যৎ বর্ত্ত-মানেও সত্য, তৃমি ক্ষিত্যাদি পঞ্চভূতের উৎপত্তির কারণ, তৃমি তাহাতে অন্তর্যামিরূপে প্রতিষ্ঠিত, তাবৎ প্রাণির মূল, তৃমি সত্যবাক্য ও সমদর্শনে নেতা, তৃমি সত্য স্বরূপ, আমরা তোমার শরণাপন্ন হই।

> खवं समुत्तीर्थं सुदुखरं खुमन् भवार्षवं भीममभद्रसीष्ट्रदाः ।

भवत् पदाश्चीरुष्टनावमत्र ते निधाय याताः सदनुयस्ते भवान् ॥ ३६३॥ मा । १०।२ । २५।

•হে স্বপ্রকাশ! পাপিজন বন্ধ ভক্তগণ তোমার অন্বগ্রহে ভয়ানক ভবসাগর উত্তীর্ণ হইয়া তোমার চরণতরণী ইহ-লোকে রাথিয়া গিয়াছেন।

> न नामरूपे गुणकर्षाजयभि-निरूपितव्ये तव तस्य साचिषः। मनीवचीभ्यामनुसेयवस्य नी

देव क्रियायां प्रतियन्त्रायापि हिं॥ ३६४ ॥

হে দেব! তোমার গুণ কর্ম ও জন্ম দ্বারা নাম ও রূপ নিরূপণ করা যায় না, তুমি সকলের সাক্ষী, তুমি বাক্য মনের অগোচর, কেবল ভক্তিপথাবলম্বী সাধকেরা উপাসনাদিতে তোমার দর্শন লাভ করেন।

> क्षं यत्तत् प्राष्ट्रत्यक्तमायं ब्रह्मज्योतिनिंगुं पं निर्विकारं। सत्तामात्रं निर्विग्रेषं निरीष्टं सत्वं साचाहिणुरध्याक्षदीपः॥ ३६५॥

> > सा। १०। ३ । २१ ।

্ যাঁহাকে দকলের অব্যক্ত কারণ স্বরূপ বলা বার, তিনিই ব্রুর, তিনি জ্যোতিঃ স্বরূপ, নির্গুণ, নির্পিকার, সন্তামাত্ত, নির্কিশেষ, নিরীহ, সাক্ষাৎ প্রাণস্বরূপ, সর্কব্যাপী ও আত্ম-প্রকাশক।

> कायेन वाचा मनसे न्द्रियैर्मा वृद्यात्मना वानुगतस्वभावात्। करोति यद्यत् सक्तनं परस्री नारायणायेति समप्येत्तत्॥ ३६६॥

> > सा। ११ । १। ३४ ।

সাধুব্যক্তি স্বভাবতঃ শ্রীর, মন, বাক্য, ইন্দ্রিয়, বৃদ্ধি ও আস্থা দ্বারা যে যে কর্ম করেন, তাহা সর্বাশ্রয় পরমেশ্বরকেই সমর্পন করিবেন।

> एवं व्रतः स्विषयनामकीर्स्या जातानुरागोद्गुतिचत्त उच्चें:। इसत्यथो रोदिति रोति गाय-त्युन्मादवनृत्यति सोकवाद्यः॥३६०॥

> > सा । ११ । २ | ३८ ।

এইরপে সাধক ইষ্ট দেবতার নাম সংকীর্ত্তনে প্রেম লাভ করিয়া বিগলিত হৃদয়ে উচ্চৈঃস্বরে হাস্য করেন, ক্রন্দন করেন, অফুক্ষণ তাঁহাকে ডাকেন, ও পুনঃ পুনঃ তাঁহার নাম গান করেন, অবশেষে অলোকিক ভাবাবেশে বিবশ হইরা ক্রিয়াদের ন্যার নৃত্য করিতে থাকেন।

द्रष्टं दत्तं तपो जप्तं व्रत्तं यन्दाक्षनः प्रियम्। दारान् सतान् ग्रहान् प्राणान् परस्ते च निवेदनम्॥३६८

भा ११ । इ । १८ ।

যোগ, দান, তপ, জপ, চরিত্র, যাহা কিছু নিজের প্রির, স্ত্রী, পুত্র, গৃহ, প্রাণ, দকলই পরমেশ্বরে অর্পণ করিবেক।

परस्परानुक्षयनं पावनं भगवद्यश्वः।

मिथोरतिर्मिथस्तुष्टिनिह तिर्मिथ चात्मनः॥ ३६८॥

भा ११। ३। ३१।

ঈশ্বরের পৰিত্র যশের কথা পরস্পরেম্ন নিকট কহিবে। পরস্পরের সহিত মিলনে আত্মার অনুরাগ সন্তোষ ও শাস্তি হইবে।

> क्विहरनाय् तिन्तया क्वि-हसन्ति नन्दन्ति वदन्तालीकिकाः । द्रत्यन्ति गायन्तानु गीखयन्ताजं भवन्ति तृष्टिं परामित्य निर्द्वताः ॥ २००॥ गा । ११ । २ । २३ ।

ভক্তগণ সেই অবিনাশী ঈশ্বরের চিস্তনে কথন রোদন করেন, কথন হাস্য করেন, কথন আনন্দিত হন, কথন অলোকিক কথা বলেন, কথন নৃত্য করেন, কথন তাঁহার নাম গান করেন, কথন তাঁহার গুণ কীর্ত্তন করিতে করিতে অঞ্ বিসর্ক্তন করেন। मुनिः प्रसन्ती गमीरी दुवि गाह्यो दुरत्ययः। भनन्तपारीह्यचीभ्यः स्तिमितीद इवार्णवः॥३७१॥

भा । ११ | ८ । म ।

आ। ११। ८। ६।

সাগর যেমন নদীর জলে বৃদ্ধিও হয় না, শুঙ্কও হয় না;
তিজ্ঞপ ভগবন্তক যোগী কাম্য বস্তু লাভ করিলে বা তাহা
হইতে বঞ্চিত হইলে তাঁহার ক্ষতি বৃদ্ধি হয় না।

त्राणुभ्यव महद्भ्यव शास्त्रेभ्यः कुश्रको नरः। सन्देतः सारमाद्यात् पुष्ये भ्य दव षट्पदः॥३७३॥

ভূঙ্গ যেরূপ সকল পূষ্প হইতে সার গ্রহণ করে, তজ্ঞপ ধীর ব্যক্তি কুঞ ও মহৎ সকল শাস্ত্র হইতে সার গ্রহণ ক্রিবেন।

सायनानं खस्तनम्वा न संग्रहीत भिचितं। पाणिपात्नीदरामात्नी मचिनेव न संग्रही ॥३०४॥ भा ।११। ८। ११।

ৈ প্রকৃত ভক্তগণ সায়ংকালে বা কল্য কি আহার 'করিব ইহা ভাবিয়া ভিক্ষান্তব্যসঞ্চয় করেন না। সধুস্ফিকারা বেক্সপ কিছুই মঞ্চয় করে না, তজ্ঞপ তাঁহারা স্বীয় উদরমাত্র পূর্ণ হইলেই পরিতৃপ্ত হয়েন।

कपानुरकतद्रोहस्तिति हुः सर्व्य देहिनाम् । स्वत्यसारोऽनवद्याका समः सन्वीपकारकः॥३०५॥

मा ११ । ११ । २८ ।

যিনি কুপালু, যিনি কাহারও অনিষ্ট চিন্তা করেন না সকলক কমা করেন, যিনি সত্য বাক্য বলেন, যাঁহার অস্মাদি দোষ নাই, এবং যিনি স্থপ হৃংপে সমান ও যথাসাধ্য সকলের উপকার করেন, তিনিই সাধু।

संसारकूपे पतितं विषयेमु षितेचणं। यस्तं कालाहिनामानं कोऽन्यस्तातुमधीखरः॥३७६

सा।११ | ८ । ४०

সংসার কৃপে পতিত বিষয় কুলুষিত কালব্ধপ সপের দারা গ্রাসিত জাত্মাকে ঈশ্বর ভিন্ন কে তার ত্রাণ করিতে সক্ষম।

तावत् समोदते खर्गे यावत् पुष्यं समाप्यते । चीषपुष्यः पतत्यर्वागनिच्छन् कालचानितः॥३००॥

सा । ११ । १० । २५ ।

যাবং পুণ্য শেষ না হয় তাবং মন্থ্য স্বর্গে স্থতাগ করে, কি**ত্ব পু**ণ্য ক্ষয় হইলেই অনিচ্ছা সত্ত্বেও তাহার কালক্রমে পতন হয়।

-अप्रमत्तो गभीराका धतिमान् जितवड् गुणः।

चमानी मानदः कल्यो मैतः कारुणिकः कविः॥३७८

मा । ११ । ११ | ३१ ।

ভক্ত অপ্রমন্ত, গভীরাত্মা, ধৈর্যবান্, ক্ষ্মা তৃষ্ণা শোক মোহ জরা মৃত্যু তাঁহার বশীভূত, তিনি নিজে অমানী অপ-রকে সন্মান দান করেন, তিনি স্থদক্ষ, সকলের মিত্র, দয়ালু ও জ্ঞানবান্।

कथं विना रोमहर्षं द्रवता चेतसा विना।
विनानन्दाश्रुकलया शुहेद्वत्ता विनाययः ॥२७८॥
मा। १८।१४। २२।

ভক্তি বিনা শরীর রোমাঞ্চিত হয় না, চিত্ত আর্জ হয় না, আনন্দাক্র নিপতিত হয় না ও মন শুদ্ধ হয় না।

यहच्छयोपपनान्नमदाच्छ्रेष्ठमृतापरं।
तथा वासस्तथा ग्रयां प्राप्तं प्राप्तं भजेकुनि:॥३८०॥
सा १११ १६८ १३४।

শাপনা হইতে যে অন উপস্থিত হয় তাহা ভাল হউক বা নন্দ হউক ভোজন করিবেক। সেইরূপ মুনি যেরূপ বস্ত্র ও শ্যা প্রাপ্ত হন তাহাই গ্রহণ করেন।

> संकोत्धं मानो भगवानननः श्वतातभावो व्यसनंहि पुंसां। प्रविष्य चित्तं विधुनोत्यग्रेषं यथा तमोऽकीऽब्स्वमिवातिवातः ॥ ३८१॥ भा। १२। १२। १२।

অনস্ত পরমেশ্বরের নাম কীর্ত্তন এবং তাঁহার মহিমা প্রবণ করিতেং তিনি হৃদয়ে প্রবেশ করিয়া স্থ্য যেমন অন্ধকার, প্রবলবাত্যা যেমন মেঘকে অপসারিত করে তেমনি মন্থা-গণের অশেষ ছঃখ বিদ্রিত করেন।

> त्रेव रम्यं किचरं नव् नवं तरेव प्रश्वमानसीमहीत्सवं। तरेव प्रीकाणवग्रीवणं तृणां यदुत्तमञ्जीकयग्रीऽनुगीयते॥ ३८१॥

> > 1188 | 88 | 88 | 1

সেই সংকীর্ত্তনই মনোরম, ক্রচির, নিত্যন্তন, উহাই নিত্যকাল মনের মহোৎসব এবং মন্থ্যগণের শোক বিনাশ-কর, যদ্বারা উত্তমশ্লোক ভগবানের মহিমা সংকীর্তিত হয়।

सत्यधर्मां समात्रित्य यत् कर्मा कुरुते नरः।
तदेव सफलं कर्मा सत्यं जानी हि सुत्रते ॥
न हि सत्यात् परीधमां न पापमहतात् परम्।
तसात् सर्वामना मत्यः सत्यमेकं समात्रयेत् ॥
सत्यहीना वृद्या पूजा सत्यहीनो वृद्या जपः।
सत्यहीनं तपो व्यव्यमुषरे वपनं यद्या ॥
सत्यह्यं परं ब्रह्म सत्यं हि परमं तपः।
सत्यमूलाः कियाः सर्वाः सत्यात् परतरं नहि॥३८२
महानिकाष तकम् । ॥ १०००६।

হে স্বতে ! সত্য ধর্ম আশ্রম করিয়া মনুষ্য বে অমুষ্ঠান করে, তাহাই সফল হয়, ইহা নিশ্চয় জানিও। সত্য অপেক্ষা আর শ্রেষ্ঠ ধর্ম নাই, মিথাা অপেক্ষা আর পাপ নাই। অত্তর্গুব সমুদয় কদয়ের সহিত এক সত্যকেই আশ্রম করিবেক। সত্যহীন পূজা ব্থা, সত্যহীন জপ ব্থা, সত্যহীন তপ উষর ভূমিতে বীজ বপনের ন্যায় ব্যর্থ। পরব্রহ্ম সত্য স্বরূপ, সত্যই পরম তপ। সমুদায় অনুষ্ঠান সত্যমূলক, সত্য অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ আর কিছুই নাই।

बद्धानिष्ठो ग्रहस्यः स्थात्तत्त्वज्ञानपरायणः ।

यद्यक्त भी प्रजुब्बीत तद्ब्रह्मणि समर्पयेत्॥ ३८३॥ महानि।८। २२।

গৃহস্থ ব্যক্তি ব্রহ্মনিষ্ঠ ও তত্তজান প্রায়ণ হইবেন। যে কোন কর্ম করুন, তাহা প্রব্রহ্মে সমর্পণ করিবেন।

मातरम्पितरश्चेव याचात्प्रत्यचद्रेवताम् ।

मला रही निषेवेत सदा सर्वेप्रयत्नतः ॥ २८४ ॥

গৃহী ব্যক্তি পিতামাতাকে সাক্ষাৎ প্রতাক্ষ দেবতা স্বরূপ জানিরা সর্বপ্রয়ের সর্বাদা তাঁহাদের সেবা করিবেন। স্থাবয়ন্দ্র ভালা আলি सर्वदा प्रियमाचरेत्।

पितोराचानुसारी स्थात् सत्युतः कुलपावनः॥३८५ सहान । ६८।

কুলপাবন সংপুত্র পিতামাতাকে মৃহ্বাক্য কহিবেক, সর্ব্বদা তাঁহাদের প্রিরকার্য্য করিবেক এবং আজাবহ বাকিবেক। स्टहस्यः पालयेत् दारान् विद्यामभ्यासयेत् सुतान्। पोषयेत् स्वजनान् वस्यूनेवधन्धः सनातनः ॥ ३८९ ॥

• গৃহস্থ ব্যক্তি ভার্যাকে পালন করিবেন, সস্তানকে বিদ্যা শিক্ষা দিবেন এবং আত্মীয় স্বন্ধন বৃদ্ধবাদ্ধবদিগকে পোষণ করিবেন এই সনাতন ধর্ম।

सधन्यः पुरुषो जोके सक्तती परमाधिवत्।
ब्रह्मनिष्ठः सत्यसन्धी यो भवेत् भुवि मानवः॥३८०॥
स्राति। ८।३०।

বে ব্যক্তি ভূমণ্ডলে ব্ৰন্ধনিষ্ঠ ও সত্যপ্ৰতিজ্ঞ হয়েন, তিনিইপৃথিবীতে ধন্য পুৰুষ, তিনিই কৃতী ও তত্ত্ত্ত ।

धनेन वाससा प्रेका श्रदयास्तभाषणैः। सततं तोषयेहारानाप्रियं नृचिदाचरेत्॥ ३८८॥

सहानि | ८ । ४१ ।

ধন, বস্তু, প্রেম, শ্রদ্ধা ও মিষ্ট বাক্য দারা সতত ভার্য্যাকে পরিতৃষ্ট রাথিবেক, কদাপি অপ্রিয় আচরণ করিবেক না।

कन्याप्येवं पालनीया शिचणीयातियद्वतः।

देया वराय विदुषे धनरत्नसमन्विता ॥ ३८८ ॥

स्रष्टानि। ५१ । ४६।

কন্যাকেও এইরপ পালন করিবেক এবং অতিযদ্ধের সহিক্ত শিক্ষা দিবেক, ও ধন রত্নের সহিত স্থপণ্ডিত পাত্রে স্পম্প্রদান করিবেক। न विभेति रणाचीवै संग्रामेऽप्यपराङ्मुखः। धन्मैयुद्दे स्तोवापि तेन लोकत्रयं जितम् ॥३८०॥ महानि । ६॥।

যুদ্ধে যিনি ভীত হয়েন না, সংগ্রামে যিনি পরাঙ্মুখ হয়েন না, ধর্ম যুদ্ধে যিনি মৃত্ই বা হয়েন, তাঁহার দারা তিন লোক জিত হইয়াছে।

सत्यमेव व्रतं यस्य द्या दीनेषु सर्व्यदा। कामक्रीधी वर्षे यस्य तेन लोकत्रयं जितम्॥३८१॥ व्यक्ति। प्राद्धाः

া সত্যই যাঁহার ব্রত, সর্বাদা দীনেতে যাঁহার দয়া, এবং কাম ক্রোধ যাঁহার বশীভূত, তাঁহার দারা তিন লোক জিত হইয়াছে।

निचेत् पति क्रूरदृष्टाः श्रावविस्तेव दुर्व्वचः । नाप्रियं मनसंस्वापि चरेत् पत्युः पतिव्रता॥३८२॥ महान । प्रारटा

পতিব্রতা ভার্য্যা পতিকে ক্রুর দৃষ্টিতে দেখিবেক না, কথন ছ্র্কাক্য শুনাইবেক না, এবং মনেও কথন পতির অপ্রেয় চিস্তা করিবেক না।

কন্যা যত দিন পতিমর্য্যাদা ও পতিসেবা না জানে এবং ধর্মশাসন অজ্ঞাত থাকে, তত দিন পিতা তাহার বিবাহ দিবেন না।

JEWISH SCRIPTURES.

me. Thou shalt have no other gods before me. Thou shalt not make unto thee any graven image, or any likeness of any thing that is in heaven above, or that is in the earth beneath, or that is in the water under the earth.—Ex. xx. 3.

আমার সমক্ষে অন্য কোন দেবতা রাখিতে পারিবে না। তৃমি আপনার নিমিত্ত কোন খোদিত মূর্ত্তি অথবা উপরিস্থ আকাশ কিম্বা অধঃস্থ পৃথিবী কিম্বা তরিক্সবর্ত্তী দলিলস্থিত কোন পদার্থের প্রতিমা নির্মাণ করিবে না।

2. Thou shalt not take the name of the Lord thy God in vain; for the Lord will not hold him guiltless that taketh his name in vain.—Ex. xx. 7.

প্রভূ পরমেশ্বরের নাম নিরর্থক লইও না, কারণ যে কেহ তাঁহার নাম নিরর্থক লয়, পরমেশ্বর তাহাকে নির-পরাধী গণ্য করেন না।

3, Ye shall do no unrighteousness in judgment: thou shalt not respect the person of the poor, nor honour the person of the mighty: but in righteousness shalt thou judge thy neighbour.—LEV. xIX. 15.

বিচারে অন্যায় করিও না। দরিদ্রের মুখাপেক্ষা করিও না, ধনিরও সম্ভ্রম করিও না, জুমি ন্যায়েতেই স্থীয় প্রতিবাদির বিচার কর। 4. Thou shalt not hate thy brother in thine heart; thou shalt in any wise rebuke thy neighbour, and not suffer sin upon him. Thou shalt not avenge, nor bear any grudge against the children of the people, but thou shalt love thy neighbour as thyself.—LEV. XIX. 17. 18.

তুমি মনে মনে ভ্রাতাকে স্থাণ করিও না। কিন্তু যে কোন প্রকারে হউক স্থীয় প্রতিবাদিকে অন্থযোগ করিবে; এবং তাহাকে পাপ করিতে দিবে না। তুমি প্রতিহিংসা করিও না ও স্বজাতির প্রতি দেষ করিও না, কিন্তু প্রতিবাদিকে আত্মবৎ প্রীতি করিবে।

5. Thou shalt rise up before the hoary head, and honour the face of the old man.—LEV. XIX. 32.

পলিতশির সম্মুখে গাত্রোখান করিবে, এবং বৃদ্ধকে সমাদর করিবে।

6. Hear, O Israel: The Lord our God is one Lord: And thou shalt love the Lord thy God with all thine heart, and with all thy soul, and with all thy might.—DEUT. VI. 4. 5.

হে ইজরারেল বংশীরেরা! শ্রবণ কর, আমাদের প্রভূ পরমেশ্বর একই। সেই প্রভূ পরমেশ্বরকে সমৃদর ছাদর, সমৃদর আত্মাও সমৃদর শক্তির সহিত প্রীতি কর।

7 The Lord maketh poor, and maketh rich; He bringeth low and lifteth up.—I. SAM. II. 7.

পরমেশ্বর মনুষ্যকে দরিক্র এবং ধনী করেন, তিনি নীচকে আনিয়া উচ্চ পদে সংস্থাপিত করেন। 8. Thine, O Lord, is the greatness, and the power, and the glory, and the victory, and the majesty: for all that is in the heaven and in the earth is thine: thine is the kingdom, O Lord, and thou art exalted as head above all.—I CHRON. XXIX. II.

হে পরমেশ্বর! মহন্ব এবং পরাক্রম, মহিমা এবং জয় ও ঐশ্বর্যা তোমারই; কারণ দ্যুলোক ও ভূলোকে যাহা কিছু আছে, দকলই ভোমার; তোমারই রাজ্য, হে প্রভো! তুমি দর্ক্বোপরি অধিপতিরূপে বিরাজমান রহি-য়াছ।

9. The good Lord pardon every one that prepareth his heart to seek God.—2 CHRON. XXX. 18, 19.

যে কেহ ঈশ্বরকে অনুসন্ধান করিতে হ্বদয়কে প্রস্তুত করে, দয়াম্য প্রমেশ্বর তাহাকেই ক্ষ্মা করেন।

10. Canst thou by searching find out God? Canst thou find out the Almighty unto perfection? It is high as heaven? what canst thou do? deeper than hell; what canst thou know? The measure thereof is longer than the earth, and broader than the sea.—Job. XI. 7-3.

তুমি কি অনুসন্ধান করিয়া ঈশ্বরকে পাইতে পার ?
তুমি কি সর্কশিক্তিমানের পূর্ণস্বরূপ অবগত হইতে পার ?
ইহা আকাশের ন্যায় উচ্চ, তুমি কি করিতে পার ?
পাতাল অপেক্ষাও গভীরতর, তুমি কি জানিতে পার ?
পৃথিবী হইতেও তাহার পরিমাণ দীর্ঘ ও সমুদ্র হইতে
পরিসর বৃহৎ।

11. But ask now the beasts, and they shall teach thee; and the fowls of the air, and they shall tell thee: Or speak to the earth, and it shall teach thee: and the fishes of the sea shall declare unto thee. Who knoweth not in all these that the hand of the Lord hath wrought this? In whose hand is the soul of every living thing, and the breath of all mankind.—JOB. XII. 7-10.

এক্ষণে পশুদিগকে জিজ্ঞাসা কর, তাহারা তোমাকে
শিক্ষা দিবে; এবং আকাশের পক্ষিদিগকে জিজ্ঞাসা
কর, তাহারা তোমাকে বলিয়া দিবে; অথবা পৃথিবীকে
জিজ্ঞাসা কর, সে তোমাকে শিক্ষা দিবে, এবং সমৃদ্রস্থ
মংস্যাগণ তোমাকে বলিয়া দিবে। কে না জানে যে
ঈশ্বরের হস্ত এই সমস্ত রচনা করিয়াছে ? ইঁহার হস্তে
প্রত্যেক জীবের প্রাণ এবং সমৃদ্র মন্থ্রের আত্মা স্থিতি
করিতেছে।

i2. Though he slay me, yet will I trust in him.—JOB. XIII. 15.

যদিও তিনি আমাকে বিনাশ করেন, আমি তথাপি তাঁহার প্রতি নির্ভর করিব।

13. But there is a spirit in man: and the inspiration of the Almighty giveth them understanding.—JOB. XXXII. 8.

কিন্ত মন্ত্রের আত্মা আছে, এবং দর্বেশক্তিমান্ ঈশ্বরের প্রত্যাদেশ মানবগণকে জ্ঞান দান করিয়া থাকে। 14. Blessed is the man that walketh not in the counsel of the ungodly, nor standeth in the way of sinners, nor sitteth in the seat of the scornful. But his delight is in the law of the Lord; and all his law doth he meditate day and night. And he shall be like a tree planted by the rivers of water, that bringeth forth his fruit in his season; his leaf also shall not wither, and whatsoever he doeth shall prosper. The ungodly are not so: but are like the chaff which the wind driveth away.—Ps. 1. 1-4.

ধন্য দেই ব্যক্তি যিনি অধার্ম্মিকদিগের মন্ত্রণায় চলেন না, ও পাপিদিগের পথে দণ্ডায়মান হন না, ও পাযণু-দিগের আদনে উপবিষ্ট হন না। কিন্তু পরমেশ্বরের আদেশেই তাহার আনন্দ এবং তাঁহারই আদেশ তিনি অহনিশি দিন্তা করেন। জলস্যোতের নিকটে রোপিত কৃষ্ণ যেমন সমরে ফল প্রসব করে, এবং তাহার পত্র যেমন কখন শুষ্ক হয় না, তিনি সেইরূপ; তিনি যাহা করেন দকলই দফল হয়। অধান্মিকেরা ঈদৃশ নহে, কিন্তু তাহারা বায়্ নিক্ষিপ্ত তুষের ন্যায়।

15. When I consider thy heavens, the work of thy fingers, the moon and the stars, which thou hast ordained; What is man, that thou art mindful of him? and the son of man, that thou visitest him.—PS. VIII. 3, 4.

যখন আমি তোমার অঙ্গুলি রচিত আকাশ, তোমাব প্রতিষ্ঠিত চন্দ্র তারকের বিষয় আলোচনা করি, তখন বলি, মনুষ্য কে যে তুমি তাহাকে স্মরণ কর ? এবং মনুষ্য সম্ভানই বা কে যে তুমি তাহার তত্ত্বাবধান কর ? 16. Lord, who shall abide in thy tabernacle? who shall dwell in thy holy hill? He that worketh uprightly and worketh righteousness, and speaketh the truth in his heart.—Ps. Xv. I, 2.

প্রভা। কে তোমার গৃহে নিত্যবাদ করিবে ? কে তোমার পবিত্র অচলে আবাদ নির্মাণ করিবে ? যে ন্যায়াত্মদারে কার্য্য করে, ধার্মান্ত্র্টান করে এবং কার্য্যস্থলে দত্য বলে।

17. The heavens declare the glory of God; and the firmament sheweth his handywork. Day unto day uttereth speech, and night unto night sheweth knowledge.—PS. XIX. I, 2.

আকাশ ঈশ্বরের মহিমা প্রচার করে, এবং নভোমণ্ডল তাঁহার হত্তের রচনা প্রদর্শন করে। দিবসের পর দিবস তোমাকে কীর্ত্তন করিতেছে, রজনীর পর রজনী তোমার জ্ঞান প্রকাশ করিতেছে।

18. The law of the Lord is perfect, converting the soul: the testimony of the Lord is sure, making wise the simple—PS. XIX. 7.

ঈশ্বরের বিধি পূর্ন, ইহা আত্মাকে পরিবর্ত্তিত করে, পরমেশ্বরের অব্যর্থ প্রমাণ অজ্ঞানীকেও জ্ঞান দান করে।

19. The Lord is my shepherd; I shall not want. He maketh me to lie down in green pastures: he leadeth me beside the still waters.—PS. xxIII. 1, 2.

প্রভূ পরমেশ্বর আমার রক্ষক, তবে আর আমার অভাব কি; তিনিই আমাকে তৃণক্ষেত্রে শ্রান করান, তিনিই আমাকে স্থির জলের কূলে লইয়া যান। 20. Yea, though I walk through the valley of the shadow of death, I will fear no evil: for thou art with me; thy rod and thy staff, they comfort me—Ps. XXIII. 4.

মৃত্যুছারার উপত্যকা দিরাও যদি আমি বিচরণ করি, আমি কোন বিপদ্আশকা করিব না, কারণ তুমি আমার সঙ্গে আছ; তোমার শাসনদও এবং তোমার যষ্টি আমাকে সাস্ত্রনা দের গ

21. One thing have I desired of the Lord, that will I seek after; that I may dwell in the house of the Lord all the day of my life, to behold the beauty of the Lord, and to enquire in his temple.—Ps. XXVII. 4.

ঈশ্বরের নিকট আমার এই একটা মাত্র ভিক্ষা, এবং তাহারই জন্য আমি চেষ্টা করিব, যেন পরমেশ্বরের আলরে যাবজ্জীবন বাস করিয়া আমি তাঁহার সৌন্দর্য্য দর্শন করি, এবং তাঁহার মন্দিরে তাঁহাকে অনুসন্ধান করি।

22. Wait on the Lord: be of good courage, and he shall strengthen thine heart: wait, I say, on the Lord.—Ps. XXVII. 14.

পরমেশ্বরের দয়ার জন্য অপেক্ষা করিয়। থাক; সাহসে নির্ভর কর এবং তিনি তোমার হৃদয়কে সবল করিবেন; আমি পুনরায় বলিতেছি প্রভু পরমেশ্বরের দয়ার জন্য প্রতীক্ষা করিয়া থাক।

23. Blessed is the man unto whom the Lord imputeth not iniquity, and in whose spirit there is no guile.—PS. XXXII. 2.

পরমেশ্বর যাহাকে নির্দ্ধোধী করেন এবং যাহার আত্মাতে কোন্দ কপটতা নাই, সেই ব্যক্তিই ধন্য। 24. The Lord is nigh unto them that are of a broken heart; and saveth such as be of a contrite spirit.—PS. XXXIV. 18.

পরমেশ্বর ভগ্মহ্বদয়দিগের নিকটে থাকেন এবং অমুতা-পিত আত্মা সকলকে পরিত্রাণ করেন।

25. As the hart panteth after the water-brooks so panteth my soul after thee, O God.—PS. XLII. 1.

মৃগ যেরপ জলাশয়ের জন্য তৃষ্ণার্ত্ত হয়, হে ঈশ্বর ! আমার আত্মা দেইরপ তোমার জন্য তৃষিত হইতেছে।

26. My soul thirsteth for God, for the living God: when shall I come and appear before God?—Ps. XLII. 2.

আমার আত্মা ঈশ্বরের জন্য, ঐ জীবন্ত ঈশ্বরের জন্য ব্যাকুল হইতেছে, কবে আমি ঈশ্বরের সম্মুখে উপস্থিত হইব ?

27. God is our refuge and strength, a very present help in trouble. Therefore will not we fear, though the earth be removed, and though the mountains be carried into the midst of the sea; though the waters thereof roar and be troubled, though the mountains shake with the swelling thereof.—PS. xLvI. 1-3.

ঈশ্বর আমাদের আশ্রয় ও বল এবং বিপদকালে অতি
নিকট্ছ সহায়। অতএব যদিও মেদিনী স্থানাস্তরিত হয় এবং
পর্বেত সকল সমুদ্ মধ্যে নিক্ষিপ্ত হয়, যদিও তাহার জলরাশি
গর্জ্জন করে এবং আন্দোলিত হয়, যদিও তাহার আক্ষালনে
পর্বেত সকল কম্পিত হয়, তথাপি আমরা ভয় করিব না।

28. Against thee, thee only, have I sinned, and done this evil.—Ps. LI. 4.

তোমারি এবং তোমারি বিরুদ্ধে আমি পাপ করিয়াছি এবং এই দৃষ্কর্ম করিয়াছি।

29. Create in me a clean heart, O God; and renew a right spirit within me.—PS. LI. 10.

ং হে প্রমেশ্বর ! আমার হৃদয়কে বিশুদ্ধ কর এবং আমার অন্তরে প্রকৃত ভাব পুনরুদ্দীপিত কর।

30. Thou desirest not sacrifice; else would I give it: thou delightest not in burnt offering. The sacrifices of God are a broken spirit: a broken and a contrite heart, O God, thou wilt not despise.—Ps. LI. 16, 17.

তুমি বলিদাদের প্ররাস কর না, নতুবা আমি তাহা দিতাম; হোমেতেও তুমি তুষ্ট নহ। ভগ্গআত্মা রূপ বলিই ঈশ্বরের গ্রাহ্য; ভগ্গ ও অমুতাপিত হৃদয়কে, হে ঈশ্বর! তুমি তুচ্ছ করিবে না।

31. Whom have I in heaven but thee? and there is none upon earth that I desire beside thee.—PS. LXXIII. 25.

স্বর্গে তোমা ভিন্ন আমার আর কে আছে ? এবং ভূমণ্ডলে তোমা ভিন্ন আমি আর কিছুই চাহি না।

32. I had rather be a door-keeper in the house of my God, than to dwell in the tents of wickedness.—Ps. LXXXIV. 10.

ঈশ্বরের গৃহে বরং আমি ছারবান্ হইব, কিন্তু অধ্বেদ্ধর শিবিরে অবস্থান করিব না।

33. Among the Gods there is none like unto thee, O Lord; neither are there any works like unto thy works. All nations whom thou hast made shall come and worship before thee,

O Lord; and shall glorify thy name. For thou art great, and doest wonderous things; thou art God alone.—PS. LXXXVI. 8-10.

হে প্রভো! দেবতাদিগের মধ্যে তোমার সদৃশ কেহ
নাই, এবং তোমার কার্য্যের তুল্য আর কোন কার্য্য নাই।
তোমার স্থষ্ট সকল জাতি, হে ঈশ্বর! তোমার নিকট উপস্থিত হইয়া তোমার পূজা করিবে; এবং তোমার নামের
গৌরব প্রকাশ করিবে। কেন না তুমি মহান্, এবং তুমি
আশ্চর্য্য কশ্ম সকল সম্পাদন কর; তুমি এক মাত্র ঈশ্বর।

34. Like as a father pitieth his children, so the Lord pitieth them that fear him. For he knoweth our frame; he remembereth that we are dust.—PS. CIII. 13, 14.

পিতা যেমন সন্তানদিগকে স্বেহ করেন, সাঁহারা ঈপরকে ভয় করেন তাঁহাদিগকে ঈপর সেইরূপ স্বেহ করেন। কেন না তিনি আমাদের প্রকৃতি জানেন আমরা যে ধূলিমাত্র ইহা তাঁহার স্মরণে আছে।

35. Thy testimonies are wonderful: therefore doth my soul keep them. The entrance of thy words giveth light; it giveth understanding unto the simple.—Ps. CXIX. 129, 130.

তোমার প্রমাণ দকল অতি অদ্ভূত; দূতরাং আমার আত্মা তাহাদিগকে বিশ্বাসি করে। তোমার বাকাও হৃদয়ে প্রবেশ করিয়া আলোক দেয়, অল্প বদ্ধিকে জ্ঞান দেয়।

36. They that sow in tears shall reap in joy.—Ps. cxxvi. 5.

যাহারা অশ্রুপাত করিয়া বপন করে তাহারা আনন্দের সহিত শস্য সংগ্রহ করে। 37. He telleth the number of the stars, he calleth them all by their names.—PS. CXLVII. 4.

তিনি তারকাগণকে গণনা করেন, ও তাহাদের নাম ধরিয়া আহ্বান করেন।

38. Trust in the Lord with all thine heart; and lean not unto thine own understanding.—PROV. III. 5.

সর্ব্বাস্তঃকরণে প্রভূ প্রমেশ্বরের উপর নির্ভর কর, আপন বৃদ্ধির উপর নির্ভর করিও না।

39. Keep thy heart with all diligence; for out of it are all the issues of life.—PROV. IV. 23.

হৃদয়কে সর্ব্যপ্রথম কর, কারণ ইহা হইতেই জীব-নের প্রবাহ বিনিঃস্থত হয়।

40 A virtuous woman is a crown to her husband: but she that maketh ashamnd is as rottenness in his bones.—PROV, XII, 4.

পুণ্যবতী স্ত্রী স্বামির শিরোভূষণ, কিন্তু যে স্ত্রী লক্ষিত করে সে তাঁহার অস্থির ক্লেদ।

41. He that oppresseth the poor reproacheth his Maker: but he that honoureth Him hath mercy on the poor.—PROV. XIV. 31.

যে ব্যক্তি দুংখির প্রতি অত্যাচার করে সে তাহার জ্রষ্টার অবমাননা করে, কিন্তু যে দুংখির উপর দয়া প্রকাশ করে, সে তাঁহাকে সম্মান করে।

42. The preparations of the heart in man and the answer of the tongue, is from the Lord.—PROV. xVI. 1.

মসুব্যের হৃদয়কে প্রস্তুত করিবার সাধন এবং জিহ্বার প্রকৃত উত্তর, প্রভূ পরমেশ্বর হইতে আসিয়া থাকে,।

43. Pride goeth before destruction, and an haughty spirit before a fall.—PROV. xVI. 18.

অহন্ধার বিনাশের অগ্রে গমন করে, এবং পতনের অগ্রে দন্ত।

44. He that is slow to anger is better than, the mighty; and he that ruleth his spirit than he that taketh a city.—PROV. XVI. 32.

যিনি ক্রোধে পরাঙ্মুথ তিনি বলবান্ হইতে শ্রেষ্ঠ, এবং যিনি নগর জয় করেন তাঁহা অপেক্ষা যিনি সীয় আত্মাকে শাসন করেন তিনি শ্রেষ্ঠ।

45. If thine enemy be hungry, give him bread to eat; and if he be thirsty, give him water to drink: for thou shalt heap coals of fire upon his head, and the Lord shall reward thee.—Prov. XXV. 21, 22.

যদি তোমার শত্রু ক্ষুধার্ত্ত হয় তাহাকে আহার দিবে, এবং যদি ভৃষ্ণার্ত্ত হয় জল পান করিতে দিবে। কেননা তদ্ধারা তুমি তাহার মস্তকে জলস্ত অঙ্গার রাশীকৃত করিবে এবং ঈশ্বর তোমাকে পুরস্কার দিবেন।

46. He that covereth his sins shall not prosper: but whoso confesseth and forsaketh them shall have mercy.—PROV. XXVIII. 13.

যে তাহার পাপ গোপন করে, তাহার উন্নতি হয় না, কিন্তু যে ব্যক্তি পাপ স্বীকার করে এবং তাহা পরিত্যাগ করে সে করুণা লাভ করে। 47. Vanity of vanities, saieth the Preacher, vanity of vanities; all is vanity.—Ecc. 1, 2.

উপদেষ্টা কহেন, অসারের অসার, অসারের অসার, তাৰৎই অসার।

48. And the work of righteousness shall be peace; and the effect of righteousness quietness and assurance for ever.—ISA, XXXII. 17.

শাধুতার কার্য্য শান্তি এবং সাধুতার ফল স্থিরতা ও আধস্ততা।

49. The mountains shall depart, and the hills be removed; but MY kindness shall not depart from thee, neither shall the covenant of MY peace be removed, saith THE LORD, that hath mercy on thee.—ISA. LIV. 10.

কৰণামর পরমেশ্বর বলেন—পর্বত সকল চলিরা বাইবে, এবং অধিত্যকা সকল ছানান্তরিত হইবে; কিন্তু আমার দরা কখনও তোমাকে পরিত্যাগ করিবে না, এবং আমার শান্তিপত্রের অঙ্গীকার কখনও ভক্ত হইবে না।

50. Behold, the Lord's hand is not shortened, that it connot save; neither his ear heavy, that it connot hear:—ISA. LIX. I.

দেখ প্রভু পরমেখরের হস্ত সঙ্কুচিত নহে যে, উহা মনুষ্যকে পরিত্রাণ করিতে পারে না, তাঁহার কর্ণও বিষর নহে যে, তিনি ভূনিতে পান না।

51. The heart is deceitful above all things, and desperately wicked: who can know it?—JER. XVII. 9.

হ্বদর সমুদার পদার্থ অপেক্ষা প্রতারক এবং অভীব দুই, কে জানিতে পারে ? 52. I am with thee, saith THE LORD, to save thee.—JER. XXXII.

পরমেশ্বর বলেন, আমি তোমায় মুক্ত করিবার জন্য তোমার সহিত অবস্থিতি করিতেছি।

53. The Lord will cast not off for ever, But though He causes grief, yet will He have compassion according to the multitude of His mercies.—JER. LAM. III. 31, 32.

পরমেশ্বর চিরজীবনের" জন্য কাহাক্রেও পরিত্যাগ করিবেন না, যদিও তিনি ক্লেশ দেন তথাপি তিনি তাঁহার অসীম করণা গুণে প্রেম করিবেন।

54. To the Lord our God belong mercies and forgivenesses though we have rebelled against him.—DAN. Ix. 9.

যদিও আমরা আমাদিগের প্রভূ প্রমেশ্বরের বিক্লছে। বিজোহাচরণ করিয়াছি, তথাপি তিনি দয়াল এবং ক্লমাল।

CHRISTIAN SCRIPTURES.

I. Blessed are the poor in spirit: for theirs is the kingdom of heaven. Blessed are they that mourn: for they shall be comforted. Blessed are the meek: for they shall inherit the earth. Blessed are they which do hunger and thirst after righteousness: for they shall be filled. Blessed are the merciful: for they shall obtain mercy. Blessed are the pure in heart: for they shall see God. Blessed are the peacemakers: for they shall be called the children of God. Blessed are they which are persecuted for righteousness' sake: for theirs is the kingdom of heaven.—MATT. V. 3-10.

দীনাত্মারা ধন্য, কারণ স্বর্গরাজ্য তাহাদেরই, শোকা-র্ভেরা ধন্য, কারণ তাহারা সাজ্জ্বনা পাইবে। স্থালৈর। ধন্য, কারণ তাহারা পৃথিবীর অধিকারী হইবে। ধর্মের জন্য ক্ষুধিত ও ভূষিত ব্যক্তিরা ধন্য, কারণ তাহারা পরিভূগু হইবে। দয়াবানেরা ধন্য, কারণ তাহারা দয়া পাইবে। নির্মালচিত্তেরা ধন্য, কারণ তাহারা ঈশ্বরের দর্শন পাইবে। শাস্তি সংস্থাপকেরা ধন্য, কারণ তাহারা ঈশ্বরের সস্তান বলিয়া বিখ্যাত হইবে। ধর্মের জন্য নিপীড়িত ব্যক্তিরা ধন্য, কারণ স্বর্গরাজ্য তাহাদেরই।

2. Neither do men light a candle, and put it under a bushel, but on a candlestick; and it giveth light unto all that are in the house. Let your light so shine before men, that they may see your good works, and glorify your Father which is in heaven.—MATT. V. 15. 16.

দীপ জালিরা লোকেরা করণ্ডিকাতলে রাথে না, কিন্তু দীপাধারের উপরেই রাথে; তাহাতে গৃহের সকলেই আলোক প্রাপ্ত হয়। মহুষাদিগের সমক্ষে তোমাদের আলোক উজ্জল হউক, যেন তাহারা তোমাদের সাধুকার্য্য দেখিয়া তোমাদের স্বর্গস্থ পিতার মহিমা কীর্ত্তন করে।

3. Ye have heard that it hath been said. An eye for an eye, and a tooth for a tooth: But I say unto you, that ye resist not evil: but whosoever shall smite thee on thy right cheek, turn to him the other also—MATT. V. 38-39.

তোমরা শুনিরাছ ইহা কথিত আছে, চক্ষুর পরিবর্ত্তে চক্ষু এবং দন্তের পরিবর্ত্তে দন্ত; কিন্তু আমি তোমাদিগকে কহিতেছি যে, তোমরা অত্যাচারের প্রতিরোধ করিও না; বরং যে তোমাদের দক্ষিণ গণ্ডে আঘাত করিবে, তাহাকে অন্য গণ্ড ফিরাইরা দিবে।

4. Be ye therefore perfect, even as your Father which is in heaven is perfect.—MATT. V. 40.

অতএব তোমাদের স্বর্গস্থ পিতা যেরপ পূর্ণ তোমরাও দেইরপ পূর্ণ হও।

5. Ye have heard that it hath been said. Thou shalt love thy neighbour, and hate thine enemy. But I say unto you, Love your enemies, bless them that curse you, do good to them that hate you, and pray for them which despitefully use you, and persecute you; That ye may be the children of your Father which is in heaven: for he maketh his sun to rise

on the evil and on the good, and sendeth rain on the just and on the unjust.—MATT. V. 43-45.

তোমরা শুনিয়াছ ইহা কথিত আছে, তুমি আপন প্রতিবাদিকে প্রীতি করিবে, কিন্তু শত্রুকে ম্বণা করিবে; কিন্তু আমি তোমাদিগকে কহিতেছি, শত্রুদিগকে প্রীতি কর, যাহারা তোমাদিগকে অভিশাপ দের তাহাদিগকে আশীর্কাদ কর, যাহারা তোমাদিগকে ম্বণা করে তাহাদিগের হিতসাধন কর এবং যাহারা তোমাদিগকে বিদ্বেষ এবং নির্যাতন করে তাহাদিগের জন্য প্রার্থনা কর। ইহা হইলে তোমরা তোমাদের স্বর্গস্থ পিতার উপযুক্ত সন্তান হইবে; যেহেতুক তিনি স্বীয় স্থ্যিকে সাধু এবং অসাধু সকলের উপর উদিত করেন এবং ধার্ম্মিক ও অধার্মিক সকলের উপর বারিবর্ষণ করেন।

6. But when thou dost alms, let not thy left hand know what thy right hand doeth.—MATT. VI. 3.

যথন তুমি দান কর, তোমার দক্ষিণ হস্ত যাহা করি-তেছে তাহা যেন তোমার বাম হস্ত জানিতে না পারে।

7. No man can serve two masters: for either he will hate the one, and love the other; or else he will hold to the one, and despise the other. Ye cannot serve God and mammon.

—MATT. VI. 24.

কেহই ছুই প্রভুর সেবা করিতে পারে না, কারণ হয় সে এক জনকে দ্বা। ও অপরকে প্রীতি করিবে; নতুবা সে এক জনের প্রতি অমুরক্ত হইবে ও অপরকে তুচ্ছ করিবে। তোমরা ঈশ্বর ও সংসারের যুগপং সেবা করিতে পার না। 8. Therefore I say unto you, take no thought for your life, what ye shall eat or what ye shall drink; nor yet for your body, what ye shall put on. Is not the life more than meat, and the body than raiment? Behold the fowls of the air: for they sow not, neither do they reap, nor gather into barns; yet your heavenly Father feedeth them. Are ye not much better than they? Which of you by taking thought can add one cubit unto his stature? And why take ye thought for raiment? Consider the lilies of the field, how they grow; they toil not, neither do they spin: and yet I say unto you, that even Solomon in all his glory was not arrayed like one of these. Wherefore, if God so clothe the grass of the field, which to-day is, and to-morrow is cast into the oven, shall he not much more clothe you, O ye of little faith! Therefore take no thought, saying, What shall we eat? or, What shall we drink? or, Where withal shall we be clothed? For your heavenly Father knoweth that ye have need of all these things. But seek ye first the kingdom of God, and his righteousness; and all these things shall be added unto you. Take therefore no thought for the morrow: for the morrow shall take thought for the things of itself. Sufficient unto the day is the evil thereof.—MATT. VI. 25.-34.

অতএব আমি বলিতেছি, কি আহার করিব, কি পান করিব, ইহা বলিয়া আপনার জীবনের জন্য ভাবিত হইও না; এবং কি পরিধান করিব বলিয়া শরীরের জন্যও ভাবিত হইও না, অন্ন অপেক্ষা জীবন এবং বস্ত্র অপেক্ষা भंदीत कि खक्रजत नटर ? आकारभंत शक्तिमिगरक रम्थ, তাহারা বপন করে না, সংগ্রহ করে না, এবং শস্যাগারে সঞ্চয় করে না, তথাপি তোমাদের স্বর্গীয় পিতা তাহাদিগকে আহার দেন। তোমরা কি তাহাদের অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ নহ? তোমাদের মধ্যে ভাবিত হইয়াই বা কে শরীরের দীর্ঘতা এক হস্ত রুদ্ধি করিতে পারে? এবং বজ্রের জন্যই বা কেন ভাবিত হও ? স্থলপদ্ম গুলির বিষয় ভাবিয়া দেখ. তাহারা কেমন বর্দ্ধিত হয়। তাহার। শ্রম করে না, বয়নও করে না; তথাপি আমি তোমাদিগকে বলিতেছি, সলিমান তাঁহার যাবতীয় ঐশ্বর্য্যের মধ্যে থাকিয়াও ইহার একটিরও মত বিভূষিত হন নাই। অতএব প্রমে**শ্বর যদি ক্ষেত্রের** তা, যাহা আন্য আছে, কলা চল্লিনিক্ষিপ্ত হইবে, তাহাকে এমন করিয়া সজ্জিত করেন, তবে হৈ অল্পবিশ্বাসী ব্যক্তিগণ! তিনি কি তোমাদিগকে তদপেক্ষা অধিক সজ্জিত করিবেন না ? অতএব আমরা কি আহার করিব, কি পান করিব. অথবা কি পরিধান করিব বলিয়া ভাবিত হইও না। কেন না তোমাদের যে এই সকল অভাব আছে তাহা তোমাদের স্বর্গীর পিতা জানেন। ঈশ্বরের রাজ্য এবং তাহার ধর্ম সর্বাত্যে অম্বেষণ কর, তাহা হইলে এই সকল দ্রব্যপ্ত তোমা-मिश्रात अपन रहेरव। कनाकात निमित्न चाविष्ठ ना, कना আপনার বিষয় আপনি ভাবিবে। প্রত্যেক দিনের কষ্ট্র তাহার পক্ষে যথেষ্ঠ।

9. Ask, and it shall be given you; seek and ye shall find; knock, and it shall be opened unto you; for every one that asketh receiveth; and he that seeketh findeth; and to him that knocketh it shall be opened.—MATT. VII. 8.

যাচ্ঞা কর, তোমাদিগকে দেওয়া হইবে; অশ্বেষণ কর, তোমরা প্রাপ্ত হইবে; আঘাত কর, তোমাদের জন্য দ্বার উন্দৃক্ত হইবে; কারণ যে কেহ যাচ্ঞা করে দে লাভ করে; যে অম্বেশ করে দে প্রাপ্ত হয়; এবং যে আঘাত করে তাহার প্রতি দ্বার উন্দুক্ত হয়।

10. Therefore all things whatsoever ye would that men should do to you, do ye even so to them.—MATT. VII. 12.

অন্যের নিক**ট তুমি** যাদৃশ ব্যবহার প্রয়ান কর, তুমি । তাহাদিগের প্রতি তাদৃশ ব্যবহার কর।

11. Verily I say unto you, if ye have faith as a grain of mustard seed, ye shall say unto this mountain, Remove hence to yonder place; and it shall remove; and nothing shall be impossible unto you.—MATT. xvII. 20.

সত্যই আমি তোমাদিগকে বলিতেছি, যদি একটি সর্থপ-কণার ন্যায়ও ভোমাদের বিশ্বাস থাকে, ভোমরা এই পর্ব্বতকে বলিবে, স্থানান্তর হও, অমনি উহা চলিয়া ঘাইবে, এবং তোমাদের পক্ষে কিছুই অসম্ভব রহিবে না।

verted and become as little children, ye shall enter into the kingdom of heaven. Whosoever therefore shall humble himself as this little child, the same is greatest in the kingdom of heaven.—MATT. XVIII. 3. 4.

আমি তোমাদিগকে সত্য করিয়া কহিতেছি যে, যদি তোমরা ক্লমকে পরিবর্তন করিয়া ক্লুড়ে শিশু সন্তানদিগের মত না হও, তোমরা স্বর্গরাজ্যে প্রবেশ করিতে পারিবে না। অতএব যে ব্যক্তি এই শিশুর ন্যায় আপনাকে ন্যু করিবে, সেই স্বর্গরাজ্যে শ্রেষ্ঠ।

13. Then came Peter to him, and said, Lord! how oft shall my brother sin against me, and I forgive him? till seven times? Jesus saith unto him, I say not unto thee, Until seven times; but, Until seventy times seven.—MATT. XVIII. 21, 22.

অতঃপর পিটর তাঁহার নিকট আসিয়া বলিলেন, প্রভো! আমার ভাতা আমার নিকট কতবার অপরাধ করিলে আমি তাঁহাকে ক্ষমা করিব, সপ্তবার পর্যান্ত ? ঈশ্ম তাঁহাকে বলিলেন, আমি তোমাকে সপ্তবার পর্যান্ত বলি নাই, কিন্তু সপ্ততি গুণ সপ্তবার পর্যান্ত।

14. For many are called and few are chosen.—MATT. xxII. 14.

কারণ অনেকেই আছুত হন, কিন্তু অল্প লোকই মনোনীত হইয়া থাকেন।

15. Master! which is the great commandment in the law? Jesus said unto him, thou shalt love the Lord thy God with all thy heart, and with all thy soul, and with all thy mind. This is the first and great commandment. And the second is like unto it, Thou shalt love thy neighbour as thyself.—MATT. XXII. 36-39.

প্রভো! শাস্ত্র মধ্যে কোন্ অনুজ্ঞার্টি প্রধান ? ঈশা বলিলেন, তুমি তোমার প্রভু পরমেশ্বরকে সমুদর হৃদরের সহিত, সমুদর আত্মার সহিত, এবং সমুদর মনের সহিত প্রীতি করিবে, ইহাই দর্ক প্রেষ্ঠ এবং প্রধান অনুজ্ঞা। দিতীর অনুজ্ঞা ইহার সদৃশ, তুমি তোমার প্রতিবাদিকে আত্মবং-প্রীতি করিবে। 16. A prophet is not without honour, but in his own country, and among his own kin, and in his own house:—MARK vI. 4.

ধর্মপ্রবর্ত্তক আপনার দেশ, আপনার গৃহ, ও আপনার জ্ঞাতিদিগের নিকট ভিন্ন আর কুত্রাপি শ্রদ্ধা বিবর্জ্জিত হয়েন না।

17. For what shall it profit a man, if he shall gain the whole world and lose own soul? Or what shall a man give in exchange for his soul?—MAKE. VIII.36-7.

ষদি আত্মা বিনষ্ট হয় তবে সমুদায় পৃথিবী লাভ করিয়া কি উপকার ? এই ভূমণ্ডলে এমন বস্তু কি আছে, আত্মার বিনিময়ে মনুষ্য যাহা প্রদান করিতে পারে ?

18. Suffer the little children to come unto me, and forbid them not: for of such is the kingdom of God.—MARK X. 14.

ঐ ক্ষুদ্র শিশুদিগকে আমার নিকট আসিতে দেও,নিবারণ ক্ষরিও না, কারণ ঈদৃশ লোকেরাই ঈশ্বরের রাজ্যের অধিকারী।

19. Whosoever will be great among you, shall be your minister: And whosoever of you will be the chiefest, shall be servant of all—MARK x. 43. 44.

যিনি তোমাদিগের মধ্যে মহৎ হইবেন, তিনি তোমা-দিগের পরিচারক হইবেন; এবং যিনি তোমাদিগের মধ্যে সর্ব্ব প্রধান হইবেন, তিনি সকলের ভৃত্য হইবেন।

20. Render to Cæsar the things that are Cæsar's and to God the things that are God's.—Mark. xII. 17.

যে সদমুর পদার্থে রাজার অধিকার তাহা রাজাকে সমর্পণ কর, এবং যাহা ঈশ্বরের তাহা ঈশ্বরকে সমর্পণ কর।

21. And why holdest thou the mote that is in thy brother's eye, but perceivest not the beam that is in thine own eye?—LUKE VI. 41.

আর তুমি তোমার ভাতার চক্ষুংস্থিত তৃণকণার প্রতি কেন দৃষ্টিপাত কর, কিন্তু আপনার চক্ষুংস্থিত ব্লহৎ কাঠ খণ্ড অবলোকন কর না የ

22. For a good tree bringeth not forth corrupt fruit, neither doth a corrupt tree bring forth good fruit. For every tree is known by his own fruit, of thorns men do not gather figs nor of bramble bush gather they grapes.—LUKE VI. 43, 44.

সুন্দর ব্লক্ষ কথন মন্দ ফল প্রদাব করে না অথবা মন্দ ব্লক্ষ হইতে কথন উত্তম ফল উৎপন্ন হয় না, কারণ ফল দারাই ব্লক্ষের পরিচয় পাওয়া যায়। কণ্টক ব্লক্ষ হইতে লোকে কথন ডুম্বর ফল সংগ্রহ করে না অথবা কণ্টকী কানন হইতেও জাক্ষা ফল সংগ্রহ করে না।

23. But he said, Yea rather, blessed are they that hear the word of God, and keep it.—LUKE. XI. 28.

কিন্তু তিনি বলিলেন, ধন্য তাহারাই ধাহারা ঈশ্বরের আজ্ঞা শ্রবণ করে ও পালন করে।

24. For whosoever exalteth himself shall be abased; and he that humbleth himself shall be exalted.—LUKE XIV. II.

যে কেহ আপনাকে বড় করে, তাহাকে নত করা হইবে; এবং যে ব্যক্তি আপনাকে অবনত করে, তাহাকে উন্নত-করা হইবে। 25. For he is not a God of the dead but of the living, for all live unto him.—LUKE xx. 38.

তিনি মৃতদিগের ঈশ্বর নহেন কিন্তু জীবিতদিগের, কারণ তাঁহাতেই সকলে জীবিত।

26. Verily, verily, I say unto thee, Except a man be born again, he cannot see the kingdom of God.—JOHN III. 3.

সত্য সত্য আমি তোমাকে বলিতেছি, দ্বিজাম্বা না হইলে কেহ ঈশ্বরের রাজ্য দেখিতে পায় না।

27. God is a spirit and they that worship him must worship him in spirit and truth.— JOHN IV. 24.

ঈশ্বর চৈতন্য স্বরূপ এবং যাহারা তাঁহার উপাসনা করিবে সত্যেতে ও ভাবেতে তাঁহার উপাসনা করিবে।

28. He that loveth his life shall lose it, but he that hateth his life in this world shall keep it unto life eternal.—JOHN XII. 25.

যিনি তাঁহাব জীবনকে ভালবাসেন তিনি তাহা হারা-ইবেন, কিন্তু যিনি এই পৃথিবীতে তাঁহার জীবনকে ডুচ্ছ করেন তিনি অনস্তকাল উহা রক্ষা করিবেন।

29. And ye shall know the truth and the truth shall make you free.—John xIII. 32.

তোমরা সত্যকে জানিবে এবং সত্য তোমাদিগকে স্বাধীন করিয়া দিবে।

30. For in him we live and move and have our being, as certain also of your own poets have said, for we are also his offspring.—Acts. xVII. 24.

কারণ তাঁহাতেই আমরা জীবিত আছি, তাঁহাতেই আমরা বিচরণ করি, এবং তিনিই আমাদের অন্তিত্বের মূল, তোমাদের কোন কবিও ঐ রূপ বলিয়া গিয়াছেন, কারণ আমরা সকলেই তাঁহারই সন্তান।

31. Neither shall they say, lo hear! or lo there! for behold the kingdom of God is within you. Rom.'x. P3.

তাহারা বলিবে না যে স্বর্গরাজ্য এখানে বা ওখানে, কারণ স্বর্গরাজ্য তোমাদিগের অন্তরে।

32. The wind bloweth where it listeth, and thou hearest the sound thereof, but canst not tell whence it cometh, and whither it goeth: so is every one that is born of the Spirit.—JOHN III. 8.

বায়ু যথা ইচ্ছা বহমান হয়, এবং তৃমি কেবল তাহার শব্দ শ্রুবণ কর, কিন্তু কোথা হইতে দেই বায়ু আদিতেছে এবং কোথা তাহা ঘাইতেছে, তাহা বলিতে পার না; প্রমাত্মা-জাত প্রত্যেক ব্যক্তিই এই রূপ।

33. Verily, verily, I say unto you, Except a corn of wheat fall into the ground and die, it abideth alone; but if it die, it bringeth forth much fruit. He that loveth his life shall lose it; and he that hateth his life in this world shall keep it unto life eternal.—JOHN. XII. 24, 25.

দত্য দত্য আমি তোমাদিগকে বলিতেছি, যদ্যপি গোধূম-বীজ ভূমিতে পতিত হইয়া বিনষ্ট না হয়, তবে তাহা একাকী থাকে; কিন্তু যদি উহা বিনষ্ট হয়, তবে প্রচুর ফল প্রদব করে। 'যে ব্যক্তি আপনার জীবনকে প্রীতি করে, সে তাহা হারাইবে; এবং যিনি এই পৃথিবীতে আপনার জীবনকে য়ণা করেন, তিনি তাহা অনস্ত জীবনের জন্য রক্ষা করিবেন।

34. Of a truth I perceive that God is no respector of persons: but in every nation he that feareth him, and worketh righteousness, is accepted with him.—Acts X. 34, 35.

সত্যই আমি দেখিতেছি ঈশ্বর ব্যক্তি বিশেষের মুখাপেক্ষা করেন না; কিন্তু জাতি মাত্রেরই মধ্যে যে কোন ব্যক্তি তাঁহাকে ভয় করে এবং ধর্ম কার্য্য করে, তিনি তাহাকে গ্রহণ করেন।

35. Be not overcome of evil, but overcome evil with good.—ROM. XII. 21.

অসাধৃত। ছারা প্রাজিত হইও না, কিন্তু সাধুতা দারা অসাধৃতাকে প্রজেয় কর।

36. Love worketh no ill to his neighbour; therefore love is the fulfilling of the law.—ROM. XIII. 10.

প্রীতি প্রতিবাদীর কোন অনিষ্ট করে না ; অতএব প্রীতিই সর্ব্যের সাধন।

37. Know ye not that ye are the temple of God, and that the spirit of God dwelleth in you?—I. COR. III. 16.

তোমরা কি জান না যে তোমরা পরমেশ্বরের মন্দির-চ্বরুপ, এবং তাঁহার আত্মা তোমাদিগের অন্তরে অধি-বাস করিতেছ?

38. Wherefore let him that thinketh he standeth take heed lest he fall,—I. Cor. x. 12.

অতএব যিনি মনে কবেন, আমি দণ্ডায়ম:ন রহিয়াছি, তিনি সাবধান হইবেন, যেন পভিত না হন।

39. Whether therefore ye eat, or drink, or whatsoever ye do, do all to the glory of God.—I. COR. x, 31.

অতএব কি ভোজন, কি পানু, যে কোন কার্স্য কর, সকলই ঈশ্বরের মহিমার জন্য সম্পাদন কর।

40. And though I bestow all my goods to feed the poor, and though I give my body to be burned, and have not charity, it profiteth me nothing. Charity suffereth long, and is kind; charity envieth not; charity vaunteth not itself, is not puffed up, doth not behave itself unseemly, seeketh not her own, is not easily provoked, thinketh no evil; rejoiceth not in iniquity, but rejoiceth in the truth; beareth all things, believeth all things, hopeth all things, edureth all things.—I. COR. XIII. 3-7.

যদিও আমি আমার সকল সম্পৃত্তি দু:খিদিগের আহারের জন্য দান করি, এবং যদিও আমার শবারকে দগ্ধ হইতে দি, তথাপি প্রীতি না থাকিলে উহাতে আমার কোন লাভ নাই। প্রীতি দীর্ঘক।ল সহ্য করে এবং দয়ালু; প্রীতি পবদেষ করে না, প্রীতি আত্মগ্রাঘা করে না, এবং ফীত হয় না। ইহা অহুচিত ব্যবহার করে না, স্বার্থ অম্বেষণ করে না, সহজে ক্রুদ্ধ হয় না; অনিষ্ট চিন্তা করে না, অধর্মে আনন্দিত হয় না, কিন্তু সত্যেতই আনন্দিত হয়; তাবৎ বহন করে, তাবৎ বিশ্বাস করে, তাবৎ আশা করে এবং তাবৎ সহ্য করে।

41. The letter killeth, but the spirit giveth life.—II. COR. III. 6.

ভাষা বিনাশ করে, কিন্তু তাহার ভাব জীবন দান করে।

42. Let us not be weary in well doing: for in due season we shall reap, if we faint not.—GAL. VI. 9.

আমরা যেন সৎকর্মে কখন পরিপ্রান্ত না হই, কারণ যদি আমরা ক্লান্ত না হই, তবে আমরা যথা সময়ে ফল লাভ করিব।

43. Rejoice in the Lord always: and again I say, Rejoice.—PIIIL. IV. 4.

সর্বদা ঈশ্বরেতে আনন্দিত হও ; আমি পুনরায় বলিতেছি, ঈশ্বরেতে আনন্দিত হও।

- 44. Pray without ceasing.—I. THESS. V. 17. অবিশ্রান্ত প্রার্থনা কর।
- 45. Prove all things; hold fast that which is good.—I. THESS. V. 21.

তাবৎ বিষয় বিচার কর; যাহা ভাল তাহা দৃঢ়রূপে অব-লম্বন কর।

46. In like manner also, that women adorn themselves in modest apparel, with shamefacedness and sobriety; not with broided hair, or gold, or pearls or costly array; but (which becometh women professing godliness) with good works.—I. TIM. II 9. 10.

তদ্রপ নারীগন লজ্জা ও স্থালিত। সহকারে ডদ্র বসনে আপনাদিগকে স্থাজ্জিত করুন; কেশবিন্যাস, স্বর্ণ মুক্তা, অথবা বহুমূল্য বেশে ভূষিত না হইয়া, সাধ্বী দ্রীগণের উপযুক্ত সৎক্রিয়া দ্বারা স্থাশেভিত হউন।

47. Rebuke not an elder, but entreat him as a father; and younger men as brethren; the elder women as mothers; the younger as sisters, with all purity.—I. TIM. V. 1. 2.

প্রাচীনকে তিরস্কার করিও না, কিন্তু তাঁহাকে পিতার ন্যায় ও যুবকদিগকে ভাতার ন্যায়, প্রাচীনাদিগকে মাতার ন্যায় এবং তরুণবয়স্কাদিগকে বিশুদ্ধমনে ভগিনীর ন্যায়, বিনয় সম্ভাষণ করে।

48. For we brought nothing into this world, and it is certain we can carry nothing out. And having food and raiment let us be therewith content.—I. TIM. VI. 7. 8.

কারণ আমরা এই পৃথিবীতে কিছুই লইয়া আদি নাই। এবং ইহা নিশ্চয় বে, আমরা কিচুই লইয়া যাইতে পারি না। অতএব আমরা যেন অন্ন বন্ত্রেই সম্ভষ্ট থাকি।

49. Faith is the substance of things hoped for, the evidence of things not seen.—HEB. XI. I.

বিশ্বাদ প্রত্যাশিত বিষয়ের দারাংশ এবং অদৃশ্য পদার্থের প্রমাণ স্বরূপ।

50. My little children, let us not love in word, neither in tongue; but in deed and in truth.—I. JOHN III. 18.

হে শিশু সন্তানগণ! আমরা যেন মুখে প্রীতি না করি কিন্তু কার্য্যেতে এবং সত্যেতে।

51. He that loveth not knoweth not God; for God is love.—I. JOHN IV. 8.

যে প্রীতি করে না দে ঈশ্বরকে জানে না, কারণ ঈশ্বর প্রীতি স্বরূপ। 52. God is love; and he that dwelleth in love, dwelleth in God, and God in him.—I. JOHN IV. 16.

ঈশ্বর প্রীভিম্বরূপ, অতএব যে প্রীভিতে অধিবাদ করে; দে ঈশ্বরেতে অধিবাদ করে এবং ঈশ্বর তাহাতে অধিবাদ করেন।

53. There is no fear in love; but perfect love casteth out fear: because fear hath torment. He that feareth is not made perfect in love.—I. JOHN IV. 18.

প্রীতিতে ভয় নাই; কিন্তু পূর্ণ প্রীতি ভয়কে দূরে নিক্ষেপ করে; কারণ ভয়ে গ্লানি আছে। স্বে ভয় করে দে প্রীতিতে পূর্ণভাব পায় না।

54. If a man say, I love God, and hateth his brother, he is a liar: for he that loveth not his brother whom he hath seen, how can he love God whom he hath not seen?—I. JOHN. IV. 20.

যদি কেহ বলে, আমি ঈশ্বরকে প্রীতি করি, অথচ ভাতাকে হ্বণা করে, সে মিথ্যাবাদী; কারণ যে দৃশ্যমান ভাতাকে প্রীতি করে না, সে অদৃশ্য ঈশ্বরকে কিরুপে প্রীক্তি করিতে পারে।

AL KORAN.

I. O men of Mecca, serve your Lord who hath created you, and those who have been before you: peradventure ye will fear him; who hath spread the earth as a bed for you, and the heaven as a covering, and hath caused water to descend from heaven, and thereby produced fruits for your sustenance.—CHAP. II.

হে মেক্কা বাসিগণ! যিনি ভোমাদিগকে এবং ভোমাদিগের পূর্বতন মনুষ্যদিগকে হজন করিয়াছেন তাঁহার সেবা কর। ভোমরা তাঁহাকে ভয় কর, যিনি ভোমাদের জন্য ধরাকে শ্যারপে এবং আকাশকে চন্দ্রাতিপের ন্যায় বিস্তার করিয়াছেন, যিনি বারিকে আকাশ হইতে নিপাতিত করিয়াছেন এবং তদ্ধারা ভোমাদের পোষণ জন্য ফল সকল উৎপন্ন করিয়াছেন।

2. Dost thou not know that God is almighty? Dost thou not know that unto God belongeth the kingdom of heaven and earth? neither have ye any protector or helper except God.—CHAP. II,

তুমি কি জান না যে ঈশ্বব সর্ব্বশক্তিমান ? তুমি কি জান না যে আকাশ এবং পৃথিবী ঈশ্ববের রাজ্য ? তিনি ভিন্ন তোমাদের রক্ষক ও সহায় আর কেহ নাই।

3. He who resigneth himself to God, and doth that which is right, he shall have his reward with his Lord; there shall come no fear on them, neither shall they be grieved.—CHAP. II.

যিনি ঈশ্বরেতে আত্মসমর্পন করেন এবং সদমুষ্ঠান করেন, তিনি তাঁহার প্রভুর নিকট পুরস্কার পাইবেন। তাঁহাদিগের উপর কোন ভয় আদিবে না, এবং তাঁহাদিগের ক্লেশও পাইতে হইবে না।

4. To God belongeth the east aud the west; therefore, whithersover ye turn yourselves to pray, there is the face of God; for God is omnipresent and omniscient.—CHAP. II.

পূর্ব্ব পশ্চিমদিক্ উভয়ই ঈশ্বরের। অতএব যে দিকে
ফিরিয়া তোমরা উপাদনা করিবে দেই দিকেই তাঁহার
আনন, কেননা পরমেশ্বর সর্বব্যাপী এবং সর্বব্যঃ

5. But as for those who repent and amend, and make known what they concealed, I will be turned unto them, for I am easy to be reconciled and merciful.—CHAP. II.

কিন্তু যাহারা অনুতাপ করে, আপনাদিগকে সংশোধন করে এবং অন্তরস্থ গুপু বিষয় সকল প্রকাশ করে, আমি তাহাদিগের দিকে ফিরিব, কারণ আমি সহজেই পুনর্মিলিত হই এবং তামি করুণাময়।

6. Your God is one God; there is no God but He the most merciful.—CHAP. II.

তোমাদের ঈশ্বর একই ঈশ্বর; সেই দর্ব্বমঙ্গলময় ভিন্ন আর ঈশ্বর নাই।

7. God is the patron of those who believe; he shall lead them out of darkness into light.

—CHAP. II.

যাঁহারা বিশ্বাস করেন ঈশ্বর তাঁহাদের সহায়। তিনি তাঁহাদিগকে অন্ধকার হইতে আলোকে লইয়া যাইবেন। 8. If God help you, none shall conquer you; but if he desert you, who is it that will help you after him? Therefore in God let the faithful trust.—CHAP. III.

যদি ঈশ্বর তোমাদিগকে দাহায্য করেন, কেহই তোমাদিগকে পরাজয় করিতে পারে না। কিন্তু তিনি যদি
তোমাদিগকে পরিত্যাগ করেন, তবে আর কে তোমাদিগকে দাহায্য করিবে? অতএব বিশ্বাদিগণ ঈশ্বরে
নির্ভর কর্মন।

9. Whatever good befalleth thee, O man! it is from God; and whatever evil befalleth thee, it is from thyself. CHAP. IV.

হে মানব! তোমার যে কোন মঙ্গল ঘটনা হয়, তাহা ঈশ্বর হইতে; এবং যে কোন অমঙ্গল ঘটনা হয়, তাহা আপনা হইতে!

10. Assist one another, according to justice and piety, but assist not one another in injustice and malice.—CHAP, V.

ন্যায় এবং ধর্ম অনুসারে পরস্পরের সাহায্য কর, কিন্তু অন্যায় ও অসুয়াতে পরস্পরের সাহায্য করিও না।

- II. O true believers! take care of your souls. He who erreth shall not hurt you, while ye are rightly directed.—CIIAP. V.
- হে প্রকৃত বিশ্বাসিগণ! তোমাদিগের আত্মার জন্য যত্মবান্ হও। তোমরা সত্য পথে চলিলে বিপথগামী ব্যক্তি তোমাদিগের অনিষ্ট শাধন করিতে পারিবে না।
- 12. He causeth the morning to appear; and hath ordained the night for rest, and the sun and

the moon for the computing of time. This is the disposition of the mighty, the wise God. It is he who hath ordained the stars for you, that ye may be directed thereby in the darkness of the land, and of the sea.—CHAP. vI.

তিনি প্রভাতকে উদয় করেন, এবং বিশ্রাম জন্য রজনী ও কালগণনার নিমিত্ত, চক্রস্থাকে নিয়োজিত, করিয়াছেন। ইহা পরাক্রমশালী ও জ্ঞানবান্ ঈশ্বরের বিধান। তিনিই তোমাদিগের জন্য তারা সকলকে নিয়োগ করিয়াছেন, যে তোমরা ভূমি এবং সমুদ্রস্থ অন্ধকার মধ্যে তদ্পারা পরি-চালিত হইবে।

13. There is no God but he, the creater of all things: therefore serve him; for he taketh care of all things. The sight comprehendeth him not, but he comprehendeth the sight; he is the incomprehensible, the wise.—CHAP. vI.

তিনি ভিন্ন আর ঈখর নাই, তিনি যাবতীয় পদার্থের সৃষ্টিকর্তা; অতএব তাঁহার দেবা কর, কেননা তিনি যাবতীয় পদার্থের প্রতি যত্ববান্। চক্ষু তাঁহাকে অবধারণ করিতে পারে না, কিন্তু তিনি চক্ষুকে অবধারণ করেন। তিনি বোধাতীত ও জ্ঞানবান্।

14. Whosoever confideth in God cannot be deceived; for God is mighty and wise.—CHAP. VIII.

যাঁহারা ঈশ্বরে বিশ্বাস স্থাপন করেন তাঁহারা প্রতারিত হইবার নহেন; কেন না ঈশ্বর পরাক্রমশালী এবং জ্ঞানবান।

15. Is there any of your compainons who directeth unto the truth? Say, God directeth unto the truth.—CHAP, x.

ভোমাদের সহদরদিগের নধ্যে কি কেহ ভোমাদিগকে সভ্যের পথে লইয়া যায় ? বল, ঈশ্বরই সভ্যের পথে লইয়া যান।

16. They who believe and fear God, shall receive good tidings in this life, and in that which is to come.—CHAP. x.

গাঁহারা ঈশ্বরকে বিশ্বাদ এবং ভয় করেন, তাঁহারা ইহ জীবনে এবং প্রকালে সুসংবাদ লাভ করেন।

17. I expect my reward from God alone, and I am commanded to be one of those who are resigned unto him.—CHAP. X.

আমি কেবল ঈশ্বরের নিকটেই পুরস্কারের প্রত্যাশা করি, এবং তাঁহাতে গাঁহারা আত্মসমর্পণ করিয়াছেন আমি তাঁহাদিগেরই একজন হইতে আদিষ্ট হইয়াছি।

18. There is no creature which creepeth on the earth, but God provideth its food; and he knoweth the place of its retreat, and where it is laid up.—CHAP. XI.

মৃত্তিকার বিচরণ করে এমত একটিও ক্ষুদ্বনীট নাই, ঈশ্বর যাহার আহারের উপায় না করেন; ইহার আরাম-স্থান এবং কোথায় ইহারক্ষিত হয়, তিনি সমস্ত অবগত আছেন।

19. Wherefore preserve with patience; for the prosperous issue shall attend the pious.— CHAP. XI.

অতএব সহিষ্ণ তার সহিত দৃঢ়নিষ্ঠ হও, কারণ ধংশি ক-দিনের সোভাগ্য অবশ্যই ফলিবে। 20. My support is from God alone; on him do I trust, and unto him do I turn me.—CHAP. XI.

ঈশ্বর হইতেই আমার উপজীবিকা; তাঁহার উপরেই আমি নির্ভর করি, এবং তাঁহার দিকেই আমি আমাকে ফিরাই।

21. O Lord, a prison is more eligible unto me than the crime to which they invite me; but unless thou turn aside their snares from me, I shall youthfully incline unto them, and I shall become one of the foolish.—CHAP. XII.

হে প্রভা! তাহারা আমাকে যে পাপে আরুষ্ট করে তাহা অপেক্ষা কারাগারও আমার মনোনীত। কিন্তু যদ্যপি তুমি তাহাদের পাশ আমা হইতে অস্তরিত না কর, তাহা হইলে আমি যুবা প্রকৃতি অনুসারে সেই দিকে নত হইব, এবং নির্ব্ব দ্ধিদিগের মধ্যে একজন হইয়া পড়িব।

22. Despair not of the mercy of God; for none despaireth of God's mercy except the unbelieving people.—CHAP. XII.

ঈশ্বরের করুণায় নিরাশ হইও না, কেননা অবিশাসী লোক ব্যতীত আর কেহ ঈশ্বরের করুণায় নিরাশ হয় না।

23. As to those who believe not in the life to come, their hearts deny the plainest evidence, and they proudly reject the truth.—CHAP. xvI.

যাহার। পরলোকে বিশ্বাস করে না, তাহাদিগের মন অতি স্পষ্ট প্রমাণ অসীকার করে, এবং তাহারা গর্মিত ভাবে সতাকে অগ্রাহ্য করে। 24. God hath brought you forth from the wombs of your mothers; ye knew nothing, and he gave you the senses of hearing, seeing and understanding, that ye might give thanks.—CHAP. XVI.

পরমেশ্বর তোমাদিগকে মাতৃগর্ভ হইতে প্রস্থৃত করিয়া-ছেন। তোমরা কিছুই জানিতে না, তিনি তোমাদিগকে প্রবণ ও দর্শনৈন্দ্রিয় এবং বুদ্ধিশক্তি প্রদান করিয়াছেন যে তোমরা তাঁহাকে ধন্যবাদ দিবে।

25. Thy Lord hath commanded that ye worship none besides him; and that ye shew kindness unto your parents, whether the one of them or both of them, attain to old age with thee. Wherefore say not unto them, Fy on you! neither reproach them, but speak respectfully unto them; and snbmit to behave humbly towards them, out of tender affection, and say O Lord! have mercy on them both, as they nursed me when I was little. Your Lord well knows that which is in your souls, whether ye be men of integrity; and he will be gracious unto those who sincerely return unto him.—CHAP. XVII.

তোমার প্রভু আদেশ করিয়াছেন, যে তোমরা তাঁহাকে ভিন্ন আর কাহারও পূজা করিবে না; এবং তোমাদের পিতা কিন্তা মাতা অথবা উভরে তোমাদের আশ্ররে থাকিয়া বৃদ্ধ হইলেও তাঁহাদের প্রতি দয়া প্রদর্শন করিবে। অভএব, আপনাদিগকে ধিক! কখন তাঁহাদিগকে এরপ বলিবে না। তাঁহাদিগকে অনুযোগও করিবে না, কিন্তু তাঁহাদিগের প্রতি সন্ধান সহকারে কথা কহিবে, এবং সুকোমল প্রীতির বশবর্তী হইরা' তাঁহাদের প্রতি বিনমু ব্যবহার স্বীকার করিবে, এবং

এই বলিয়া প্রার্থনা করিবে, হে প্রভা! আমি যখন ক্ষুদ্র ছিলাম তখন ইহঁারা আমাকে প্রতিপালন করিয়াছেন, ইহাঁদের উপর করুণা প্রকাশ কর। তোমাদের অন্তরে কি আছে এবং তোমরা সাধু ব্যক্তি কি না তোমাদের প্রভু তাহা প্রকৃষ্টরূপে জানেন, এবং যাহারা সরল হৃদয়ে তাঁহার নিকটে প্রত্যাবর্ত্তন করিবে, তিনি তাহাদিগের প্রতি সদয় হইবেন।

26. There are some men who serve God in a wavering manner, standing as it were on the verge of the true religion. If good befall one of them, he resteth satisfied therein? but if any tribulation befall him, he turneth himself round, with the loss both of this world and of the life to come.—CHAP. XXII,

কতকগুলি লোক আছে, তাহারা যেন সত্যধর্মের পার্শে দণ্ডায়মান হইয়া চঞ্চলভাবে ঈশ্বরের সেবা, করে। যদি তাহাদের মধ্যে কাহারও কোন শুভ ঘটনা হয়, সে তাহাতে সম্ভুষ্ট থাকে, কিন্তু কোন বিপদ হইলেই ফিরিয়া বসে, এরং ইহলোক ও পরলোক উভয়ই হারায়।

27. Wherefore be you constant at prayer; and give alms; and adhere firmly unto God He is your master; and he is the best master, and the best protector.—CHAP. XXII.

অতএব নিত্য উপাসনা কর, এবং দান কর, ও ঈশব-নিষ্ঠ হও। তিনি তোমাদিগের প্রভূ; তিনি তোমাদিগের সর্ক্ষোৎকৃষ্ট প্রভূ এবং সর্ক্ষোৎকৃষ্ট রক্ষক।

28. Be constant at prayer; for prayer preserveth a man from filthy crimes, and that which is blameable; and the remembering of God is surely a most important duty.—CHAP. XXIX.

নিত্য উপাদনা কর, কারণ উপাদনা মন্ত্যুকে জবনা অপরাধ এবং যাহা কিছু দূষণীর তাহা হইতে রক্ষা করে; আর ঈশ্বরকে শারণ করা নিশ্চরই মন্ত্রের একটি অতি গুরুতর কর্ত্ত্য।

29. This present life is no other than a toy, and a plaything; but the future mansion of paradise is life indeed: if they knew this, they would not prefer the former to the latter.— CHAP. XXIX.

এই বর্ত্তমান জীবন ক্রীড়ার দ্রব্য ভিন্ন আর কিছুই নহে;
কিন্তু ভাবী স্বর্গনিকেতন যথার্থই জীবন। যদ্যপি তাহার।
ইহা জানিত তাহা হইলে বর্ত্তমান জীবনকে ভাবী জীবন
অপেক্ষা মনোনীত করিত না।

30. The prophet is nigher unto the true believers than their own souls.—CHAP. XXXIII.

প্রেরিত মহাজন বিশ্বাদিগণের নিজ আত্মা অপেকা তাঁহাদের অধিকতর নিকটবর্ত্তী।

31. He who forgiveth, and is reconciled unto his enemy shall receive his reward from God.—CHAP. XLII.

যিনি ক্ষমা করেন এবং শক্রদিগের সহিত পুনর্মি-লিত হন, তিনি ঈশ্বরের নিকট পুরস্কার লাভ করিবেন।

32. It is he who sendeth down secure tranquillity into the hearts of the true believers, that they may increase in faith beyond their former faith—CHAP. XLVIII.

তিনি প্রকৃত বিশ্বাসিদিগের জ্দিয়ে নিঃশক শান্তি প্রেরণ করেন, যে তাঁহারা পূর্ব্বাপেক্ষা বিশ্বাদে বর্দ্ধিত হইতে • পারিবেন। 33. Verily the true believers are brethren; wherefore reconcile your brethren.—CHAP. XLIX.

সত্যই প্রকৃত বিশ্বাদিগণ পরম্পর ভাতৃত্বরূপ; অতএব ভাতৃগণের সঙ্গে ঐক্য সম্পাদন কর।

AVESTA.

I. He who resigns himself to Him, the Greatest of all, he teaches also His creatures to know Him as the Greatest.—YACNA XIX. 30.

গিনি সর্ব্বশ্রেষ্ঠ পরমেশ্বরে আত্মমর্পণ করেন, তিনি তাঁহার জীবদিগকেও তিনি যে সর্ব্বশ্রেষ্ঠ, ইহা জানিতে দেন।

2. All renown unites itself with the pure man through true thinking, speaking, and acting.—YACNA XIX. 40.

সত্য চিন্তা, সত্য কথন ও সদসুষ্ঠান দারা তাবৎ যশ বিশুদ্ধ ব্যক্তির সহিত মিলিত হয়।

3. May we thus attain to that which is so, to union with Thy purity to all eternity.—YACNA XL. 5, 6.

আমরা যেন এইরূপে অনস্ত কাল পর্য্যস্ত তোমার পবি-ত্রতার সহিত প্রকৃত যোগ প্রাপ্ত হই।

4. May we attain Thy good kingdom, Mazda-Ahura, for ever. Thou art our Ruler, possessed of the good kingdom for men as well as for women.—YACNA XII. 3, 4.

হে মাজদা-আহরা! আমরা যেন চিরকালের জন্য তোমার মঙ্গল রাজ্য প্রাপ্ত হই। তুমি আমাদের শাসন কর্ত্তা, তুমি নরনারী উভয়ের জনা মঙ্গল রাজ্য অধিকার করিয়া বহিয়াছ।

5. Mayest Thou be to us life and body.—YACNA xII. 7.

তুমি যেন আমাদের দেহ প্রাণ হও।

6. Immortality is the wish of the soul of the pure.—YACNA. XIIV. 7.

विश्वक्षपिरगत आशा अमत्य रेष्टा करतन ।

7. To the serviceable wise is through the Holy spirit Friend, Brother, Father, Ahura-Mazda.—YACNA XIIV. II.

হিতকারী জ্ঞানবান্ ব্যক্তিদিগের পক্ষে পবিত্র আত্মা দারা আহ্বরা মাজ্দা ভ্রাতা পিতা বন্ধু হয়েন।

8. May Thy kingdom come, O Ahura, wherewith thou makest good for the right-living poor.—YACNA LII. 9.

হে আহরা ! তোমার রাজ্য আগমন করুক, যদ্বারা ভূমি শাধুজীবন দরিভদিগকে পুরস্কার কর।

9. These Gathas are for our soul both food and raiment. May they bring us good reward, much reward, pure reward, for the next world, after the separation of the vital powers and consciousness.—YACNA. LIV. 6-8.

এই সমস্ত গাথা আমাদের আত্মার পক্ষে উভর আহার এবং পরিচ্ছদ। জীবনী শক্তি এবং চৈতন্যের বিচ্ছেদ হইলে পরলোকের জন্য যেন তাহারা আমাদিগকে সৎপুর-স্কার, প্রচুর পুরস্কার, বিশুদ্ধ পুরস্কার আনিয়া দেয়।

10. This victory give we: namely, the prayer which has a good seed. Which is united with

٠,

purity, united with wisdom, whose seeds are good thoughts, words and works.—YACNA LVII. 1-3.

সেই প্রার্থনা দারা আমরা তোমার জয় ঘোষণা করি যাহাতে একটা উত্তম জীব নিহিত আছে, যাহা পবিত্রতার সহিত সংযুক্ত, জ্ঞানের সহিত সংযুক্ত, এবং সাধুচিন্তা, সাধু বাক্য ও সদমুষ্ঠান যাহার বীজ।

11. In prayer we rejoice, Ahura-Mazda, in prayer we desire, to prayer we submit ourselves, on prayer we call.—YACNA LVII 6. 7.

হে আছরা মাজ্দা! প্রার্থনাতে আমরা আনন্দিত হই, প্রার্থনাতে আমরা অভিলাষ করি; আমরা আপনাদিগকে প্রার্থনার অধীন করি; প্রার্থনাকেই আমরা ডাকি।

12. I praise and exalt (thee) the Creator Ormazd, the brilliant, Majestic, Omniscient, the Perfecter of deeds, the Lord of Lords, the Prince over all princes, the Protector, the the Creator of the created, the Giver of daily food, Powerful, Good, Strong, Old, Forgiving, Granter of forgiveness, Rich in Love, Mighty and Wise, the pure Supporter.—KHORDA 7.

হে ভ্রষ্টা অরমজ্দ! আমি তোমার ষশঃকীর্ত্তন করি এবং তোমাকে মহীরান্ করি। তুমি উজ্জ্বল, ঐশ্বর্যাশালী, দর্বজ্ঞ, তুমি দকল কার্য্যের পূরক, প্রভুর প্রভু, রাজাধিরাজ, রক্ষক, দৃষ্টবস্তার ভ্রষ্টা, দৈনিক আহার প্রদাতা, ক্ষমতাবান, মঙ্গলমর, শক্তিমান্, পুরাণ, ক্ষমাবান্, ক্ষমাপ্রদাতা, প্রমপূর্ণ, প্রভাবশালী এবং জ্ঞানবান্, ও পবিত্র প্রতিপালক।

13. The smiting that comes from above we praise.—Khorda XVI. 4. GAH. 10.

উদ্ধ হইতে যে কশাঘাত আইদে আমরা তাহার প্রশংসা করি।

14. Charity, which feeds the poor, praise we.

-Khorada XVIII. 7.

যে প্রীতি দরিদ্রকে আহার দান করে, আমরা তাহার প্রশংসা করি।

15. Ahura-Mazda created the creatures very good, very fair, very high, very furthering, very lofty. That they might make the world progressive, not growing old, not dying, not becoming corrupt and stinking, but ever-living, ever-profiting,—a kingdom as one wishes it; that the dead may arise, and there may come Immortality for the living, which furthers the world at will.—KHORDAH. XXXV. 10, 11.

অহরা মাজ্দা জীবদিগকে অতি উত্তম, অতি সুন্দর,
অতি উচ্চ, অতি উন্নতিশীল, এবং অতিশয় মহৎ করিয়া
ক্ষল করিয়াছেন, যে তাহারা পৃথিবীকে উন্নতিশীল
করিবে, পুরাতন হইতে দিবে না, মৃত হইতে দিবে না,
দূষিত এবং পৃতিগন্ধময় হইতে দিবে না, কিন্তু চিরজীবস্ত
করিবে, চিরফলভোগী করিবে, এবং একটী ইচ্ছানুরপ রাজ্য
করিবে; যে মৃতেরা উথিত হইতে পারিবে এবং জীবিতদিগের জন্য দেই অমরত্ব আদিবে যাহা ইচ্ছাক্রমে পৃথিবীকে
উন্নত করে।

16. The sins against father, mother, sister, brother, wife, child, against spouses, against the superiors, against my own relations, against those living with me, against those who possess equal property, against the neighbours, against the inhabitants of the same town, against ser-

vants, every unrighteousness through which I have become amongst sinners; of these sins repent I with thoughts, words, and works, corporeal as spiritual, earthly as heavenly, with the three words: Pardon, O Lord! I repent of sins.—KHORDAH, XLV. 6.

পিতা, মাতা, ভগিনী, ভাতা, ভার্য্যা, সন্তান, পরিণিতব্যক্তি, গুরুজন, আত্মীয়, সহবাদী, সমান বিভবশালী,
প্রতিবাসী, এক নগরবাসী, এবং ভূত্য, ইহাদের বিরুদ্ধে
আমি যে সমস্ত পাপ করিয়াছি এবং প্রত্যেক অধর্ম যদ্ধারা
আমি পাপীদিণের মধ্যে পরিগণিত হইয়াছি; সেই সমুদর
পাপের জন্য আমি কারিক এবং অধ্যাত্মিক, পার্থিব এবং
স্বর্গার চিন্তা, বাক্য এবং কার্য্য দ্বারা বাক্য ত্রিতয় সহকারে
অন্তাপ করি; হে প্রভো! আমাকে ক্ষমা কর আমি
পাপের জন্য অন্তাপ করি।

17. All that I ought to have thought and have not thought, all that I ought to have spoken and have not spoken, all that I ought to have done and have not done; pardon, I repent with Patet. All that I ought not to have thought and yet have thought, all that I ought not to have spoken and yet have spoken, all that I ought not to have done, and yet have done; pardon, I repent with Patet. All and every kind of sin which men have committed because of me, or which I have committed because of men, pardon, I repent with Patet.—KHORDAH. xLVI. 24-26.

যাহা আমার চিন্তা করা উচিত ছিল এবং চিন্তা করি নাই, যাহা আমার বলা উচিত ছিল এবং বলি নাই, যাহা আমার করা উচিত ছিল এবং করি নাই, দে সমস্ত ক্ষমা কর, আমি পাতেত সহকারে অনুতাপ করিতে ছি। যাহা ٠٠, ٠

আমার চিন্তা করা অন্থূচিত ছিল এবং তত্রাপি চিন্তা করিয়াছি, যাহা আমার বলা অন্থূচিত ছিল এবং তত্রাপি বলিয়াছি, যাহা আমার করা অন্থূচিত ছিল এবং তত্রাপি করিয়াছি, সে সমস্ত ক্ষমা কর, আমি পাতেত সহকারে অন্থূতাপ করিতেছি। যত প্রকার পাপ লোকে আমার জন্য করিয়াছে কিম্বা আমি লোকের জন্য করিয়াছি, সে সমস্ত ক্ষমা কর, আমি পান্তন্তু সূহকারে অনুভাপ করিতেছি।

18. Learn purity! Be worthy of good praise! May the mind think good thoughts, the words speak good, the works do good! May all wicked thoughts hasten away, all wicked words be diminished, all wicked works be burnt up.— KHORDAH XLIX. 5.

পবিত্রতা শিক্ষা কর, সংপ্রশংসার উপযুক্ত হও, মন সচ্চিত্তা চিন্তা করুক, বাক্য শুভ বলুক, কার্য্য শুভ করুক, ষাবতীয় দৃষ্ট চিন্তা পলায়ন করুক, যাবতীয় দৃষ্ট বাক্য স্থাস হউক, যাবতীয় দৃষ্টকার্ম্য দগ্ধ হউক।

19. Be modest with friends, clever and well-wishing. Be not cruel. Be not warth-ful-minded. Commit no sin through shame. Be not covetous, Torment not. Cherish not wicked envy, be not haughty, treat no one despitefully, cherish no lust. Rob not the property of others. Keep thyselves from wives of others. Do good works with good activity.—KHORDAII. **LIX. 5.

বান্ধবের নিকট বিনমু হও, স্থবোধ এবং হিতৈষী হও। নিষ্ঠুর হইও না। ক্রুদ্ধমনা হইও না। লজ্জা প্রযুক্ত পাপ কঝি,৪ না। লোভী হইও না। যন্ত্রণা দিও না।

(ລະຄີ).

দৃষ্ট বিংদা পোষণ করিও না, দাস্তিক হইও না, কাহার প্রতি বিছেশ ব্যবহার করিও না, কাম রিপু পরিপোষণ করিও না, পরদার হইতে আপনাকে দূরে রাখ, দদুৎসাহে সংকার্য্য অমুষ্ঠান কর।

20. Be shining as the Sun. Be pure as the Moon.—KHORDAH. XLIX. 6.

স্বর্গ্যের ন্যায় চতজোময় হও চল্লের ন্যায় নির্মাণ হও।



Printed at the Indian Mirror Press.